आत्मा रौ हेलौ

सरदार अली पड़िहार

राजस्थानी भाषा, साहित्य एव सस्कृति अकादमी, बीकानेर रै आर्थिक सैयोग सू प्रकाशित

प्रकाशक
पडिहार प्रकाशन
बीदासर बारी रै बारै
बीकानेर (राज)

सरदार अली पडिहार

पैलडी छपाई मार्च, 2005

पोथी दीठ दो सौ रुपिया

पूठै री साज शोकत अली पडिहार

आखर सयोजन शकरसिह राजपुरोहित

मुद्रक साखला प्रिटर्स
सुगन निवास, चन्दन सागर
बीकानेर (राज) 334001

Atma ro Helo (Prose) by Sardar Ali Parihar Rs 200/-

आत्मा रौ हेलौ

(कहाणी-सग्रै)

सरदार अली पड़िहार

पडिहार प्रकाशन
बीदासर बारी रै बारै, बीकानेर (राज)

विगत

समर्पण

म्हारै मनडै री मीत
काळजियै री कोर
म्हारै जीव री जडी
आज
म्हारै मन में है
सुपना में है
रू-रू में है
पण
विन भवरी
जीणौ दोरौ
रैणौ दोरौ
सोणौ दोरौ।
अरपू—
आ पोथी
आ पाती
औ सिरजण
म्हारी मरहुम्मा सायधण भवरी नैं-

भवरी भवरौ उड गयौ, गयौ अकासा वीच ।
म्हारो भवरौ भटक रह्यौ, जीव-मरण रै बीच ।।

म्हारी बात

म्हारै अतस में घडी-घडी हूक उठण लागी कै जिण देस में थू रैवै है वो अेक दिन आखी दुनिया में सोनै री चिडिया रै नाव सू ओळखीज्यो हो। जे अठै इतरो सोनो है तो मिनख भूखा मरतो दूजा मुलका में भटकतो क्यू फिरै ? आ बात गतागूम में नीं आई कै लोग इण देस नै सोनै री चिडिया किण विध कैवता हा ? अठै सोनै री चिडकल्या म्हनै तो नैडी-अळघी ई नीं दीसै, अलबत्ता अठै सोन चिडी जिकै नै कैवा हा, वा तो काळीकुट है, सोनो तो उणरै नेडो-तेडो ई कोनीं। जणा हियै कागसी फेरी तो ठा लाग्यो जिकै देस में सावरियै री किरपा ई किरपा निगै आवै, वो देस सुरगा सीरखो। जठै मिनख-लुगाया नै सुरग घणो अर दु खडो थोडो हुवै, वो मुलक सोनै री चिडिया कैवीजै।

भगवान इण देस रै लोगा खातर सुख पूगावण ताई जिको अमोलक खजानो दोनूं हाथा लुटायो, वो दूजा देसा नै नीं दियो। भगवान री आ किरपा सापडतै दीखै है। ज्यूकै भगवान अैडी रितुवा बणायी है जिकै में मिनख उणरै मुजब ही जीव सकै है, दूसरी रुत में उणरो जीवणो अबखो हुय जावै। ज्यूकै जिण देसा में बारैमास सियाळो ई सियाळो रैवै तो बठै रा मिनख ऊनाळो हुवण आळै देस में रैवै तो वानैं अबखो लखावण लागै। इणीं भात जठै बारैमास ऊनाळो रैवै अर उण देस रो कोई मिनख सियाळै आळै देस में जाय'र रैवै तो उणनैं घणो अटपटो लागै। पण भारत देस में तो भगवान सगळी ई रितुवा देय दीनी। अैडी मेहर तो भगवान किणी मुलक माथै नीं करी।

कैवण रो अरथ ओ कै आखी दुनिया में भारत ई अेक अैडो देस, जिकै में अैडी ठौडा है जठै बारैमास सियाळै री रुत रैवे तो अैडी ठौडा भी है जठै बारैमास ऊनाळो रैवै। केई ठौडा अैडी भी है जठै चार महीना उन्हाळो चार महीना सियाळो अर चार महीना चौमासै रो मौसम रैवै। अैडी ठौडा री भी कमी कोनीं जठै बारैमास अेक जैडी रुत रैवै। कीं ठौड बारैमास बिरखा ई बिरखा री झड लाग्योडी रैवै।

इण देस में कठैई डीगा-डीगा अर सिखरा ऊचा डूगर अडिग ऊभा है तो कठैई लाबा-चौडा अर ऊडा-डूगा समदर लहरा लेवै। कठैई बगीड करती नदिया बैवै तो कठैई खळखळाट करता नाळा। कठैई झीणै-मधरै सगीत रो रणको छोडता झरणा बैवता निगै आवै। अैडी ठौडा भी है जठै हरी टास भोम ई भोम निजर आवै, कठैई उगाड-बार नीं दीसै तो केई ठौडा रूख-बाठकै रा दरसण तक दुरलभ हुय जावै। अैडी ठौडा भी है जठै लहरावता, वळ खावता मुखमल जैडी बाळू रेत रा सोनलिया धोरा ई धोरा निगै आवै। इण धोरा-धरती नैं देख्या यू लखावै जाणै बाळू रेत रो सोलनियो समदर चारूमेर आपरा पग पसारया सूत्यो है।

ससार में औ ईज अेक अैडो देस है जिणमें सगळै तरै रा फळ-फूल मिलै, सगळै तरै रा जीव-जिनावर मिलै। सगळै तरै रा रूप-रगा रा मिनख-लुगाई मिलै। इणी जोग इण देस में सगळै धरमा नैं मानण आळा लोग भी रैवै। लोगा में आपसी मेळ-मिलाप अर भाईचारौ सातरौ।

आत्मा अर मन नैं नेहचौ आवण जोग भगवान आध्यात्मिक वाद इतरौ सागोपाग दियौ कै दुनिया रा सगळा लोग भाजता-भाजता अठै आवै है। सुख पावण जोग मिनख लाख जतन करै है अर सुख जोग श्रीमद् भागवत में लिख्योडी है ज्ञान सूं कर्म सू अर भगती सू अर आगै लिख्यौ है अष्टाग योग सू। आज इणीं योग रै पुन-परताप सू दुनिया भर में योग ई योग हुवतौ दीस रैयौ है।

इण देस रा लोग कैडा'क है जिका नैं भगवान सो कीं देय राख्यौ है पण आख्या आळा भी आधा बण्योडा है। जिका जागता धोरावै वारौ भगवान भी काई करै ? अै मिनख अणजाणै में माया मछन्द्र रा चक्करा में अैडा अळूझ्या है कै खुदनै खुद ई मार रैया है। औ रासौ देख्या काळजै में तीर आरमपार होयग्यौ। हमै ठा लाग्यौ कै म्हैं रळगट आळी जिन्सा खाय-खाय'र आत्महत्या कर रैयौ हू। पण जावू तो जावू कठै ? जिकी भी जिन्स रै हाथ लगावू उणमें रळगट ई रळगट है। जिन्सा तो आपरी ठौड रैयी, इण देस में जिकौ भी काम हुवै वो बिना रळगट रै हुवै ई कोनीं ? हमै तो इण देस रौ राज भी रळगट आळै धडै सू चालण ढूकगौ है। हमै जीवडा ना मरया ई सरै अर ना जीया ई सरै, थू अधरबम्ब में लटक्यौ रह।

इतरै में माय सू हेलौ होयौ, तो हू चमक्यौ। औ माय सू कुण बोलै तो ठा लाग्यौ आत्मा हेला देवै है। किरकी राख किरकौ, मिनख किरकै ताण ई जीवै। इया डाळा नाख्या कीकर पार पडसी ? अजै तो इण देस रा मोकळा मिनख आपरी आत्मा री हेलौ सुणै है। नाथी रा लुचा-लफगा आ भला माणसा नैं अबखाई में घाल राख्या है। थू इण भल माणसा ताई आ थारी बात पूगती कर जिणसू कै आनैं चेतौ हुवै अर लुचा-लफगा नैं मार भगावै। अजै ताई तो पाणी माथै ऊपरिया कर बह्यौ कोनीं। डफा ! जद-कद औ देस नरग रै खाडै में पडण ढूकौ तो भगवान राम रै रूप में, श्रीकृष्ण रै रूप में, बुद्ध रै रूप में अर महावीर रै रूप में औतार लेय'र सगळा नैं तार दिया हा। अजै ताई धणकरौ मानखौ धरम-करम नैं अगेज्या बैठ्यौ है जणा आरी आत्मा जोर-जोर सू हेला देवण ढूकसी तो पछै अैंगा-वैंगा मिनख सटाक सीधा हुवता निगै आसी।

म्हारी पोथी पढण आळा सू अरदास है कै इण कहाणी-सग्रै में जिकी कमिया रैयगी है वांनै बता'र म्हनै मारग दिखावण री महर करज्या। इण पोथी री लिखाई सू छपाई ताई री जात्रा में जिकै जिकै सगी-साथिया री सैयोग मिल्यो वा रौ हियै-तणौ आभारी हू।

—सरदार अली पडिहार

बीदासर बारी रै बारै बीकानेर

कनाबाती 9414264729

आत्मा रौ हेलौ

फागजी अर उणरौ कुटम्ब कबीलौ दिल्ली कानी जावण आळी सडक रै पाखती आळी बस्ती में वस्योडौ है। फागजी अठैई जलम्यौ अर अठैई मोट्यार हुयौ। वो बालपणै सू ई कुचमादी हो पण भणण में दूजै छोरा सू आगूच चालतौ हो। ले-दे दसवीं ताई भणीज्या पछै मोदीलो मावै ई कोनीं। बस्ती में ओ पैलौ टाबर हो जकौ दसवीं ताई भणीज्योडौ हो। फागजी नैं राज-काज री चाकरी करण रौ मौकौ थोडाक दिना पछे ईज मिलग्यौ हो। अबै फागजी मावै ई कोनीं। दफ्तर सू जणा धरा आवै तो इयाकलौ चालै जाणे कोई टणकेल हाकम आवतौ हुवै।

फागजी बालपणै सू ई कुबधी हो। करेलौ अर नीम चढग्यौ। अेलकार बण्या पछै भी जुलमी राफड घालणी नीं छोडी। फागजी नैं रुपिया-टक्का सू अणूतौ मोह हो। इण मुजब अबै वो इण जुगाड में लागग्यौ कै इण ओहदै माथै रैयनै रुपिया किण भात कमाया जाय सकै है ? फागजी मन ई मन विचार्यौ कै दफ्तर रै हाकम सू जुगाड बैठ्या ई काम सरसी।

फागजी आपरै हाकम रै घर रा चक्कर काटण ढूकौ। नीं करण आळा काम भी फागजी सकौ कर्‍या बिना हाकम रा कर नाखतौ तो हाकम नैं फागजी रै बख में आया ई सर्‍यौ। फागजी अर हाकम री दाता रोटी टूटण लागी। दोनू ई लेण-देण में डूबग्या तो रुपिया री बिरखा हुवण ढूकी। फागजी रै पौ'बारा पचीस हा। डाकीडो रात-दिन घूस खावै अर पाती-परवाणै हाकम नैं भी खुवावै।

फागजी कनै अेक गरीब डोकरी आपरौ काम करावण जोग आवै है। डोकरी रौ काम साव साचो हो पण फागजी बिना लिया-दिया तो कोई काम करै ई कोनीं। डोकरी लीलड्या गावती बोली, 'बाबूजी ! म्हैं गरीब हू। म्हा कनै अै सौ रुपिया है सो घर में टाबरा जोग आटो लेय'र जासू जणै महीनौ पूरो होसी। जे अै ई थै ले लेस्यौ तो टाबरिया बिलख बिलख'र दाणै-दाणै सारू कालिया बिलालिया करता निजर आसी।' पण फागियै रौ मन नीं पसीजै अर डोकरी सू सौ रुपिया लेयलै। डोकरी फागियै नैं दुरासीसा देवती जावै है।

फागजी रै पाखती में बैठ्यौ दूजौ ओेलकार किसनो बोल्यौ, 'फागिया ! क्यू थू इतरा खोटा बाधे है रे ? अबार जिकी डोकरी आपरौ काम करावण जोग आई ही, उणरौ साचौ काम हो पछै उण कनै सू क्यू हकनाक सौ रुपिया लिया ? वा थनै दुरासीसा देंवती देंवती गई है। डोकरी रै आगै-लारै कोई नीं हो। उणरै टाबरिया नैं क्यू भूखा मारथा है ? थू क्यू गरीबा नैं रोस-रोस'र वारी हाय लेवे हे ? सगळा नैं ओेक दिन मरणौ है। आ माया अठैई रैय जासी।'

फागजी बोल्या, 'थू अजै ताई मायी री माया देखी ई कोनीं लाडी ! बादर काई जाणै अदरक रौ स्वाद। रुपिया बिना औ ससार सूनौ है। रूपली पल्लै तो रोही में ई चल्लै।'

फागजी, फागजी री लुगाई अर ओेक बेटो, तीनू जणा घर में है। फागजी री तणखा माय सू आधा रुपिया में ई घर चाल जावै है। पछै घूस खाय खाय'र फागजी पईसा आळा होयग्या। फागजी विचारै, आ रुपिया नैं चौगणा कीकर करू? फागजी रै हियै आई कै ब्याजुणा रुपिया दिया चौगणा हुय जासी। इण मुजब फागजी अैडा लोगा नैं जोवण ढूको जिका नैं ब्याजुणा चाइजै।

फागजी रै पडोस में रामलै रौ घर हो। रामलौ अर उणरौ बाप कमठाणै जावता अर हळी-मजूरी सू पेट पाळता हा। रामलै रै तीन बैना ही। बडी बैन रौ बयाव कर दियो हो अर अबै रामलै रौ अर उणरी दोनू बैना रौ ब्याव ओेक महीनै पछै होवणौ तय हुयौ हो। रामलै रौ बापू बोल्यौ, 'रामा, काल थू भीखजी कनै पूग'र ब्याजुणा रुपिया लेवण री बात कर आई। ब्याव माथै आयग्यौ है। ब्याव जोग तैयारी चिन्हिक भी नीं हुयी है।'

रामलौ घर सू निकळ्यो तो सामी फागजी मिलग्या। रामा-स्यामा होया। फागजी बोल्या, 'थारी ब्याव कद है रे ?'

रामलौ बोल्यौ, 'ओेक महीनै बाद। इण सारू ईज भीखजी कनै पूग'र ब्याजुणा रुपिया लेवण री बात करणी है।'

फागजी बोल्या, 'भीखजी रुपिया नीं देवै तो म्हासू ले लीजै।'

रामलौ, भीखजी कनै पूग'र बोल्यौ, 'बापू २० हजार रुपिया ब्याजुणा लेवण री बात कही है, ब्याव-अेढै मुजब चाइजै है। ओेक महीनै पछै ब्याव तय होयग्यौ है।'

भीखजी बोल्या, 'इतरी रकम ओेक महीनै में नीं हुवै, कम सू कम दो महीना लागसी।'

फागजी सिझ्या पड्या रामलै नैं उडीकण ढूकै है। रामलौ फागजी कनै

पूग्यो तो फागजी पूछ्यौ, 'भीखजी सू बात होयगी ?'

रामलौ भोळौ-ढाळौ मिनख हो। इण जोग भीखजी सू जिकी वाता-चीता हुई, सगळी परूस दी। सुण'र फागजी री बाछा खिलगी। फागजी बोल्या, 'थारै बापू सू पूछ लेइजे, रुपिया म्हैं देय देसू।'

रामलौ घरा जाय'र बापू नैं भीखजी केयो जिकौ अर फागजी कैयी जिकी बाता बतायदी। बापू बोल्यौ, 'भीखजी हुवौ चायै फागजी, आपा नैं तो ब्याज देवणौ है।'

अबै रामलौ अर उणरौ बाप, फागजी रै घरा पूग जावे है। फागजी बोल्या, 'रकम माथै भीखजी ब्याज कितरौ लेवता हा ?'

रामलौ बोल्यौ, 'चार रुपिया सैकडौ।'

फागजी बोल्या, 'थारै कनै रकम काई है ?'

'इतरी मोटी रकम री ठौड म्हा कनै म्हारौ मकान है।' रामलै री बापू बोल्यौ।

आधे नैं काई चाइजै, दो आख्या। फागजी आई चावतौ हो। वो बोल्यौ, 'मकान पेटै तो दस रुपिया सैकडै सू ब्याज लागसी।'

रामलै री बापू बोल्यौ, 'मालका, इया मत करौ। वाजब ब्याज लगावौ। म्हैं अबखाई में हा इण मुजब म्हानें मारौ ना, औ ब्याज तो अणूतौ है।'

फागजी बोल्या, 'जरूरत हुवै तो लेवौ, ब्याज तो औ ईज लागसी।'

रामलौ बापू कानी देख्यौ अर बोल्यौ, 'बोलौ काई करा ?'

'ब्याव माथै ऊपर है तो रुपिया तो लेवणा ई पडसी।' बापू बोल्यौ।

फागजी दूजै दिन कचेडी पूग'र मकान रा कागज पूरा करा'र रामलै नैं रुपिया देय देवै।

महीनौ पूरौ होया रामलौ ब्याज देवण नैं फागजी रै दफ्तर पूग जावै है। फागजी नैं दफ्तर में पूछ्यौ तो ठा लाग्यौ कै अजै ताई आयौ कोनीं। किसनौ बोल्यौ, 'फागलै नैं थू क्यू पूछै है ?'

रामलौ ब्याज देवण जोग सगळी बाता बता देवै। दस रुपिया सैकडौ ब्याज सुण'र किसनै री आख्या फाटगी। किसनौ फागजी रै पाखती में बाबू लाग्योडौ हो। फागजी आवता ई किसनौ बोल्यौ, 'फागिया, क्यू थू कीडचा छमकै है। इण गरीब सू अणूतौ ब्याज लेंवता थनै चिन्होक भी भगवान रौ डर नीं लागै ? थनैं तो रुपिया खावण रौ हायकौ उठग्यौ है। फागिया ! धरम पल्लै राख, नीं तो थू गोपिन्दा खावतौ ई जासी।'

फागियौ बोल्यौ, 'जासू जणै री बात, अबार म्हारौ माथौ क्यू खावै है ?'

रामलौ बोल्यौ, 'किसनाजी आ तो म्हारी अवखाई रै टेम काम काढ्यौ है।'

किसनौ कैयौ, 'फागियौ किणरा काम काढै ? औ मतलवियौ तो विना मतलब किणी सू वात ई नीं करै। जिकौ भी इणरै वख में आ जावै है तो ज्यू मकडी माखी नैं चूस'र मार न्हाखै विया ई औ मिनखा में करै है। थू देखतौ जा, थामै औ अैडी करैलौ कै कुत्ता ई खीर नीं खावैला। थू जिकौ टापरौ इणरै अडाणै राख्यौ है, वो था कनै रैय जावै तो म्हैं अठै ई बैठ्यौ हू।'

रामलौ अर उणरौ वाप आपरी कमाई माय फागजी नैं व्याज ई चूकतौ करै है, मूळ तो ज्यू री त्यू पड्यौ रैवै है। वरसा पछै रामलै रौ वाप सरगा सिधार जावै है। बीं रा किरिया-करम जोग रामलौ फागजी कनै सू पाच हजार रुपिया व्याजुणा घर माथै ओरू ले लिया। अेकलै रामलै सू व्याज चुकाणौ अवखौ होयग्यौ। फागजी डाकीडौ अवै व्याज पर पडव्याज लगावण लाग्यौ तो लगावतौ इ गयौ अर अेक दिन अैडो आयौ कै रामलै रौ घर आपरै नाव कराय लियौ। रामलै रा टावर सडक माथै आ जावै है। किसनौ वठीनै सू निकळ्यौ तो रामलै नैं सडक किनारै झूपडी में बैठ्यो देख्यौ। उण कनै पूग'र वो बोल्यौ, 'क्यू रामजी, सडक माथै आय विराज्या हो ? म्हैं कैयो हो नीं कै इण जुलमी रै चक्कर में ना आ। वता थू व्याज रा रुपिया कितरा दिया ?'

रामलौ बोल्यौ, 'भाईजी तीस हजार रुपिया देय चुक्यौ, फेरू ई वो कैवै कै पचीस हजार मूळ अर पचीस हजार व्याज पेटै, पचास हजार रुपिया अजै ई मागू हू। इण जोग घर री म्हासू बेचवाणी करायली। म्हनैं ठा नीं हो कै औ म्हनें फिडा फिडा'र मारसी।'

किसनौ दफ्तर पूग'र फागियै नैं कैयौ, 'सावरियौ ऊपर बैठ्यो सो कीं देखै है, धरम पल्ले राख। हया-दया बायरा ! थू रामलै री टापरी ई खोस लियौ ? वीं रै टावरा नैं सडक माथै ला बैठावता थारौ जीव नीं मसमसीज्यौ ? अरे, जिका रुपिया उणनैं दिया वै तो थू व्याज पडव्याज लेवतौ लेवतौ पूठा ले लिया हा। अलवत्ता थू थारे रुपिया सू पाच हजार वत्ता ई लिया है। गरीबा रा मिणिया मम्मोस'र थू क्यू थारो आगोतर विगाडै है ?'

फागियौ बोल्यो 'म्हैं उण कनै मागण नैं कोनीं गयौ, वो ईज म्हारै कनै आयौ हो।'

किसनौ बोल्यौ, 'रामलै नैं जिकी पटकी थू दी है नीं, वा भगवान सो कीं

देखै है, उणरै घर में देर हे पण अधेर कोनीं। थू अेक दिन रोवतौ नीं फिरे तो म्हैं अठे ईज बैठ्यौ हू।'

फागजी बस्ती रै लोगा नैं ब्याजुणा रुपिया देवै है अर वारा गैंणा-गाठा अर टापरा अडाणै नाख-नाख'र हडपता जावै है। बस्ती रा लोग अणपढ हुवण सू वै रुपिया दारू में, जुवा में, मरणै-परणै माथै अणूता लगावण सू फागजी रै बख में फटाक सू आय जावै है। जिको भी बख में आयौ वो पछे गोपिन्दा खावतौ ई गयौ। इण मुजब अबै फागजी कनै मोकळया रुपिया होयग्य हा। अबै फागजी फागण में मिनख फागीज्योडौ भूवाळ्या खावतौ फिरै ज्यू फिरै है। रुपिया रै नसै में फागजी आपरै बेटै कानी कीं ध्यान नीं देवै है।

फागजी रै अेक ई बेटौ हो। वो भी साव टोळ निकळ्यौ। रुळियारा रै साथै रैवतौ-रैवतौ सागोपाग रुळियार होयग्यौ। फागजी माया रै चक्करा में बेटै कानी देख्यौ ई कोनीं। जद बेटै रै ब्याव जोग छोरी देखी तो इण बात रो ध्यान राख्यौ कै दायजै में धन कितरौ मिलसी। इण जोग बेटै री बहू भी टोळ आयगी। फागजी नैं रिटायर होया दो बरस ई होया हा कै उणरी बहवड सरगा सिधार गई। फागजी रोज अलमारी खोलै अर रुपिया नैं देख-देख'र राजी हुवै। वारौ जीव सदा रुपिया में ई रम्योडौ रैवै है।

अेक दिन फागजी पगोथिया सू नीचै उतरता हा कै पग ताचक्यौ तो लटापट करता करता आगणै में आय धमाकौ कीनौ। अस्पताळ लेग्या ठा लाग्यौ कै फागजी री कड (रीढ री हाडी) टूटगी है। अबै फागजी रौ माचौ अर फागजी, दोनू अेक-दूजै रै खातिर बणग्या। फागजी आवण-जावण आळा नैं टुगर-टुगर देखै है। मन ई मन बडबडावै, 'देखो, रुघलौ म्हासू पाच साल मोटौ है अर घोडै ज्यू दौडतौ फिरै है। म्हैं माचै माय पड्यौ सडू हू। फागजी री आख्या सू चौसारा चालण लाग्या तो थमण रौ नाव ई नीं लेवै है। धार धार रोया फागजी रौ जीव कीं हळकौ होयौ।

थोडा दिन तो बेटा-पोता फागजी री चाकरी करी पछै उणा फागजी नैं अैडौ फैंक्यौ ज्यू दूध माय सू माखी नैं निकाळ फैंकै है। फागजी रौ पोतौ भी साव टोळ निकळ्यौ कैवत साच हुवती निजर आई- जाया पूत जणिता जिसा। अबै फागजी रै भेळै करयोडै धन नैं बेटा-पोता घूवौ लगावै है।

घरा माय हुवण आळी बाता नैं फागजी अेकोअेक जाणै है। बेटौ-पोतौ अर उणरी बीनणी अेक रुपियै री ठौड दो रुपिया खरचता चिन्होक ई सकै नीं

करै। बेटा पोतो फागजी रै भेळा करयोडा रुपिया रै माथै गुलछरिया उडावै है। रात पडता ई घर में फिटोळ भेळा होय जावै है। जूवा रमै है, दारू पीवै है, राडा नचावै है। खिल-खिलिया करता करता घर में सागोपाग धमचक घालै है तो घालता इ जावै है। फागजी इसडा फैल देख देख'र तळतळीजण लागै है। दाता री घट्टी पीसण लागै तो पीसता ई जावै है। फागजी छाती में धमीडा खावण ढूकै है पण उणरी सुणणै आळौ कोई कोनीं। भूख सू कडका काढता फागजी हेला देय दे धाप्या पण कोई नीं सुणै है। अठीनै फागजी भूखा मरै, बठीनै रुपिया पाणी ज्यू बहावै है। फागजी रै कीं बाकी नीं है।

आज फागजी रै पोतै रौ जलमदिन है। सिझया पडता ई लोगा रौ जमावडौ हुवण लाग्यौ तो रात पडता पडता भीड धाकड हायेगी। फागजी रै घर में फूठरी फरी लुगाया री रमझोळा रा धुघरिया जणा धमकण लागा तो फागजी रै हियै में हबीड ऊठण ढूका। पूनम री चानणी रात में छात माथै जणा झीणै झीणै सगीत री रणकौ चालै तो दुरतौ फिरतौ मिनख भी झूमण लागै पण फागजी रौ काळजी घणौ ई कळपीज्यौ। फागजी बळ-बळ'र भूगडी होयग्या। मिनख-लुगाई अर टाबर मोद में डूब्योडा हे अर फागजी किणनै कैवण जोग भी नीं रैयौ है। चोर री मा घडै में मूडौ घाल'र रोवै है।

फागजी नैं घरआळा धमाचौकडी में भूल ई जावै है। फागजी भूख सू कडका काढता पसवाडा भागण लागै पण वैरण नींद आवै ई कोनीं। जणा भूख सू आतरिया कुरळावण लागी तो फागजी छाती-माथौ कूटण लाग्या। पण फागजी कनै चिडी रौ जायौ ई कोनी फरूक्यौ। फागजी सै कळाप कर धाप्या अर आख्या रा आसूभी खूटग्या तो अबै फाटी-फाटी आख्या सू छात कानी जोवण ढूका। आख्या री टिकटिकी अैडी लागी कै पलका नीची-ऊची हुवणी ई भूलगी। फागजी विचारा में डूब जावै है। बीत्योडी बाता याद करण लागै तो उणरै सामी लोग भूत बण'र आय ऊभै है।

भिडतै ई फागजी सामी बा डोकरी आय ऊभी हुवै जिकी कनै सू फागजी सौ रुपिया लिया हा। बा खिलखिला'र हसी अर बोली, 'फागजी, भूखा मरौ हो ? जुलमी म्हासू अकेकारा सौ रुपिया लिया हा। उण दिन म्हारै घर रौ चूलौ नीं जग्यौ हो। म्हारा टाबरिया भूखा ई सूत्या हा। थू अेक दिन नीं केई दिन इया ई भूखा मरतौ मरतौ मरसी।'

डोकरी गई तो रामलौ आय ऊभौ अर कैवण लाग्यौ, 'क्यू फागजी !

म्हारे टाबरा नैं थू सडक माथै ला ऊभाया जणा म्हारै घरा चूली नीं जग्यौ, म्हा भूखा ई सूत्या हा, अबै थू दाणै-दाणै नैं तरससी अर तीसा मरतौ मरसी।' इयाकला फागजी सामी धणकरा आय आय'र मो'सा देय देय'र वुवा गया।

फागजी अबै बडबडावण ढूका—चोरा री धन मसकरा खावै, फागियौ बैठ्यौ घर में रोवै। अबै पछताया काई हुवै जद चिडिया चुगगी खेत। फागिया ! खोटा काम कर कर'र थू थारी जमारौ तो विगाड्यौ ई साथै पीढी-दर-पीढी भी विगाड नाखी।

फागजी रै माय सू हेलौ होयौ—फागिया ! थनै कितरौ समझायौ हो कै थू अै खोटा काम मत कर पण जणा तो घूस खावण रा हबीड उठता हा। उण बगत थू जुलमी झाल्या ई नीं झलतौ हो। थनैं म्हैं समझा समझा'र हारी पण थू म्हारी अेक नीं सुणी। थू थारै मन रै चक्करा में आय'र बुद्धि रौ साहरौ लेय'र म्हनैं चुप कर नाखतौ हो क्यूकै मन खोटा काम करण जोग थारै हाडो-हाड बैठाय देंवतो हो। म्हैं अेक खूणै में अबोली बैठी रोवती रैंवती ही। अबै थारौ मनडौ कठे गयौ ? जुलमी भाज छूट्यौ नीं ! म्हनैं ईज पटको पड्यौ है कै थारै साथै ई रैसू।

फागजी बोल्या, 'इतरा दिन थू कठै मरगी ही ? जणा म्हैं म्हारै वाप नैं रोवतौ फिरतौ हो। थू मढ में बैठी मटरका करती ही। अबै बोलण ढूकी है जणा म्हैं पागळौ बण बैठ्यौ हू।'

आत्मा बोली, 'अरै फागिया ! म्हारी बात थू अबै ईज सुणण लाग्यौ है क्यूकै थारा आमजी-फामजी सगळा बिसींजग्या है।'

फागजी विचारण लाग्यौ कै आ माय सू कुण हेलौ देवै है ? किणी दानै मिनख नैं पूछ्या ठा लागसी। इण पडपचा में उळझ्यौ फागजी दिन उगा नाखै है। दिनूगै दिनूगै ई किसनौ आवतौ निजर आयौ। फागजी री बाछा खिलगी। किसनो फागजी कनै पूग'र रामा-स्यामा करिया तो फागजी बोल्या, 'आवो किसनजी ! म्हारै नैडा बैठो। म्हैं थानैं आख्या फाड्या उडीक रैयौ हो। बा दिना में म्हैं थारी बाता मान लेवतौ तो आज अै दिन नीं देखणा पडता। जणा आपा दफ्तर में आखती-पाखती बैठता हा अर म्हैं कैवतौ के किसनो डफोळ है। म्हैं मजा करू हू अर किसनौ रोवतौ फिरै है। अबै ठा लाग्यौ हे म्हैं पेला भी हाकमा री हाजरी भरतो रोवतौ फिरतौ हो अर आज भी रोवतौ सोवू हू। थे पहला भी मजा करता हा अर आज भी मजा करौ हो। म्हनैं तो दो टेम री रोटी भी टेमोटेम नीं मिळै।'

फागजी भू-भू कूकण लाग्या तो किसनौ बोल्यौ, 'फागजी दाठीक रैवौ दाठीक। थे मोट्यार हो कै किरकौ राखो। किरकै तणा ही मिनख जीवै है। सुणौ थानैं अेक दूहौ सुणावू। ध्यान सू सुणौ-

किरकौ राखी कंतिया, हिरण किसा घी खाय।
आक भदुकै पून भखै, तुरिया आगै जाय ॥

फागिया डफा, डाळा नाख्या पार नीं पडै। फागजी अबै कीं ससवा होया। वै बोल्या, 'किसनजी, आ आत्मा काई हुवै है ?'

किसनौ बोल्यौ, 'फागजी, खरा काम करण जोग माय सू हेलौ हुवै, वा ईज आत्मा है।'

फागजी गळगळा होय'र बोल्या, 'भाईडा ! म्हैं तो खोटा ई खोटा काम कर्या है। म्हैं आत्मा रै बारै समझ्यौ नीं हू इण वास्तै थोडी ओरू बतावौ।'

किसनौ बोल्यौ, 'गीता में भगवान श्रीकृष्ण कैयौ है– "यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता है। इस आत्मा को शास्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु सुखा नहीं सकती।"

"एक बार राजा जनक ने अपनी सभा में विद्वानों से प्रश्न किया कि वह कौनसी ज्योति है जो मनुष्य को प्रेरणा देती है और भटकाव से बचाती है? याज्ञवल्क्य ने कहा सूर्य की ज्योति–सूर्य अस्त हो गया तो चन्द्रमा की ज्योति, यह दोनों ही न हो तो–अग्नि की ज्योति–अग्नि जलकर शान्त हो जाय तो वाक द्वारा–किसी कारणवश वह भी बन्द हो जाय तो–तब मनुष्य अपने अंतःकरण की ज्योति द्वारा ही मार्ग प्राप्त कर सकता है। आत्म ज्योति का आश्रय किसी भी व्यक्ति के जीवन में नया आयाम जोड देता है।"

फागजी बोल्या, 'भाईडा ! थारी बाता तो घणी सातरी है पण साची कैवू कै म्हारै तो कीं पल्लै नीं पडी।'

किसनौ बोल्यौ, 'था तो वा बात कैय दी जिकी उमर खयाम कैयी ही– "जब मैं जवान था तो बहुत पंडितों के द्वार पर गया। वे बडे ज्ञानी थे। मैंने उनकी चर्चा सुनी, पक्ष-विपक्ष में विवाद सुने। जिस दरवाजे से गया था उसी दरवाजे से वापस लौट आया।"

किसनौ बोल्यौ, 'सुणौ फागजी, अबै हू थानैं पूछू जिके री उत्तर साचो-साचो दिया। जे झूठ बोल्या तो आत्मा रै बारै में नीं जाण सकोला।'

फागजी बोल्या, 'अबै म्हैं काई झूठ बोलसू, म्हारा पग तो मुसाणा पूग्या है। थे तो निसक पूछौ।'

'जद थै पैलडी वार घूस खाई तो थारै माय सू हेलौ होयौ हो कै औ खोटौ काम है ?' किसनौ पूछ्यौ।

फागजी बोल्यौ, 'होयौ तो हो भाई।'

'जद थै पैली बार दारू पीयौ हो तो माय सू हेलौ होयौ कै औ खोटौ काम है ?'

फागजी बोल्यौ, 'होयौ भाई।'

किसनौ बोल्यौ, 'आ भिडतै ई माय सू हेलौ देवण आळी ही आत्मा है। इण आत्मा रै कैयै मुजब काम करणिया ससार में सुखी रैवै अर आगोतर भी सुधरै। जे इणसू किन्नौ काट'र मिनख मन कानी गुडक जावै तो वो पछै गोपिन्दा वापरसी।'

रूपजी री परची

अमरजी रै झूंपै आगै दिनूंगै दिनूंगै मूळजी, धूडजी अर अगरजी आय धमक्या। फळसै माय वडता वोल्या, 'अमरजी ! सूरज मथारै आयौ है, थै हाल ताई नींदा खूखावौ हो ?'

अमरौ चिलम लिया वारै आयौ। चारू भाईडा वायडा मरता चिलम चूचावण ढूक्या। धूंवै रा गोट रा गोट पून में तिरता यू लखावता जाणै सावण रा लोर गुळाचिया खावता आवै है। मूळौ अमरै नैं चिलम झिलावतौ गुणकौ नाख्यौ–गाव में हाकम आया है ?'

अमरौ पूछ्यौ, 'क्यू आया है ?'

मूळौ वोल्यौ, 'लोन बीजा रा पाना देवै है। थानैं भी लेवणी है तो लेयलौ।'

अमरो विचारण ढूकौ—राज कनै सू रुपिया मिल जावै तो ऊंठियौ लेय'र खेता में हळियौ बाह काढू। रामूडौ मोट्यार होयग्यौ है। गवरू जद मूछा रै वट देवै तो धुथकारौ नाख्या ही सरै है। रामूडे रा हाथ पीळा कर्‌या ही सरसी।

अमरौ हेलौ कर्‌यौ, 'रामूडा, सुणै है रे ! गाव में हाकम आया है। लोन रा पाना देवै है। डफा थू अजे ताई माचौ ई नीं छोड्यौ। पगा भाळ होयजा। लोन रौ पानौ लावणौ है।'

रामूडौ घर माय सू बोल्यौ, 'अबार जावू।'

हाकम गाव विचाळै बैठ्या लोन री परची देवता कैवै, 'काल दिनूंगै सहर पूग'र दफ्तर सू लोन री परची लेय'र वैंक सू रुपिया लेय लिया।' रामूडौ हाकमा कनै पूग'र खेत रा कागज सूंपै तो हाकम उणनैं ई परची थमायदै।

रामूडौ परची लेय'र अमरजी नैं ला सूपी। अमरौ वोल्यौ, 'धनभाग ! सुणौ म्हारै सावरियै। ऊठ लेय'र दोनू खेता में हळिया बाह नाखसा। अबै थारौ भी व्याव कर्‌या सरसी। अबै थू चूक मत करी। काल सहर जाय'र रुपिया कढायलै। घर में चूल्है जगावण जोग चोटै सू चीज-वस्त लेवतौ आइजै। थारी मा कनै सू सौ रुपिया लेवतौ जा। रुपिया नैं सावळ राखी। वो धण्या री सहर है, कोई उचका नीं लेवै, ध्यान राखी। आ रुपिया सू ही महीनौ पूरौ करणौ है। थारे हियै वात उतरी कै नीं ?'

रामूडौ नस रौ रळकौ देवतौ बोल्यौ, 'उतरगी।'

भाख फाटता ही मोदीलौ न्हाय-धोय, पटा में तेल घाल'र फूल फगरियौ बण'र आगणै में आय बिराज्यौ। जामण रोटी पुरसी तो डाकीडौ डाचळ्या मारण ढूकौ। जामण बोली, 'रामला ! इतरी खतावळ क्यू करै है ? निरायत सू टुकडौ जीम। थनैं काई लका लूटणी है ?'

रामूडौ लोन रै पानै में मगन हुयोडौ सुणी-अणसुणी करतौ फटाफट दो-चार नवला गटक'र पाणी पीय'र सहर कानी दुर जावै। मारग बिचाळै वैवतौ मोदीलो कणै मन ही मन में मुळकै तो कणै तेजे री तान री रागळ्या करै तो कणै लूवा झूबा गोरबद लुमावे तो कणे मूमल री रूप बखाणै तो कणै रामसा पीर नैं लडावै। आ बाता सू धाप मिली तो ऊठ लेसा, दोनू खेता में हळिया बाहसा, ब्याव होसी, फूटरी-फर्री लुगाई आसी रा अगडम-बगडम विचार मनडै में पलटा लेवण ढूका अर इणी बिचाळै दफ्तर आगै आय ऊभौ।

दफ्तर में बडता ही भिडतै ही चपडासी सू भेंटा हुया। रामूडै चपरासी नैं ठरकै सू पूछ्यौ, 'मालका, लोन रौ पानौ किण ठौड मिलै है ?'

चपडासी बीडी रौ कस खींचतौ गिनारै ही कोनीं। रामूडौ विचारण ढूकौ कै औ कैडौ मिनख है ? म्हें हाकम सू परची लायौ हू अर औ कान ही नीं ढेरै। मोदीलै नैं रीस आयगी अर जोर सू सख बजा न्हाख्यौ, 'थनैं ओकर कैया सुणीजे कोनी काई ? लोन रौ पानौ किण ठौड मिलै है ?'

अबै चपडासी नैं भणक पडी। बोल्यौ, 'होळै बोल होळै। अठै मिनख बसै है, मिनख। गाव रौ लागै है। जा, वै सामी आसजी बेठ्या है बा सू बात कर।'

चपडासी रै मूडै सू 'गाव रौ लागे है' री बात सुणता ही रामूडै रै माथै जाणै सौ घडा ढुळग्या। अठै सू रामूडै रा मरमट गळण ढूका तो गळता ई गिया। जिकौ मोद भाईडौ गाव सू लेय'र टुरयौ हो वो सहर री नाळ्या में वैवतौ निगे आयौ। रामूडै रै पगा री सत निकळग्यौ अर हळवा-हळवा पगल्या धरतौ आसजी कानी टुरग्यौ।

सामी कुरसी माथै चार फटा मिनख, हाडक्या रे चामड चिप्योडा, धोळाफट केस हुयोडा, नाक री इणी माथै गोळ चक्करिया रौ चसमौ टिकायोडा पाना माथै कीं माडता, बैठ्या हा। रामूडौ बा कनै पूग'र बोल्यौ, 'हाकमा म्हारै लोन रौ पानौ दिरावौ सा।'

आसजी चसमा रै ऊपरिया कर देख'र रामूडै माथै मींट गाडी। मन ही

मन बोल्या, 'इण तिला में तेल नीं है।' पूठा कलम सू पाना माथे माडण ढूका। रामूडौ कीं ताळ खटाव राख'र भळै पूछ्यौ, 'हाकमा, म्हारै लोन रौ पानौ !'

आसजी सुणी-अणसुणी कर'र आपरै काम में लाग्या रैया। थोडी ताळ पछै अेक जणौ आयौ अर बोल्यौ, 'लो आसजी ! रूपजी री परची, म्हारौ लोन रौ पानौ दिरावौ सा।'

आसजी परची लेय'र खुजे में घाली अर लोन रौ पानौ उणनैं पकडाय दियौ। इण ढाळै पाच-सात मिनख रूपजी री परची देय'र आपरौ लोन रौ पानौ लेयग्या। रामूडो इण भात लोगा नैं लोन रौ पानौ ले जावता देख्यौ तो अबै उणनैं चेतौ होयौ कै जीवडा रूपजी री परची बिना लोन रौ पानौ नीं मिलै।

वो बींद पगल्या भरतौ रामसा पीर नैं धावतौ दफ्तर रै बारै आय'र रूपजी रौ ठोड-ठिकाणौ सोधण ढूकौ। सामी सू अेक डोकरौ आवतौ दीख्यौ। उणनैं पूछ्यो, 'बा'सा ! अै रूपजी कठै रैवै है ?'

डोकरौ हाथ सू सैनी करतौ बोल्यौ, 'सामनै आळै बाडै में गाया री खेखाळी करतौ मिलसी।'

रामूडौ बोल्यो, 'थारौ रामजी भलौ करै।'

रामूडै रै पगा में घूघरिया बधग्या। लाबा लाबा डग भरतौ बाडै में जा धमक्यौ। रामूडौ बोल्यौ, 'रूपजी थै ईज हो काई ?'

रूपलौ गाया नीरतौ रामूडै कानी देख'र बोल्यौ, 'हा म्हैं ईज हू। बोलौ काई काम है ?'

रामूडौ मन ही मन विचारयौ—गवरू थुथकारौ नाखण जोग है। पछै बोल्यौ, 'भाईडा, थारी परची मिल्या बिना म्हारै लोन रौ पानौ नीं मिलै। अबै बेगी-सी परची देवण री किरपा करौ।'

रूपलौ बोल्यौ, 'आ काई अळबाध लाया हो ? म्हैं तो भण्योडौ ही कोनीं। थै कठै सू पधारया हो ?'

रामूडौ बोल्यौ, 'अधारया नीं पधारया, दिनूगै सू लोन रै पानै खातर भटका खावू हू। थारी परची बिना म्हारौ काम पार नीं पडै। लाखै गाव सू आयौ हू।'

रूपजी बोल्या, 'लाखौ गाव तो म्हारौ सासरौ है। लाखीणा बैठौ, पाणी-लूणी पीवौ।'

रामूडौ हाथ जोड'र बोल्यौ, 'पावणा बावडी रौ किनारौ है। थै म्हारै साथै

टुरलौ, आसजी आख्या फाड्या उडीकै है, कणै रूपजी री परची आवै अर कणै लोन रौ पानौ देवू।'

रूपलौ मन ही मन विचार्यौ—रूपला डफोळ ! थारौ इतरौ मान अर थनै ठा ही कोनीं ? मोदीलौ खखारौ कीनौ अर मूछा पर ताव देवतौ बोल्यौ, 'अैडी बात है तो टुरलौ, अबार पूग'र थारौ काम करावा।' माथै ऊपर धरी पाग, हाथा लीनी डाग, पगा पहरी मोजडी, काधै गमछी नाख मोदीलौ अैडौ टुरियौ ज्यू कोई झुझार किलौ जीतवा जावै है।

रामूडै री बाछा खिलगी। खतावळौ हुयोडौ, खाता खाता पग उठावतौ रूपजी नैं साथै लेय'र दफ्तर पूगग्यौ। दोनू गबरू आसजी री मेज सामी इण ढाळे जाय ढूक्या जाणै बींद राजा परणीजण जोग तोरण आगै जाय ढूकै। रूपजी मेज नेडौ भिड'र जमी माथै डाग रौ ठरकौ दीनौ। दोनू गबरू मूछा रै बट देवण ढूका। आसजी लिलाडी माथै तीन सळ घाल'र दोना कानी देखण लाग्या तो रूपजी खखारौ कर्यौ अर रामूडौ बोल्यौ, 'आसजी ! म्हैं रूपजी री परची री ठौड साख्यात रूपजी नैं ही ले आयौ हू। बावलिया, अबै तो वेगौ सो लोन रौ पानौ देयदे। म्हनैं घरै चूल्हौ जगावण जोग चीज-वस्त ले जावणी है।'

इतरौ सुणता ही आसजी तो गाभा बारै आयग्या। आफरौ झाडता बोल्या, 'धू कुण है रे ? दिनूगै सू करम खावण लाग्यौ। थारौ कोई लोन-वोन नीं है। थृ थारौ काळौ मूडौ करै है कै चपडासी नैं बुलावू ? जिकौ धक्का ठोक'र थनै बारै काढै।'

रूपजी रौ मूडौ मगसौ पडग्यौ। मन में विचारण ढूकौ कै आ काई बात हुई ? रामूडै रे इतरौ सुणणौ हो के काळी कळाई जोद्धावर री फुफकार उठण लागी। आख्या रातीचुट होय'र खीरा बरसावण ढूकी। अेक तेज चढै तो दूजौ उतरै। आव देख्यौ नीं ताव, आसजी रै गळै पाखती सू कुडतियौ झाल'र ऊचौ उठा लियौ। आसजी री टाग्या पून में कीरतन करण ढूकी। आख्या बारै आयगी। मूडै माय सू झाग आवण लाग्या। आसजी खेत में अडवौ हुवै ज्यू लागण लाग्यौ। आसजी री अैडी दसा देख'र पाखती में बैठौ अेलकार बाकौ फाड्यौ, 'मारै रे ! मारै रे !!'

दफ्तर में हाकौ फूट्यौ तो हाकम आपरै कमरै सू बारै आया। आसजी रौ इसडौ रूप देख'र माथौ भुवाळी खावण ढूकौ। अेक गबरू रै हाथा आसजी री घाटी अर दूजै रै हाथा डाग। मन ही मन में बोल्यौ, इण झुझारा सू लड्या तो

पोसावा कोनीं। दफ्तर रै कनलै थाणे में भागतौ भागतौ पुग्यौ। थाणैदार नै सौ रुपिया री नोट हाथ में झिलावतौ बोल्यौ, 'दफ्तर में दो धाडवी आय धमक्या है। सगळे अेलकारा नैं मार-मार'र मूज बणाय दिया है। दफ्तर री रोकड लूटै है। जे थै देर करदी तो म्हारा अेलकार सरगा पूग्योडा लाधसी।'

थाणैदार हुकम दियौ, 'हवलदार ! चार सिपाया नैं सागै लेय'र बेगौ दफ्तर पूग।' हवलदार सिपाया नैं लेय'र दफ्तर में जाय बड्यौ। भिडतै ही रूपजी बीं रै सामी आया। अबै कामड्या रा सटीड पडण ढूका तो रूपजी कूक्या, 'अरे म्हनैं क्यू कूटौ हो रे, म्हनैं क्यू कूटौ ?'

सिपाया रूपजी री अेक नीं सुणी। कूटता-कूटता हवलदार रै सामी लाय हाजर कर्‌यौ। रूपजी हाथ जोड'र बोल्या, 'हवलदारजी ! अै म्हनैं क्यू कूटै है ?'

हवलदार बोल्यौ, 'लागै, झगडै री जड थू ईज है।' अर दो-चार फटीड रूपजी रै और पाती आवै। रूपलौ जोर सू कूक्यौ, 'ओय म्हारी मा अे, म्हैं कठै आय फस्यौ ?'

हवलदार बोल्यौ, 'सा'ळा नैं लेय चालौ थाणै।' थाणै पूग्या तो थाणैदार बोल्यौ, 'लेय आया पावणा नैं !'

रूपलौ मन ही मन हरख्यौ अर विचार्‌यौ—थाणैदारजी म्हारै सासरियै रै गाव रा दीसै, जणै ईज म्हनैं 'पावणा' कैवै है। रूपला इया सू बात कर जिको आ जम री फासी टळै। खखारौ कर'र बोल्यौ, 'थाणैदारजी, अै म्हनैं हकनाक क्यू कूटै है ?'

थाणैदार आख्या काढी अर बोल्यौ, 'ओ बम्बाळ थू ईज खडौ कीनी लागै है ? अबार बताऊ।' कैय'र रूपलै नैं नीरण लाग्यौ तो नीरतौ ही गयौ। रूपलौ कूकतौ गयौ पण जुलमी नैं हया-दया नीं आई। थाणैदार रूपलै अर रामूडै रा मक्कड भाग'र हवालात में बद कर दिया।

रूपलौ मार खाय खाय'र अधमर्‌यौ होयग्यौ। जिकौ आयौ वो ही रूपलै रै काना में दी। हवालात में बिना रोटी-पाणी रै भूखा मरतौ रात नैं हाडका कुळण लाग्या तो रूपलौ दुखती ठौडा नैं पपोळ पपोळ'र डुसका भर भर'र रोयौ। रोया सू जी कीं हळकौ हुयौ तो बोल्यौ, 'रामूडा, थारौ सत्यानाम जावै रे। म्हासू थू किण जलम री वै'र काढ्यौ है रे ? म्हारा हाडका भगा'र थनैं काई मिल्यौ ?'

रामूडौ बोल्यौ, 'भाईडा ! म्हारै कीं गतागुम में नीं आवै है कै अै आपा नैं क्यू कूटै है ? म्हैं म्हारै लोन री पानौ मागू हू। औ मागणौ ई जुल्म है तो गाव

आय'र हाकम परची क्यू दीवी ? वा ओ हाकमा, जबरी करी म्हारे में ।'

रूपजी बोल्या, 'कूवै में पडै थारी परची अर ऊपर पडै थारौ हाकम। थारी परची अर हाकम विचाळै म्हैं कठीनै सू आयग्यो ?'

रामूडौ बोल्यौ, 'साची केवौ हो पावणा, इण बाबू आसियै नैं पटकौ पड्यौ जिकौ थानैं बिचाळै लेय आयो।'

आगलै दिन थाणेदारजी दोना नैं कचेडी में जज रै सामी लाय हाजर कर्‌या। जज बोल्यौ, 'बोलो रूपजी ! काई बात हुई ?'

रूपजी मन ही मन मुळक्यौ अर विचारण ढूको। जज म्हारै सासरियै रै गाव रा लागै हे जणा ही 'रूपजी' केय'र बतळायौ है। पण माय सू होलो होयौ कै रूपला डोफा ! जठै-जठै थू बोल्यौ है बठै-बठै थारै फटीड पड्या है। बै तो ठौडा छोटी ही इण जोग छोटा जूत पड्या हा। आ ठौड मोटी है, इण मुजब मोटा फटीड पडसी। इण वास्तै मून धारलै, इणमें ईज भलाई है।

जज फेरू बोल्यौ, 'बोलो रूपजी !'

रूपलौ बोल्यौ, 'कोनीं बोलू।'

जज बोल्यौ, 'नीं बोलोला तो रात सू कूटीज रैया हो अर अबै थानैं सजा हुवैली।'

रूपलौ बोल्यौ, 'हणै ताई सजा नीं ही तो पछै काई ही ?'

जज बोल्यौ, 'पूरी बात नीं बताई तो जेळ होय जासी।'

अबै रूपलौ हगण-मूतण लाग्यौ। जेळ होया म्हासू घटी पीसासी। रूपलौ बोल्यौ, 'हे मावडी अे, हू किण आळ-जजाळ में आय फस्यौ हू। अबै तो बोल्या ही सरसी। अबै भाईडी जीव नैं काठौ कर'र जज नैं बाडै सू लेय'र कचेडी ताई री सगळी कहाणी कह सुणाई। आखर में बोल्यौ, 'जज सा'ब सासरै रौ मान राख्या ई सरै है। इणी जोग कूट खाई है।'

जज बोल्यौ, 'बुलावौ रामूडे नैं। औ परची री काई रोळो है ?'

रामूडौ गाव सू लेय'र कचेडी ताई री कहाणी सुणाया पछै बोल्यौ, 'म्हनैं आ ठा नीं ही कै रूपजी सू रूपजी री परची ऊची है। म्हैं अठै ईज चूक करग्यौ कै रूपजी री परची री ठौड रूपजी नैं ईज लेयग्यौ। जज सा'ब ! म्हा दोना रै जका फटीड पड्या है, वै म्हा जाणा, या म्हारौ राम जाणै है। म्हैं इण कूट नैं आगोतर ताई नीं भूला।'

सुण[illegible] जज र[illegible]या। [illegible] री काई [illegible]

आज री टेम पूरी होयी। काल तारीख परची आळे बाबू नैं देयदी।'

आसजी अर आसजी री हाकम कचेडी में आयोडा हा। इण जोग आसजी नैं काल री पेशी री कागज जज री चपडासी पकडाय दियौ।

आसजी री पेशी री बात आई तो उणरै पेट में खळबळी चालण ढूकी। कणेई पेशगारजी कनै जावै तो कणेई जज रै निजू चपडासी कनै जावै। इणी भाजा-नासी रै बिचाळै आसजी री हाकम आय मिल्यौ अर बोल्यौ, 'आसू, मोड्या अबै काई होसी ?'

'होवणी काई है ? होसी वो ईज जिकी राम रची राखा। आपा चावाला ज्यू ईज होसी। जीव में ठावस राखौ, ज्यू आपा लेण-देण में डूब्योडा हा, त्यू ही दूजा डूब्योडा है। इण हाथ लेवा हा तो उण हाथ देवाला। जणा आपा साथै रूपजी दुरसी तो काम होयोडो ही पड्यौ है।'

हाकम बोल्यौ, 'भाईडा ! ज्यू होवै त्यू ई इण रासै नैं सलटा।'

हाकम रो काकौ भी हाकम साथै आयोडौ हो। वो बोल्यौ, 'आसजी जणा रूपजी तो हवालात में बद पड्या है, थारै साथै किया दुरसी ?'

आसजी बोल्या, 'थै गाव रा हो नीं, इण वास्तै थारै कीं समझ में नीं आवै, थ तो देखता जावौ।'

आसजी रौ काम छेकड जज रै निजू चपडासी सू बैठ्यौ। लेवण-देवण री बात तय होवता ई आसजी झट-पट अटी ढीली कर नाखी। चपडासी बोल्यौ, 'सिझ्या सा'ब रै बगलै आय जाया।'

सिझ्या आसजी सा'ब री कोठी गया तो चपडासी जज सा'ब कनै पूग'र बोल्यौ, 'परची आळे मामलै री अेलकार आयौ है। आपा रौ काम कर दियौ है। रकम जनानी ड्योढी पूगती करदू ?' जज बोल्यौ, 'उणनैं अठै ईज बुलायला।'

आसजी लीलड्या गावता बोल्या, 'म्हारा टाबर रुळ जासी, म्हारै पर किरपा करौ सा।'

जज बोल्यौ, 'जिण ठौड माथै रूपजी बिराजै है, किरपा ही किरपा है। काल जणा हू थानैं परची बाबत पूछू तो थै किणी कविता री ओळ्या सुणाय दिया। काम होयोडौ ही समझ्या।'

अगलै दिन फैसलै सारू भीड भेळी हुयी। उणमें रूपजी रा मा-बाप भी आया हा। दोनू उदास हुयोडा अेक दूजै नैं टुगर-टुगर देखै। थोडी देर पछै डोकरी बोल्यौ, 'हे रुणीचै रा धणी ! धोळा री लाज राखजे म्हारा पीर।' डोकरी बोली,

'नसडी टूट्या आसिया, थारी सत्यानास जाय रे ! थारै कीडा पडै रे ! थनैं आगोतर में ही ढोई नीं हुवै रे ! ठाला-भूला आसिया, थारी सीढी निकळै रे ! म्हारै फूल जैडै बेटै नैं क्यू दुखडौ दीनौ रे! थू रामूडा उडतौ भींट कठै सू आ मरयौ रे !'

हलकारौ हेलौ दियौ, 'आसजी हाजर हो !' आसजी बोल्या–

गोळ चक्करिया लै परख, नाम रूपजी देख ।

रूपौ म्हारै जीव जडी, बदळै करमा रेख ।।

जज बोल्यौ, 'आसजी ! परची रौ रोळौ काई है ?'

आसजी भळै दूहौ बोल्या–

बिन रूपै बिन भूख मरै है, राजा रक फकीर ।

जणा रूपजी आय बिराजै, सगळा जीमै खीर ।।

जज बोल्यौ, 'अेलकार अैंगी-बैंगी बाता करै है। इणरौ चित्त ठिकाणै नीं है। इण मुजब मुकदमौ खारिज– रामजी, रूपजी वरी।'

रामूडौ मन ई मन विचारयौ, औ जज इल्लम-टिल्लम करतौ करतौ कैडौ'क फैसलौ दियौ है। वो जज सामी देखतौ ई रैयग्यौ। आवता ई चपडासी बोल्यौ हो कै अठै मिनख वसै है, अैडा ईज मिनख वसै है ? दीखण में साहुकार अर काम सब चोर रा। रामूडौ रूपजी नैं देख्या तो हेलौ पाडयौ। रूपजी हाथ सू झालौ देवतौ बोल्यौ, 'धूडिया थारै लारै, भोळै आदमी भेड खाई, अबै खावै तो राम दुहाई। अबै म्हैं थारै कुडकै में कोनीं पजू।' कैय'र रूपजी भाज छूट्या।

रामूडौ कचेडी रा पगोथिया ऊपर माथौ झाल'र बैठग्यौ अर विचारण लाग्यौ के औ सहर रा लोग कैडा'क है। कणै म्हनैं दफ्तरा में बाडै है, कणै म्हनैं थाणै में घालै है, कणै कचेड्या चाढै है। ठौड-ठौड माथै कूटै अर बरी करै है पण म्हारै लोन रै पानै री कोई बात ई नीं करै ? सामी जोयौ तो आसजी आपरै भायला साथै आवता दीस्या तो पगरख्या हाथ में लेय'र भाज्यौ अर आसजी कनै जाय पूग्यौ।

रामूडौ पग पकडतो बोल्यौ, 'आसजी, म्हैं थारी गाय हू। थारै पगा पागडी नाखू। बापजी म्हारै लोन रौ पानौ दिरायदौ।'

आसजी बोल्या, 'हीरजी, इणनैं मूरख-समझावणी दौ।'

हीरजी बोल्या, 'रामजी, अेक कागज रै पानै में सौ रुपिया पळेट'र आसजी नैं देवता दफ्तर में कैवणी पडै है, ''लो आसजी रूपजी री परची, म्हारै

लोन री पानी देवौ सा", सटाक लोन री पानी मिल जासी।'

रामूडी बोल्यी, 'हीरजी ! जद औ ई रूपजी हा तो पछै आसजी पैला ई मोगम खोल देवता। इतरा पडपच क्यू रचाया, म्हनै क्यू कुटवायौ ? बता देवता कै विना लिया-दिया लोन नीं मिलै।'

हीरजी बोल्या, 'थू गाव री है नीं ? सहर री रीता-पाता कोनीं जाणै। थू ईज बता, गाव में ब्याव विना रीता-पाता होय जावै है काई ?'

रामूडी बोल्यी, 'नीं हुवै सा।'

हीरजी बोल्या, 'इणी जोग सहर री रीता-पाता है। आनै पूरी करया विना लोन नीं मिलै।

रामूडी टागा नै घसीटती घसीटती दुरती विचारै है कै जीवडा इण आसीयै री छाती में सौ रुपिया मारया ई मरसी। दूजै दिन आसजी कनै पूग'र बोल्यी, 'लो आसजी ! रूपजी री परची, म्हारै लोन री पानौ देवौ सा।"

आसजी बोल्या, 'आवौ रामजी बैठौ।' अर लोन री पानौ पकडायदै।

आत्महत्या

नारद मुनि अेक दिन भगवान सू अरदास करी— हे भगवान ! म्हें थारी बणायोडी भोम माथै घूमणो चावू हू। म्हनैं अेडी ठौड भेजौ जठे डूगर भी हुवे, समदर भी हुवे, नदिया भी हुवे, झरणा भी हुवे अर बाळू रेत रा धोरा भी हुवै। उण देस में बारू महीना ऊनाळे री रुत रेवै, उण देस में बारू महीना सियाळै री रुत रैवै। उण देस में बारू महीना ना ठारी रेवै अर ना ऊनाळौ। उण देस में छह महीना ऊनाळौ अर छह महीना सियाळौ रैवै। उण देस में बारू महीना चौमासौ हुवै। उण देस में सगळै धरमा रा लोग हुवे, सगळै तरै रा फळ-फूल हुवै, सगळे तरै रा जीव-जिनावर हुवै।'

भगवान बोल्या, 'अैडो देस साव अेकलौ भारत देस है।'

नारदजी भारत देस में आय बिराज्या। नारदजी भिडतै ई कसमीर जा पूग्या। चारू खूटा डीगा-डीगा डूगरा सू घिर्योडौ कसमीर अैडौ लाग रैयौ हो के जाणे तळाब में कमल खिल्योडौ। चारूमेरा सू कळ-कळ बैंवता झरणा सगीत रौ रणकौ छोड रैया हा। डल झील माथै तिरता सिकोरा जणा रात में टिम-टिमता तो जाणै कसमीर में दीवाळी आयगी है। नारदजी री जठीनै भी निजर जावती हरी टास भोम रग बिरगे फूला सू रगीज्योडी भोम दीसती। नारदजी रौ मन मोवीजण ढूकौ। नारदजी जद गुलमर्ग अर पहलगाव गया तो वठै झींखा ज्यू बरफ पडता थका रूखा री डाळ्या अर पता धोळा-धख देख देख'र नारदजी रौ मन नाचण ढूकौ। कसमीर सू दुर'र धोरा धरती माथै आय विराजै।

नारदजी पूनम री चानणी रात में बाळू रा धोरा माथै बैठ'र ऊची कानी जोयौ तो साफ सुथरौ आभौ, टम-टमावता तारा, इमरत बरसावती चाद, नीचै मखमल जैडी बाळू रै धोरै माथै बैठ'र सोनल, रूपल बेकळू नैं देखण लाग्या तो देखता ई गया। बाजरै रा सोगरा अर खेता री फळ्या रौ साग चूटियै रै साथै चूर चूर'र जीमण ढूका तो पछै केई दिना ताई जीमता ई गया। रात नैं जणा सोवण ढूक्या तो लाखाणी अैडी नींद आई कै सूरज निकळ्या ई आख उघडी। बाळू

धोरा रा लोगा री जिकी हेत नारदजी देख्यौ वो भुलावण जोग नीं रैयौ।

नारदजी अबै कन्या कुमारी में बिराजै है। अठै तीन समदर आपस में आ रळै है। अरब सागर, हिन्द महासागर अर बंगाल री खाडी। चारूमेर पाणी ई पाणी दीसै है। नारदजी जद समदरा रै पाणी रौ रग न्यारौ न्यारौ देख्यौ तो देखता ई रेयग्या। पाणी में पाणी मिळ्या अेक रग हुय जावै हे पण अठै तो समदर साथै होवता थका ई न्यारा न्यारा आपरै रग सू जाणीजै है। रात नैं समदर जिकौ हूकारा मारै वे देखण जोग है। समदर री छोळा अैडी आय आय'र किनारा माथै धमचक घालै के मत पूछौ बात। दिन ऊगती बगत समदर जिकौ धीरज धरै वो देखण जोग है। निरायत सु झिलमिल झिलमिल करती लहरा चालै है वासू जद पून गळै मिलै तो जी सोरौ करदै। जद सूरज भगवान समदर माय सू निकळण ढूकै तो अैडो रूप देखण जोग हुवै है। समदर रौ पाणी सोनलिया रग रौ हुवतो दीसै। सूरज पाणी माय सू अेक सोनलिया लकीर सृ दिखणौ सरू हुवै अर होळै-होळै पूरौ सूरज समदर माथै अैडो लागै है कै सोने री टणकौ घडौ पडग्यौ है। इण घडी में लोगा रै अर नारदजी रै जीव में अेडी बग्नै है कै उणरौ बखाण करणौ घणौ अवखो है।

भगवान नारदजी नैं कैयौ कै नारद अबै पाछौ आयजा। तद नारदजी बोल्या, 'भगवान आ ठौड तो सुरगा सू भी बत्ती है। इण जोग म्हैं तो आ ठौड छोड'र आपरै सुरगलोक में नीं आवू।'

इतरौ सुणता ई भगवान मुळक्या। नारदजी बोल्या, 'भगवान, थै मुळक्या किया ?'

भगवान कैयौ, 'नारद ! थू इण देस रा मिनखा नैं अजै ताई परख्या कोनीं। इण मुजब थोडौ थावस राख।'

नारदजी बोल्या, 'आ काई कैवौ हो। अठै रा मिनख-लुगाई फूटरा-फर्रा है, भला है अर हुवै भी क्यू नीं, आ भोम सुरगा सू भी सवाई है। थै भी भगवान कणैई कणैई मस्करी करण ढूकौ हो।'

भगवान बोल्या, 'नारद ! थावस राख थावस। थू पैला आ सू मिल, पछै म्हासू बात करी।'

नारदजी घी-चीणी रै चूरमै रा सौकीन हा। इण जोग घी वेचण आळै धनजी सू पक्का भायला घालै। देसी घी री जद लपटा उठती तो नारदजी रौ जीसोरौ हुय जावतो। केई अेक दिना पछै नारदजी अर धनजी पक्का भायला

बणग्या। तद अेक दिन नारदजी धनजी रै घी आळै कारखानै में जा ऊभा। नारदजी धनजी रा खासमखास हुवणै रै कारण कारखानै रा मिनख वानैं कारखानै में आवण सू नीं रोक सक्या। नारदजी देख्यौ कै काम करण आळा चतराई सू चिन्हेक खरै घी सू घणी सारौ खोटौ घी खरौ ज्यू कर पींपा भर'र चौहटै में भेजै है। नारदजी मन ई मन विचारण ढूका कै औ घी जिका भी खासी बै हळवा-हळवा मौत रै नैडता पूगता निजर आसी। औ किसोक खोटौ काम करै है अै लोग ! मिनख मारता इणा नैं हया-दया ई नीं आवै ? इतरौ सौचता ई बारौ माथौ भन्नाटी खावण ढूकै। वै बठै ई माथौ झाल'र भोम माथै बैठग्या। धनजी भाज'र नारदजी कनै आया अर बोल्या, 'जीव सोरौ कोनीं काई ?'

नारदजी बोल्या, 'जीव तो नेडौ-तेडौ रैयौ ई कोनीं। ना औ सोरौ है अर ना दोरौ।'

रात नैं नारदजी अर धनजी दोनू बैठ्या तो नारदजी बोल्या, 'भाईडा थू इतरौ घी साव खोटौ असली बणा'र बेचसी तो थनै राज पकड लेसी अर सजा हुय जासी। इण मुजब अै खोटा काम क्यू करै ?'

धनजी बोल्या, 'थै तो साव भोळा हो। नीचै सू लेय'र ऊपर ताई सगळा ई अेक दूजै सू रळ्योडा है। सगळा रा खूजा भरया ई औ काम हुवै है।'

नारदजी बोल्या, 'जद मिनख मिनख इणनैं खासी तो पछै होळै-होळै सुरगा पूगतौ निजर आसी।'

धनजी बोल्या, 'थै तो भोळी बाता करौ हो। कुण मरसी अर कुण जीवेला, औ सावरियै रौ काम है, म्हारौ काम रुपिया कमावण रौ है, जिका म्हैं नेम-धरम सू काम करू हू। जे नेम-धरम में कीं कमी रैय जावै तो सत्सग भी जाय आवू हू। इण मुजब सगळा पाप धुप जावै। ज्यूकै पत्थर हजम चूरण खाया पत्थर भी हजम हुय जावै है, इया ई सत्सग में जाया पाप धुप जावै है। थू क्यू सोच फिकर में डूब्यौ है। आपा खरौ घी खावा हा। थू बा कैवत सुणी कै नीं— म्हैं पीयौ, म्हारौ बळध पीयौ, अवै कूवौ धुड पडै।'

नारदजी भगवान कानी देख'र बोल्या, 'देख्यौ भगवान ! थारा भगत सत्सग में पत्थर हजम चूरण खावै है।'

भगवान बोल्या, 'देखती जा नारद, अजै ताई तो रुपियै में पावलौ ई पीसीज्यौ है।'

नारदजी बोल्या, 'भगवान ज्यू थै करावौ हो बिया ई जीव करै है, पछै

इणरौ काइ दोस ?'

भगवान वोल्या, 'नारद, हू जीवा में आदमी जात नैं आ छूट दीनी है कै वो चोखा काम भी कर सकै है अर भूडा काम भी कर सकै है। चोखौ करण आळौ चोखौ पासी, भूडी करण आळौ भूडी पासी। अबै मानखे रै हाथ में है कै वो सुरग में जावै या नरक में जावै।'

नारदजी सामनै आळी तेल री दुकान रै मालिक पेमजी सू भायला घाल्या। जद पक्का भायला होयग्या तो अेक दिन उणरै कारखाने में ई जा धमक्या। कारखानै में लोग ज्यू घी में रळगट करता हा बिया ई तेल में करता निजर आया। नारदजी पेमजी नैं कैयौ। पेमजी आ तेल में रळगट होय रैयी है, इणसू तो मानखौ मरतौ निंगै आसी ?'

पेमजी वोल्या, 'थै दुनिया रौ अणुतौ भार क्यू उखण्या फिरौ हो। आ तो बरसा सू चालती आई है अर आगै भी इण देस में चालती रैसी। था पर तो आ बात हाडो-हाड वैठे है कै—म्हें कुण कै खामो खाप।' थै क्यू भूडौ पिलकाओ हो। आपा औ रळगट आळौ तेल नीं खावा। आपा तो साव खरौ तेल खावा हा। थै म्हारा भायला हो इण मुजब म्हारै धधै में टाग मत अडावौ।'

नारदजी वोल्या, 'पेमजी, थै घी कुणसी दुकान सू लावौ हो ?'

पेमजी वोल्या, 'सामी धनजी री दुकान सू लावा हा, वा नामी दुकान है। किलै माथै पाच रुपिया करडा तो लेवै है पण घी असली है।'

नारदजी रौ माथौ भूवाळी खावण ढूकौ अर बोला-बोला वठै सू टुरग्या। पछै वै धनजी कनै पूग'र बानैं पूछ्यौ, 'थै तेल कुणसी दुकान सू लावो हो ?'

धनजी बोल्या, 'वा सामी पेमजी री दुकान है नीं, पेमजी किलै माथै दाम तो दो रुपिया ऊचा ई लगावै पण तेल धारदार देवै।'

नारदजी री आख्या आगै अधारी आयग्यी। आख्या मींच'र वै मन ई मन बोल्या—वाह रे लोगा, अेक दूजे नैं मारता कीं सकौ नीं करौ। घी आळौ सापडतै तेल आळै नैं मारै है अर तेल आळौ घी आळै नैं मार'र राजी होय रैयी है कै म्हें कितरी चतराई सू रुपिया कमावा हा।

नारदजी री अबै आख्या खुली तो खुली ई रैयगी। नींद आख्या में बावडै ई कोनीं। रात भर गुमसुम हुयोडा सोचता रैवै अर दिन में दुकाना रा चक्कर लगावै। आज नारदजी दवाया बणावण आळी फैक्ट्री में जाय बड्या तो देख्यौ कै धडल्लै सू नकली दवाया बण रैयी है। वै वोल्या, 'अरे ! आ दवाया सू बीमार

आदमी नीं मरतौ ई मर जासी। थारी चेती कठै गुमग्यी है। थै तो म्हनैं हत्यारा लागौ हो। नीं मरण आळै मिनख नैं थै मारौ हो। थै इतरी ई विचार नीं करौ कै आ दवाई थारै घर आळै मिनखा नैं या थारै भाई-बधा नैं या थारै सगा-सोई नैं नीं मारसी, वै भी तो बीमार पडै है।'

फैक्ट्री रौ मालिक बोल्यौ, 'औ ओपरौ मिनख कुण आयग्यौ है ? इणनैं उठा'र बारै फैंकौ।' अर नारदजी नैं चार जणा टागा-टोळी करता बारै फैंक दिया।

नारदजी लोगा रा फेल देख देख'र ऊंडा बगचूवा होया कै दिन ऊगता ई दूजी दुकाना माथै जाय'र ठा लगावण लाग्या तो बारी बाकी फाटग्यी। जिकै रै ई हाथ लागै वो ई रळगट में मगन हुयोडो आख्या आगळ अधारौ कर'र दिन दूणी रात चौगणी धन कमावण जोग होडा-होडी में लाग्योडी है। काई धणियो, काई मिरच, हळदी, लूण चाय, खाड, गुड, आटौ, दाळ, चावळ सगळी जिन्सा में रळगट ई रळगट होंवती नारदजी देखै है। भारत रा लोग कैडा'क है ? अेक दूजै नैं विस पावै अर खुद भी विस पीवै है। अै बगना हुयोडा अेक दूजै नैं मारै है अर राजी हुवै है कै म्हैं कित्तौ चतर हू कै सागोपाग मिलावट कर'र मोकळा रुपिया कमावू हू। बधकाई में आ औरं समझै है कै औ काम म्हनैं ई आवै है। दूजा सगळा डफोळ है। नारदजी मन ई मन बोल्या, 'पैला तो इण देस में आ कहावत ही कै काळीदास आपरी डाळ माथै बैठ'र आपरी डाळ काटतौ हो, पण अबै तो म्हनैं इण देस में काळीदास ई काळीदास निगै आवै है। आ तो वा ईज बात हुई कै 'चार चोर चोरी कर'र गाव रै बारै बैठ'र बाटण लागा, पण भूख जोरा सू लाग्योडी ही इण मुजब अेक नैं गाव में रोटी लावण नैं भेज्यौ। लारै सू तीना सोचियौ कै आवण आळै नैं आपा तीनू रळ'र मार'र नाखसा तो धन आपा तीना में ईज बटसी। रोटी लावण आळौ विचारयौ कै म्हैं तीना नैं रोटी में जहर खुवाय दू तो सगळौ धन म्हैं ले लेसू। रोटी ले'र पूग्यौ तो तीना उणनैं मार नाख्यौ। अबै जीमण जीम्यौ तो तीनू ई जहर रै कारण मरग्या। कनै पड्यौ धन चारा माथै हस रैयौ हो। आ ईज दसा इण देस में हो रैयी है। मानखौ मर रैयौ है अर धन हस रैयौ है।

नारदजी री, औ फैल देख-देख'र काळजौ घणौ ईज कळपीज्यौ। जिण ढगढाळै आ रळगट री आदत घमघमिया करती मानखै माथै आपरी सिप्पी जमाय लेवै है तो पछै इणसू लारौ छुडावणौ घणौ अबखौ हुवै है। इण सुरगा जैडी भोम

जिकी चारू खूटा राती-माती है, नैं औ कैडो'क गिरण लाग्यौ है ? औ विचार नारदजी नैं आवण लाग्या तो बा देख्यौ कै बारै डील माथै कोई बटका भरण ढूकौ है। औ लोग गरीबा रा मिणिया मसोस'र सुरगा में कीकर जासी ? सुरगा सू भी सवाई जाग्या पर आज रौ मिनख माया रै चक्कर में समसाण वणावण ढूकौ है।

नारदजी विचारयौ, औ रळगट री काम रोकाया विना आ सुरग जैडी भोम नरक बणती अवै निगै आसी। इण जोग जीवडा इण देस रै प्रधानमत्री कनै चाल जिकी ई इण रोग री इलाज करसी। प्रधानमत्री कनै पूग'र नारदजी बोल्या, 'हे राजाधिराज ! थारै राजकाज में ठौड-ठौड माथै रळगट होय रैयी है। चौडै-धाडै मिनख नैं मिनख मार रैयौ है अर खुद भी मर रैयौ है। काई थारै आख्या कोनी, थू क्यू मुस्ट बाट्या बैठ्यौ है ?

प्रधानमत्री बोल्या, 'महाराज ! थै कुण हो अर कठै सू आया हो ?'

नारदजी बोल्या, 'म्हैं कुण हू अर कठै सू आयौ हू इणसू थनै काई लेणौ-देणौ, थू आ मिलावटिया नैं सजा क्यू नीं देवै ?'

प्रधानमत्री बोल्यौ, 'थारौ माथौ भुवाळी खायोडो लागै है। थनै ठा कोनीं कै म्हारौ राज भी रळगट पारट्या सू चालै है। म्हैं आनैं हटाय दू तो म्हैं कठ रैसू ? थू म्हारै घर री नींव खोदण नैं आयौ है ?' कैय'र चपडासी नैं हेलौ करियौ अर कैयौ, 'इण महाराज नैं टिल्ला देय'र बारै काढदै ?' नारदजी बोल्या, 'कागलै राज रै कगालपणै रा काचडा ई होसी।' इत्तौ कैय'र बठै सू टुर व्हीर होया।

नारदजी भगवान सू अरदास करी कै म्हनैं वेगौ इण देस सू पूठौ बुलायलौ, म्हारौ सास अबै अवखौ चालण ढूकौ है। भगवान बोल्या, 'अरे नारद ! थू तो कैवतौ हो कै आ भोम सुरगा सू भी वत्ती हे, इण जोग अबै थू तो अठै ईज रहा।'

नारदजी बोल्या, 'भगवान कैडी'क बाता करौ। अठै रा लोग हत्यारा भी है अर हत्यारा भी कोनीं क्यूकै अै तो आपीआप मर रैया है अर ऊपर सू राजी होय रैया है। इसौ मुलक तो अजै ताई म्हैं कठैई नीं देख्यौ।'

भगवान बोल्या, 'बस धापग्यौ ? अठै तो खुल्लो खेल फरुकाबादी है। इण जोग म्हैं थनै कैयौ कै थू ठावस राख ठावस अर अठै रा मिनखा सू मिल।'

नारदजी बोल्या, 'अठै रा लोग तो मिनखागत में ई कोनीं। अबै तो औ सुरगा जैडौ देस थारै औतार लिया ई सुधरसी। थै वेगासाक अठै औतार लेवौ।'

भगवान बोल्या, 'आ ऋषि मुनिया री भोम है, म्हनैं तो आवणौ ई पडसी पण अवार टेम नीं आयौ है।'

मन नीं मानै

कानजी रै दूध बेचण री धधौ पुरखा सू चालतौ आयौ है अर आज भी कानजी औ ईज काम करै। दूध रै मामलै में कानजी री साख-धणी सातरी है, पण अबै दावै जिकौ ई दूध में पाणी रळगट कर'र सस्तौ दूध बेचण लाग्यौ तो कानजी रौ मूघौ दूध विकणौ अबखौ होयग्यौ। दिनोंदिन कानजी री दसा पतळी होवण लागी तो अेक दिन कानजी आपरी बहवड नैं कैयौ, 'भागवान ! धधौ माडौ चालै है। जोग इसा लागै है कै भूख मरण जिस्या होय जासा।'

कानजी री बहवड भी भण्योणी- गुण्योणी ही। इण मुजब बोली— जिकै गाव में रैणौ, हाजी-हाजी कैणौ। गाव करै सो गैली। समझ्या कै नीं ?'

कानजी बोल्या, 'कोनीं समझ्यौ।'

तद वा बोली, 'जणा दूजा दूध में पाणी रळगट करै है अर लोग दूध सस्तौ देख'र लेवै है तो पछै आपा अछूत बण्या अछूत ही रह जासा। हियै कागसी फेरो अर लोगा रै साथै रळ जावौ।

कानो बहवड री बाता सुण'र गुमसुम होयग्यौ। मन में विचारण ढूकौ, कानिया डफा, धरम बेचिया जीवैला किया ? अर बिना रोटी रै भी जीसी किया? इनै पडै तो खाई, उनै पडै तो खाड। ना जीया ई सरै अर ना मरया ई सरै।

बहवड बोली, 'इया गुमसुम होया पार नीं पडै। काई सोचो हो ? मोगम खोलौ।'

कानौ बोल्यौ, 'पाणी रळा'र दूध बेचू तो आगौ-पाछौ विगाडू अर पाणी नीं रळाऊ तो भूखा मरू। अबै थू ई बता काई करू ?'

बहवड बोली, 'करणौ काई है, जिका दूजा मिनख करै वो ईज थै करौ।'

कानौ बोल्यौ, 'भागवान ! अैडौ काम करण जोग मन नीं मानै।'

बहवड बोली, 'कैडी'क बाता करौ हो, मन आपारौ गुलाम है कै आपा मन रा गुलाम हा। जिया मन नैं आपा राखा हा बिया ई वो रैवै है। इण मुजब मन रै चक्करा में ना पडौ। घर में बेटी-बेटौ जोध जवान होयग्या है, आ रा हाथ

भी पीळा करणा है, सो तो सोची कोनीं अर मना रै भवरजाळ में फसौ हो।'
कानजी भजन वाजतौ सुण्यौ—

म्हारौ मनडौ भटका खाय इण दुनिया रै माय
हू सावरियै नैं याद करू पण मन पाप रै माय
म्हारौ मनडौ
धर्म छोडिया जीवण कोनीं धन बिन कोनीं मान
बीच भवरियै नाव उळझगी, जीवडौ गोता खाय
अब हींड् हींडै माय, म्हारौ मनडौ भटका खाय।

कुण थारी नैया पार लगासी, कुण खेसी पतवार
माटी रा सै पूतळा रे भाई, मिलसी माटी माय
तू फेर कागसी माय, म्हारौ मनडौ भटका खाय।

मायाजाळ में लिपटी काया, रोवै है दिन रात
आज काल कर दिनडा बीत्या, उमर गई घर माय
हू खावू धमीडा माय, म्हारौ मनडौ भटका खाय।

जीवडै में सावरियौ बसियो, हू बसियौ घर माय
सरदार अली नैं चैन पडै नीं, भटकै है जग माय
मुड-मुड देखै माय, म्हारौ मनडौ भटका खाय।

दो दिन आडा घाल'र कानजी फेरू वहवड सू बात करै, 'थू साची कैवै है। इया ई धधौ चाल्यौ तो भूखा मरण री नौबत आ ढूकसी।'

आ बाता बिचाळै कानजी री भायली लूणी आयग्यौ। लूणी बोल्यौ, 'आज भाई-भोजाई काई मत्रणा करौ हो ? झमकूडी री सगाई री बाता करौ हो काई ?'

कानौ बोल्यौ, 'नहीं भाई।'

लूणी बोल्यौ, 'म्हैं अेक सगपण लायौ हू। छोरौ पढ्यौ-लिख्यौ, हाकम लाग्योडौ है। कैवौ तो बात करू।'

कानौ अर उणरी बहवड बोली, 'किणरी टावर है ? म्हानैं तो छोरी रा हाथ पीळा करणा ई है।'

लूणी बोल्यौ, 'बोलौ, टीकै में काई देसौ अर दायजै में काई देसौ ?'

कानौ बोल्यौ, 'वा री काई माग है ?'

लूणी बोल्यौ, 'पचास हजार टीकै में अर पाच लाख री दायजौ।'

सुण'र कानौ बोल्यौ, 'विचार सा।'

कानौ अर उणरी बहवड आज दिनूगै सू ई इण सोच में बैठ्या है कै छोरी रा हाथ पीळा करण जोग रुपिया कीकर कमावा ? जद दोना री सगळी तरकीबा फेल होयगी तो बहवड बोली, 'लोगा ज्यू दूध में पाणी रळावणौ सरू करौ।'

कानौ बोल्यौ, 'भागवान, औ खोटौ काम करण जोग म्हारौ मन नीं मानै।'

बहवड बोली, 'तो इया करौ कै पाणी भी रळावौ अर कूड भी ना बोलौ।'

कानौ बोल्यौ, 'वो किया ?'

बहवड कैयी, 'थै तीन तरै रा दूध राखौ– १ छह रुपिया किलौ, २ आठ रुपिया किलौ अर ३ बारै रुपिया किलौ। छह रुपियै किलै आळै में घणौ पाणी रळावौ अर उणसू कम आठ रुपियै किलै आळै में पाणी रळावौ अर उणसू कम बारै रुपिया किलै आळै में पाणी रळावौ अर बेचणौ सरू करौ।'

कानौ बोल्यौ, 'हा, आ बात ठीक है।'

अबै कानजी रौ धधौ सागोपाग चालण ढूकौ। कानजी थोडैक दिना में ई कमाई चोखी करली। कानजी दूध में पाणी रळगट करता करता इतरा पक्का होयग्या कै बिना दूध में रळगट कर्‌या बिना अबै बानैं जक नीं पडै। छोरी रौ ऐडौ ब्याव कर्‌यौ कै लोग देखता ई रैयग्या। कानजी अर उणारी बहवड ब्याव हुया पछै आपस में बैठ्या तो कानजी बोल्या, 'थू साच कैवै ही, अठै साच बैठी रोवै है अर कूड परवान चढै है।'

कानजी, चादजी रै घर सामी जाय'र हेलौ दियौ, 'दूध ले लौ दूध !'

चादजी बारै आया अर कानजी नैं हेलौ दियौ। चादजी बोल्या, 'दूध काई भाव है ?'

कानजी बोल्या, 'छह रुपिया किलौ, आठ रुपिया किलौ अर बारै रुपिया किलौ, बोलौ किसौ दू।'

चादजी बोल्या, 'थारै सिधण, अमरीकण अर देसण, तीन तरै री गाया है काई ?'

कानजी बोल्या, 'थै पढ्या-लिख्या होय'र भी समझ्या कोनीं ?'

चादजी बोल्या, 'नीं भाई कोनीं समझ्यौ।'

कानजी बोल्या, 'छह रुपिया आळै दूध में घणी पाणी अर आठ रुपिया

किलै आळै में कम पाणी अर बारै रुपिया किलै आळै दूध में जावक कम पाणी। पण पाणी सगळा में है, बोलो कुणसी दू ?'

घादजी बोल्या, 'समझग्यौ, बारै रुपिया किलौ आळौ दूध देवौ जिकै सू चाय बणावा।'

चादजी बोल्या, 'कानजी ! थारै मन मानै जितरा रुपिया लेलौ पण म्हनैं खरो दूध दो क्यूकै म्हनैं बैद कैयौ है कै म्हारी दवा असर जणा ही करैली जणा दूध प्योर हुवैला। म्हनैं थै साचा मिनख लागौ हो जणा ई था साच-साच कह दियौ कै पाणी तो सगळा में रळगट है। दूजा तो औ ई कैयदे कै दूध में अेक टोपौ ई पाणी कोनीं रळायौ है अर बै दूध में पाणी नहीं पाणी में दूध रळावै है।'

कानजी आख्या मींच'र विचारनै बोल्या, 'म्हैं सोळै रुपिया किलौ खरौ दूध देय देसू।'

तद चादजी सोळै रुपिया रै हिसाब सू अेक महीनै रा रुपिया आगूच दे दिया। महीनै भर ताई चादजी रै दूध खरौ आयौ। महीनौ पूरौ होया चादजी बोल्या, 'कानजी थारौ दूध साचौ, ल्यौ अेक महीनै रा आगूच रुपिया औरू लेवता जावौ।'

कानजी बोल्या, 'ना तो आगूच रुपिया लेवू अर ना अबै औ दूध दू।'

चादजी बोल्या, 'सोळै री ठोड सतरै रुपिया किलै रै हिसाब सू लेलौ।'

कानजी बोल्या, 'थै सतरै रुपिया री बात करौ थै किलै रा सौ रुपिया देवौ तो ई म्हैं दूध कोनीं दू।'

चादजी बोल्या, 'क्यू भाई, अैडी काई बात होयगी ?'

कानजी बोल्या, 'अेक हफ्तै ताई तो म्हारी आख्या सामी थारा सोळै रुपिया घूमता रैया पण इण पछै बे तो बुवा गया अर अबै म्हैं रात नैं सूतो-सूतौ सोचण ढूकौ कै इण दूध में पाणी रळायोडो है, उण दूध में पाणी रळगट कर्योडौ है पण थारलै दूध में पाणी किया रळगट करू ? सोचता सोचता आखी रात पसवाडो फोरता फोरता ही बिताय दू हू। इण जोग म्हैं नींद बेच'र ओजकौ नीं लू। म्हारौ पाणी रळाया बिना मन नीं मानै।'

चादजी बोल्या, 'आजकाल मिनखा रै हाडोहाड कूड बैठगी है। जित्तै ताई किणी दूजै नैं धोखाधडी सू मात नीं देयदै, बित्तै ताई उणा नैं नींद नीं आवै। बा रौ मन तो तद ई मानै जदकै साचै मिनख नैं पटकी नीं दे मारै। अैडा घणकरा लोग अबै होयग्या है कै वै आत्मा रै हेलै नैं गिनारै ई कोनीं। बघकाई में वींनैं मार मार'र बगचूची बणाय नाखी है।'

कळजुग

भीखजी सैणा-समझणा अर धीरा मिनख हा। उणा रै दो बेटा अर चार बेट्या ही। भीखजी निजु मिनख री फैक्ट्री में काम करता हा। दोनू बेटा अर चारू बेट्या रा भीखजी धूमधाम सू ब्याव कर दिया हा। बेटा नें ऊची पोसाळा में भणाया। जद बै सगळा ऊचै ओहदै री नौकरी लागग्या तो उणा रा ब्याव करया हा। उण ब्याव-अेढा अर भणाई में भीखजी री सगळी कमाई लाग चुकी ही। जणा भीखजी रिटायर हुया तो जिका भेळा बारे लाख रुपिया मिल्या हा, बा सू दोनू बेटा जोग बडा-बडा प्लोट ले लिया हा। बेटा ऊचै ओहदा माथै हा, इण जोग इण भोम पर टणकेल कोठ्या बणायली ही। भीखजी कनै कीं नीं बचियौ पण जद दो बेटा हाकम हा तो बानें चाइजती भी काई हो ?

भीखजी अर उणारी जोडायत दोनू बडोडे बेटै कनै रैवण ढूक्या। केई साल तो सुख सू कट्या पण अबै बडोडै बेटै अर उणरी बहू नैं मा-बाप अखरण लाग्या तो अेक दिन बडोडौ भाई छोटकियै नैं कैवौ, 'अबै मा-बाप नैं थू राख।'

अबै मा-बाप नैं छोटकियौ आपरै घरै राखणा सरू करया। पण कीं बगत बीत्या पाछा बडोडै भाई रै घर में घालग्यौ। थोडै टेम पछै बडोडौ बानैं छोटोडै बेटै रै घरा घाल जावै। तद भीखजी अेक दिन दोनू बेटा नैं बुलायने कैयौ, 'अरे म्हैं थानैं काळजौ काढ'र दे दियो। थारै बहुवा रै थारी मा रो सगळौ गैंणौ चढाय नाख्यौ, थानैं भणावण जोग ऊची पोसाळा में घाल्या, म्हारा रुपिया पाणी ज्यू बहा हा। म्हा दोनू भूखा रैवता हा पण थानैं मूडै मायलौ कवौ देंवता। आज म्हे दोनू जीव इतरा भारी होयग्या कै थै अेक जणौ ई म्हांनैं नीं राखौ ? थारै घरा में म्हा जोग ठौड कोनीं? म्हा जोग दो रोटी कोनीं ? वाह रे म्हारा सरवणा, था जबरी करी।'

छोटोडौ बेटौ बोल्यौ, 'म्हा खातर करयौ तो काई किरियावर करया है ? सगळा ई आपरै टाबरा खातर करै है, थै भी म्हारै खातर करयौ तो काई गिणावौ हो ?' बडोडै बेटै ई हा में हा मिलाई। दोनू बेटा री बहुवा मूडौ मचकोड्या अेक कानी ऊभी ही। भीखजी दोनू बेटा नैं आख्या फाड फाड'र देखता ई रैयग्या। बारी तो इतरौ सुण्या पछै सिटी-पीटी गुम होयगी।

भीखजी री जोडायत बोली, 'वाह रे म्हारा माटी रा सेरा, थै लुगाया रा गुलाम, सो अैडी बाता ई बोलसौ। जे म्हनैं ओ ठाह होंवती कै थै साप वण'र म्हानैं डसस्यौ तो म्हैं थानैं जलमता ई टूपौ देय'र मार नाखती। पण म्हैं तो थारै जलम्या सोनल थाळ वजायौ हो। लोगा नैं बधाया वाटी ही कै म्हारै बुढापै री सहारौ घर में आयग्यौ है। जणा थै सियाळै री भरपूर आधी रात में धारकी चला नाखता तो म्हैं उणनैं गगाजळ समझ'र सीया मरती-मरती भी थानैं ठारी ना लाग जावै रा जतन करती ही अर थै आज औ फळ देवौ हो ? हे भगवान ! म्हनैं बाझ राख देंवतौ तो ई चोखौ रैवतौ, अै दिन तो नीं देखणा पडता।'

अबै मा री गाळ्या सुण्या पछै वडोडी बेटी छोटकियै नैं कैयौ, 'इया करा कै थू मा नैं राखलै अर म्हैं बापूजी नैं।'

आ सुण'र भीखजी बोल्या, 'वाह रे म्हारा सरवण कुमारा। म्हानैं न्यारा तो मरया सू भगवान ईज करसी पण थै म्हानैं जीवता जी न्यारा करौ हो ? थै तो भगवान सू भी वत्ता लागौ हो।' भीखजी माथौ झाल'र भोम माथै बैठग्या अर बोल्या, 'आसियै री मा ! अै जलम्या जद आपा कितरौ उछब मनायौ हो। औ उछब इण जोग मनायौ हो कै अै आपानैं जीवता ई मार नाखसी। हे सावरिया ! अबै थू म्हानैं अठै सू उठायलै तो चोखौ है।'

नानकौ भीखजी री भायलौ। भीखजी सू मिलण नैं पूग्यौ तो भीखजी माथौ झाल्या धार-धार रोवता दीस्या। नानकौ भीखजी री जोडायत कानी जोयौ तो उणरी आख्या सू भी टप-टप मोतीडा टळकै हा। औ रासौ देख'र नानकौ बोल्यौ, 'काई बात है भीखजी ! कीं मोगम खोलौ।'

भीखजी बोल्या, 'नानका, छोरा म्हामें कैडी'क करी है।'

नानकौ छोरा अर उणा री जोडायता कानी जोय'र बोल्यौ, 'काई बात है?'

जणा छोटोडी बेटी बोल्यौ, 'आ री तो साठी बुद्धि नाठी है।' सगळा नस रौ रळकौ करता हा में हा मिला'र बठै सू जावै परा। नानकौ टेम नैं भाप'र बोल्यौ, 'भीखजी ! थै अर भाभी म्हारै घरा चालो, बठै बैठ'र चाय-पाणी पीसा अर वाता करसा।'

तीनू जणा जावता जावता सुण्यौ— पापौ कट्यौ। भीखजी री बहू कैयौ, 'सुण लियौ नानकजी !'

नानकौजी बोल्यौ, 'सो कीं सुण लियौ अर सो कीं देख लियौ है पण भाभी अबै म्हैं आनैं भी सुणा'र जावू हू कै जिकी आ म्हारै भायलै में करी है नीं, उणसू चौगणी आंरै खातर कर'र नीं बतावू तो म्हैं फिरती रा चून्या है। जे

म्हैं असल बाप रौ हू तो आनैं पाणी पाय छोडसू।' इतरौ कैय'र दुर जावै।

नानकौ आपरी बहवड नैं हेलौ पाड्यौ, 'भागवान ! देख, आपणै घरा म्हारो वाळगोटियौ भायलौ भीखौ अर उणरी जोडायत आया है। आ रै खातर फटाफट चाय वणाय'र ला।'

नानकै री बहू बारै आयी अर भीखजी री जोडायत न साथै लेय'र माय बडती बोली, 'औ तो म्हारा भाग है कै था जिसा देवता म्हारै घरा पधारया हो।'

नानकौ बोल्यौ, 'जिका थनैं देवता लागै है नीं, आ रै बेटा-बहुवा नैं औ राखस लागै है।'

वा बोली, 'अैडी ऊधी बात क्यू करौ हो ?'

भीखजी बोल्या, 'भाभी औ साच कैवै है।'

भीखजी री जोडायत रोवण ढूकी तो वा बोली, 'जीव छोटौ ना करौ, आपा साथै-साथै रहसा। थै ई दो अर म्हे ई दो हा। काई करा म्हारै टाबर नीं होया।'

भीखजी री बहवड बोली, 'आ टाबरा रै चक्करा में म्हे रोवता फिरा हा। बैन, थू घणी भाग वाळी है जकौ थारै टाबर नीं होया।'

भीखजी अर नानकौ चाय पीया पछै विचारण ढूका तो भीखजी बोल्या, 'भाइडा थू जिकी धमकी वानैं देय'र आयौ है नीं, उणरौ बा माथै कीं असर नीं हुवै। ठठारा री मिनकी खडका सू नीं डरै।

नानकौ बोल्यौ, 'इया किया थै कैय दियौ कै म्हैं इतरी बडी बात किया सह लेसू कै म्हैं थानैं पाणी नी पाय दू तो असल बाप रौ कोनीं ? भीखजी, औ कळजुग है। इण मुजब आज घर-घर औ ई घमसाण हुवै है। कळजुग में तो कूड कूड नैं काटै है, साच बैठी रोवै है। देखौ थै साचा हो। बेटा खातर काई काई नीं करयौ पण बै धत्तौ बतायग्या। आजकाल घणकरा साथै आ ईज हुवै है। भलमाणस तो रोवता फिरै अर लुचा लफगा राज करै है। आपाधापी अैडी मची है कै हाय-हाय नैं खावै है। भाई नैं भाई मारै है। इण कळजुग में अबै भीखा थनै भख लेणी ई पडसी। थारै छोरा नैं थू चेती नीं करासी तो औ आख्या मींचिया ई रैसी।'

भीखौ बोल्यौ, 'तो बता भाई, म्हैं काई करू ?'

नानकौ बोल्यौ, 'देखो भीखजी, थारै कनै कोडौ ई कोनीं। जणा छोरा थानै राखै कोनीं तो थै अबै रोटी किया खासौ। बैन-बेटी नैं ई दिया सरसी। बेट्या भेळा जाया जीवता ई मरया समान हो।'

भीखजी गळगळा होय'र बोल्या, 'हा भाईडा !'

नानकी बोल्यौ, 'इया रोया सू राज नीं मिलै। किरकौ राखौ अर छोरा सू लडाई माडदी। अै तो इसा सीधा हुसी जिया पाळ्योडी गडक लटुरिया करै विया करण ढूकसी। आ दोनू धरा री जमीन थारै नाव है नीं ?'

भीखजी बोल्या, 'हा है।'

नानकौ बोल्यौ, 'तो दोनू घर थारा है। आनैं कैय दो कै दोनू घर खाली कर'र म्हानैं सूपी नीं तो म्हे कचेडी चढू हू।'

भीखजी बोल्या, 'औ न्याय कोनीं, जमीन तो म्हारी है पण मकान तो अै लाखू रुपिया लगा'र बणाया है।'

नानकौ बोल्यौ, 'न्याय-अन्याय नैं भूल जावौ। औ कळजुग है। इण जोग औ करया ई पार पडसी।'

भीखजी री जोडायत बोली, 'न्याय करता करता बूढा होयग्या। नौकरी में अेक पईसौ हराम रौ खायौ कोनीं पण टाबर हाकम लाग्या तो लोगा कैयौ भीखजी थारी खरी कमाई काम आई पण खरी कमाई इण कळजुग रै अेक ई झोंकै में उडती निगै आई है। उण जोग नानकजी कैवै बा मानलौ।'

भीखजी बोल्या, 'भागवान ! औ तो न्याय कोनीं। जमीन आपारी है पण मकान तो बा ही बणाया है। तो नानकौ बोल्यौ, 'सुणी भीखजी, कळजुग में साच बोल्या काई हुवै है। सुणो, थानैं अेक कहाणी सुणावू--

"बैन-भाई में घणौ ई हेत हो। बैन कैयौ, 'थारी बैनोई आ कीमती लाल लायौ है। इणनैं अमानत समझ थारै कनै राखलै। जणा अडी बगत पर मागू तो देय दीजै।'

भाई लाल ले ली अर सभाळ'र राखदी। बैन रै बेटौ होयौ। घणौ ई हरख मनायौ पण तीन महीना पछै बैनोई रौ सुरगवास होयग्यौ। बैन रै घरा सागोपाग भीखौ पड्यौ। दुखा रौ भाखर अरडाय पड्यौ। जद बा दाणै दाणै री मोहताज हुयगी तो आपरै भाई कनै गई आपरी अमानत लाल मागी। तद भाई-भोजाई सापडतै नटग्या कै थू कोई लाल कदैई दीवी ई कोनीं। बैन कचेडी चढगी। जज पूछ्यौ, 'लाल किणनैं दी ही ?'

बैन बोली, 'इण भाई नैं दी है।,

जज पूछ्यौ, 'किणरै सामी दी ?'

बैन बोली, 'उण बगत कोई कोनीं हो, पण म्हारी राम जरूर देखतौ हो।'

जज बोल्यौ, 'थनैं थारै राम माथै इत्तौ भरोसौ है तो थारै औ गोद में बेटौ है इणरै माथै ऊपर हाथ मेल'र सौगध खायजा कै म्हैं इणनैं लाल दी है।'

बा फटाक टाबर रै माथै पर हाथ राख'र सौगध खाई तो उणरौ बेटौ मरग्यौ। जज बोल्यौ, 'झूठ बोली नीं, थारौ टाबर ई गुमायौ।'

बैन रोवती रोवती पाछी मुडी तो सामी जमराज खडा दीख्या अर बोल्या, 'थू कळजुग में साच बोलै तो थारौ छोरौ मरसी ही। पूठी मुड'र कैयदे कै म्हैं पैला झूठ बोली ही पण अवै साच बोलू हू। म्हैं इण भाई नैं अेक नीं, दो लाल दी ही। जे म्हैं साची हू तो म्हारौ टाबर पाछौ जीवतौ हुय जावै।' वा पाछी मुडी अर जज नैं कैयौ, 'हू पैला कूड बोली जणै म्हारौ बेटौ मरग्यौ पण अवै म्हैं इणरै माथै ऊपर हाथ राख'र सौगध खावू हू कै म्हैं इण भाई नैं दो लाल दी ही।'

उणरै इत्तौ कैवता ई टाबर पूठौ जी उठ्यौ। तद जज उणरै भाई नैं कैयौ, 'अवै थू इणनैं दो लाल झटाक देय नाख नीं तो थनैं जेळ कर देसू।'

इण भात भाई नैं दो लाला देवणी पडी।"

देख्यौ कळजुग री कमाल। इण जोग अवै भीखजी थानैं दोनू बेटा रौ भख लिया सरसी, नीं तो थू गोपिन्दा खावतौ जासी।'

भीखौ बोल्यौ, 'समझ्यौ भाई !' भीखजी में अैडौ बळ बावड्यौ जिया भगवान राम हडमानजी नैं उणरै बळ रै बारै में बतायौ तो वै आभै रा तारा तोड लाया हा।

भीखजी बोल्या, 'चालो कचेडी चढा।'

नानकौ बोल्यौ, 'आपा खतावळ नीं करा, काम नेहचै सू करसा। कचेडी तो आखर में आपानैं जावणौ ई है। कचेडी तो जणा जासा जणा दोनू बेटा रुपिया देवण सू मुकर जासी। पैला वा कनै चाला।'

दोनू भायला वडोडै बेटै रै घरा पूग जावै अर छोटकियै अर उणरी बहू नैं भी बठैई बुलाय लिया। नानकौ बोल्यौ, 'देखौ भाई, भीखजी नैं चार हजार थू अर चार हजार थू, आ कोठ्या री भाडी देवणी है। जे नीं देवणी चावौ तो कोठ्या खाली कर दिया। म्हे दूजा नैं किरायै दे देसा।'

दोनू बेटा-बहू बोल्या, 'अै कोठ्या तो म्हे बणायी हा इण मुजब म्हारी है। थै अठे काई मागौ ?'

नानकौ बोल्यौ, 'अै कोठ्या तो थै बणाई है पण थानैं थारा मा-बाप बणाया है आ थानैं दीखै कोनीं। इण मुजब इण जजाळ सू निकळ जावौ कै कुण किणनैं बणायौ है। सीधा-सीधा चार-चार हजार रुपिया महीनै रै महीनै भीखजी नैं देंवता जावौ नीं तो कचेड्या चढता चढता थारी पगरख्या घींसा नाखसू अर पुलिस थारै डडा मार मार'र सामान सगळौ बारै फैंक देसी। थै इण भोळावै में

मत रैइजौ कै म्हे हाकम हा। कानून सगळा खातर अेक जैडौ है। इत्तो सुणता ई सगळा रा मृडा थाप खायग्या अर आपस में मत्रणा कर बोल्या, 'कोठ्या म्हारी है।'

नानकौ बोल्यौ, 'भीखजी ! लाता रा भूत बाता सू नीं मानै। इण थैलै माय सू पट्टै रा कागज निकाळो, म्हैं बतावू आनैं कै कोठ्या खाली किया हुवै ?'

इतरै में भीखजी रै बडे बेटै रौ भायलौ वकील महेन्द्र आयग्यौ तो वीं पूछ्यौ, काई बात है, आज सगळा किया भेळा हुया हो ?'

नानकौ वकील साहब नैं भीखजी रा कागद दिखावै तो वकील बोल्यौ, 'जमीन भीखजी रै नाव री, अै कोठ्या बणावण री इजाजत भी भीखजी रै लियोडी है। बीजळी पाणी रा कनेक्शन भी भीखजी रै नाव रा है तो पछै डफा थारी अै कोठ्या किया हुई ?'

औ सुण'र सगळा बोल्या, 'इणनैं बणावण में कनेक्शन लेवण में सगळा रुपिया म्हारा लाग्या है। वै रुपिया म्हानैं देयदी अर कोठ्या लेलौ।'

नानकौ बोल्यौ, 'वकील साहब आ साच कैयौ है। थै अबै न्याय करिया। आ भीखजी कनै सू आपरी कोठ्या मुजब रुपिया लाग्योडा लेवै अर भीखजी नैं देवणा ई चाइजै, आ न्याय री बात है पण आ भी न्याय री बात है कै भीखजी आनैं दोना नैं छोटा सू मोटा करया जणा इया नैं रोटी, कपडौ, आ री भणाई, आ रा ब्याव, आ री नौकरी, आ री लुगाया रै गैंणा-गाठा रौ सगळौ हिसाब तो भीखजी चूकसी नीं ? अै भी कीं बोलौ।'

महेन्द्र वकील बोल्यौ, 'थै चारू सुणो हो नीं, मा-बाप सू हिसाब माग्यौ तो वो जज भी किणरौ बेटौ है, थानैं अैडी सजा देवैलौ कै पछै कुत्ता ई खीर नीं खावै। थै बोला-बोला ज्यू भीखजी कैवै त्यू करता जावौ, नीं तो थारा गूदडा बारै फैंकीजता निगै आवैला।'

चारू बोल्या, 'अै कैवैला ज्यू ई करसा।'

नानकौ बोल्यौ, 'चार हजार थू अर चार हजार थू, पैली तारीख नैं बैंक में जमा करासौ अर अै कोठ्या भाडा चढी लिखसी अर उणमें आ भी लिखसी कै जे रुपिया जमा करावण में देर होयगी तो उणरौ ब्याज भोगसा। वै बोल्या, 'म्हानैं मजूर है।'

भीखजी रै माय सू हेलौ होयौ, डफा ! आगळी टेढी करया बिना तो घी भी नीं निकळै।

सहर सूनौ है

गुरु अर चेलौ ऊचै-ऊचै डूगरा रै भाखरा में रैवता रैवता अेक दिन विचारयौ, चालौ सहर में देखा लोग कैडा'क काम करै है ? गुरुजी बोल्या, 'चेला आपा सहर नीं चाला तो ही आछौ है क्यूकै जठै अणुता काम हुवै वठै आपा सू बोल्या विना रैइजे कोनीं अर अणुतौ काम करण आळै नैं वो साव साचौ लागै है। इण मुजब आपा अठेई बैठा हा। पण चेलै रै चैन नी पडै अर आखर में गुरुजी नैं राजी कर ई लेवै।

गुरु अर चेलौ धर कूचा धर मजला करता-करता सूरज निकळणै सू पैला ई अेक सहर में बडग्या। उण सहर में दिनूंगै दिनूगै नळ में पाणी आवण लाग्यौ तो सहर रै कैई अेक ठौड माथै पाणी री टूट्या लाग्योडा स्टैण्ड बण्योडा हा। स्टैण्ड री टूट्या माय दडाछट पाणी बैंवतौ नाळ्या में जावतौ दीसै। स्टैण्ड माथै अेक ई मिनख लुगाई निजर नीं आवै है। गुरुजी बोल्या, 'चेला ! औ पाणी अणुतौ ई ढुळै है। जे कोई पाणी भरै ई कोनीं तो अै अणुता स्टैण्ड क्यू लगा राख्या है?'

चेलौ बोल्यौ, 'गुरुजी ! इण सहर में विरखा बिन बादळा ई हुवै है। लोगा रा धरा रै ऊपर कूड्या रा नैस्टा री पनाळा जोरा सू बहवै है अर लोग सूता घोर खाचै है।'

सूरज निकळ्यौ तो गुरुजी ठौड-ठौड माथै औ लिख्योडौ देख्यौ— 'पाणी बचाऔ देस बचाऔ। गुरुजी बोल्या, 'इण सहर में दो तरै रा पाणी है काई ? अेक तौ औ जिकौ अणुतौ वहवै है अर दूजौ वो जिकै नैं बचा'र राखै है। जिकी कहावत सुणता हा अठै साची होंवती लागै है कै 'वो पाणी मुलतान गयौ।' आ मुलतान जावण आळौ पाणी बचावण जोग बात हुसी।

दस बज्या गुरु चेलौ अैडी ठौड पूगग्या जठै लोग भेळा होय रैया हा। भीड होंवती देख गुरुजी अेक मिनख नैं पूछ्यौ, 'अठै लोगा री भीड किण काम जोग होय रैयी है ?'

वो मिनख बतायौ, 'पाणी बचावण सारू मीटिग हो रैयी है।'

गुरुजी बोल्या, 'थारै अठै दो तरै रा पाणी है काई ?'

वो मिनख बोल्यौ, 'मोडा ! थारी माथौ तो ठिकाणै है कै कोनीं, पाणी भी कदैई दो तरै हुया ? अरे पाणी तो पाणी हुवै है।'

इतरैक में अेक टणकेल मिनख धोळा-धख गाभा पैर्‌योडो ऊचे पाटै माथै चढ'र बोलण ढूकौ, 'भाया ! आपा अेक-अेक बूद पाणी री बचा'र आपा रौ काम काढा हा। आ साव टोळ सरकार आपानैं टेम माथै पाणी नीं देवै है। जिकी सरकार रोटी-पाणी री जुगाड ई नीं कर सकै है उणनैं बदळणी ई चोखौ है।'

गुरुजी बोल्या चेलै सू कै लागै हे औ इण सरकार रै खिलाफ री नेतौ है पण औ झूठ क्यू बोलै है ?

चेलौ कनै खड्यै मिनख नै कैयौ, 'भाया थै कैडा मिनख हो, थै खुद अणुती पाणी ढोळी हो अर कैवौ कै म्हे अेक-अेक बूद पाणी नैं काम में लेवा हा।'

कनै खड्यै मिनख रै आसै-पासै ऊभा सगळा लोग उण चेलै लारै लूबग्या। बै बोल्या, 'इण मोडै रौ माथौ घूम्योडो हे। ठौड-ठौड माथै लिख्योडो है-- पाणी बचाओ देस बचाओ। आ बात म्हारी पारटी आळा लिखी है काई ? सरकार खुद मानै कै पाणी री कमी है जणाई तो जाग्या जाग्या अे नारा मडवाया है। म्हे कोई गैला थोडै ई जकौ पाणी नैं अेळौ गमावा।'

बा माय सू अेक जणौ बोल्यौ, 'मारौ साळे मोडै नैं !'

गुरुजी बीच में पडता हाथ जोड'र बोल्या, 'अरे भाई औ म्हारो चेलौ गूगौ गैलो है, थै भला मिनख अैडी गलती थोडै ई कर सकौ हो। इणनैं माफ करदौ।' अबै कठैई जाय'र गुरु-चेले री लारौ छूट्यौ। गुरुजी बोल्या, 'डफा ! म्हैं थनैं पैला ई रोयौ हो नीं कै औ सहर सूनी है। इण मुजब अबै दूजै सहर में चाला। इण सहर में तो अबै पाणी पीणी ई चोखी कोनीं। इण मुजब झटापट झोळी-डडा उठा अर टुर परौ।'

दूजै सहर में दोनू गुरु चेलो दोपारा बारै बजी पूग्या। सहर रै बिचाळै पूग्या तो सडक माथै बीजळी री मोटी-मोटी हाड्या धोळै दोपारै में दम तोडती निगै आयी। औ रासौ देख'र गुरुजी बोल्या, 'चेला ! औ सहर उण सहर सू भी सवायौ है। बठै तो पाणी ईज ढुळतौ हो। उण टेम तो धणकरा लोग नींदा फटकारता हा इण जोग जागता लोग ई पाणी ढुळतौ देख्यौ हो पण अठै तो दोपारै में बीजळी री हाड्या जगती दीस रैयी है पण आख्या आळा आधा बण्या घूम रैया है जणै आ बीजळी जिकी बळ रैयी है आ आरी कोनीं किणी दूजै री है। हियै कागसी नीं फेरै कै राज म्हारी बीजळी री जिकी खरचौ हुवै बीं रौ टैक्स तो अै लोग ई

भुगते है। पण आ बात इया रै हियै नीं उतरी है।

गुरु चेलौ अेक सराय में जा बैठ्या। जणा रोटी जीमण बैठ्या तो बीजळी गई परी तो चेलौ उठ'र सराय रै मालिक कनै पूग्यौ। उण कनै दसेक आदमी पैला सू ई आयोडा हा। चेलौ पूछ्यौ, 'बीजळी कीकर गई परी ?'

सराय रौ मालिक बोल्यौ, 'बीजळी री कमी है, इण जोग राज अेक घंटै री रोज कटौती करै है, अबै अेक घंटै पछै बीजळी आसी।'

चेलौ बोल्यौ, 'थै सहर रा लोग जबरा हो। अरे अणुती बीजळी बाळौ हो अर कैवौ हो बीजळी री कमी है। थारो हियौ कठै गयौ ?'

आ सुण'र सराय रौ मालिक बोल्यौ, 'मोडा ! हियौ तो थारै कनै नीं लागै है। अरे, थू म्हानैं अैडा वगना समझै है कै म्हे अणुती बीजळी बाळा हा ?'

बठै खड्या मिनखा माय सू अेक बोल्यौ, 'मोडै रै भाग खायोडी लागै।'

चेलौ बोल्यौ, 'भाग तो थारै खायोडी है जिका आख्या आळा ई आधा वण्योडा हो।'

दूजौ बोल्यौ, 'थू म्हानैं आधा कैवै है ?'

इसौ रोळौ होयौ कै गुरुजी भाज'र आया अर बीच बचाव करता बोल्या, 'काई बात है ?'

वै बोल्या, 'थारो चेलै कैवै है कै म्हे अणुती बीजळी बाळा हा। थै ई बतावौ, म्हे अणुती बीजळी बाळा हा काई ?'

गुरुजी बोल्या, 'थै सैणा समझणा मिनख हो। जिको सैणौ समझणौ मिनख हुवै वो अणुती बीजळी किया बाळसी, आगै ई बीजळी री थारै कमी है नीं ?'

सगळा बोल्या, 'गुरु सैणौ है, इण मुजब बळण दौ अबै।'

गुरु अर चेलौ सहर छोड'र बारै आया तो चेलौ बोल्यौ, 'गुरुजी आ काई बात हुई ? थै जीवती माखी गटकग्या।'

गुरुजी बोल्या, 'चेला, लारलै सहर में आपा हा में हा मिलाई जणै ई जाय'र लारी छूट्यौ हो नीं क्यूकै सहर सूनौ हो। इणी मुजब औ सहर भी सूनौ है इण जोग अठै भी हा में हा मिला'र ई पिण्ड छुडायौ है। जिण सहर में सून वापर्योडी हुवै है बठै हा में हा मिलाया ई सरै है। सुण थनैं अेक कहाणी सुणावू—

अेक हस बिरखा री टेम उडतौ उडतौ अैडी ठौड पूगग्यौ जठै अेक गुफा में उल्लू बासौ लियोडौ हो। बिरखा पडी तो वा पडी कै तीन दिना ताई झडी लाग्योडी रैयी। इण मुजब तीन दिना ताई उल्लू अर हस बाता करता करता

पक्का मायला वणग्या। चौथै दिन विरखा थमी अर सूरज भगवान साफ सुथरा निकळ्या तो हस बोल्यौ, 'आज सूरज निकळग्यौ है। सूरज री रोसनी चारूमेर फैल रैयी है।'

उल्लू बोल्यौ, 'सूरज हुवै ई कोनीं पछै अवार रोसनी किया होय सकै है?'

इण भात दोनू जणा में वहस छिडगी तो उल्लू बोल्यौ, 'चाल म्हारै सहर में, वठै दूध री दूध, पाणी री पाणी होय जासी।'

अवै दोनू उल्लुवा रै सहर पूग्या तो उल्लुवा री पचायत वैठी। हस अर उल्लू आप आपरी वात राखी तो सगळा उल्लू बोल्या, 'औ उचुळ पचुळ जीव कठै सू आयग्यौ है ? अरे सूरज हुवै ई कोनीं तो पछै रोसनी कीकर होसी ? इण अपरोगै जीव नैं सगळा मिल'र मारौ।'

हस मन मन मन बोल्यौ, 'औ सहर सूनौ है, इण जोग जीवडा इया री हा में हा मिलाया ई जीवारी है। हस बोल्यौ, 'सूरज हुवै ई कोनीं। म्हैं तो कूडी बोलतौ हो।'

सगळा उल्लू बोल्या, 'आयौ नीं रस्तै। औ जीव तो सैणौ समझणौ लागै है।'

अवै गुरु-चेलौ आगलै सहर में जा पूगै। सहर में वडता ई बाजार में गाडै माथै कीं रसाळ लेवण लागै तो गाडै कनै ऊभौ मिनख बोल्यौ, 'आवा कांई भाव दिया?'

गाडै आळौ बोल्यौ, 'पचीस रुपिया किलौ।'

वो बोल्यौ, 'अठारै रुपिया किलो देवै तो वात करा।'

गाडै आळौ बोल्यौ, 'लो, बीस रुपिया लगाय देसू।'

कस-वध करता करता छेवट वो मिनख उगणीस रुपिया किलौ में आवा तुलाय लिया। गुरुजी आवा लेवणियै नैं पूछ्यौ, 'इया किया थै उगणीस रुपिया किलौ आवा लेय लिया, वो तो पचीस रुपिया किलौ जोग हेला दे है।'

वो मिनख बोल्यौ, 'आवा ई काई, जिकी दुकान पर जावा हा तो ओ ई हाल है। अेक रुपियै आळी चीज रा चार रुपिया बतावै। चारू खूटा लूट ई लूट मची है।'

गुरुजी चेलै नैं कैयौ, 'देख्यौ ! औ सहर सगळा सू ई न्यारौ है। गाडै आळौ या दुकान आळौ ग्राहक नैं लूंटै है अर ग्राहक गाडै आळै या दुकान आळै नैं लूटै है। इण मुजब चोरी करण री अठै तो होड मचोडी है।'

गुरु-चेलौ देख्यौ कै दफ्तरा में बिना लिया-दिया काम हुवै ई कोनीं तो राजनेता बिना लिया कींरौ काम करै ई कोनी तो वोट देवण आळा लोग ई कीं लिया बिना वोट देवै ई कोनीं।

गुरुजी लोगा नैं पूछ्यौ, 'थै चोरया क्यू करौ हो ?'

लोग इत्तौ सुणता ई गाभा बारै आयग्या अर गुरुजी रै लारै पडग्या अर बोल्या, 'म्हे तो साऊकार ई साऊकार हा, चोर मोडा थू अर थारी सात पीढी।' अबै औ गुरुजी माथै उचक उचक'र आवण लाग्या तो चेलौ बोल्यौ, 'गुरुजी भूल में था लोगा नैं चोर कैय दियौ, पण थै तो साऊकार हो, थारी सात पीढी साऊकार, म्हानैं माफ करदौ।

लोग बोल्या, 'चेलौ समझदार है इण वास्तै मोडै नैं जावण दो।'

चेलौ बोल्यौ, 'गुरुजी ! औ सहर भी सूनौ है। इण जोग अबै सजी-सजी में डूगर री भाखर में वड बैठौ नीं तो इण सहरा में भटकता फिरया तो मरया ई सरैलौ। सगळा सहर अठै सूना है।

घूमतौ रुपियौ

काळू गाव में भाणू अर मागू रैवता हा। दोनू आपस में पक्का भायला हा। दोनू ई फिटोळ हुयोडा इनै सू उनै अर उनै सू इनै दिन रात भटका खावता हा। घरआळा कमावण जोग कैवता तो बानैं खारी जहर लागती हो। केई दिना पछै दोनू विचारयौ कै अबै कीं काम करया बिना पार नीं पडै तो भाणू बोल्यौ, 'मागू आपा दिसावर में कमावण सारू चाला।'

मागू बोल्यौ, 'दिसावर में आपा काई करसा ?'

भाणू बोल्यौ, 'बठै चाल'र ई सोचसा। अबार री घडी तो अठै सू चालण री सोच नीं तो अबै आपा रा घरआळा आपा सू काठा धापग्या है। इण मुजब कणै भी आपानैं घर सू निकाळ देवैला। अबै भाईडा आपा आपोआप घर सू निकळ जासा तो भरयो भरम रह जासी।'

भाणू अर मागू दिनूगै-दिनूगै त्यार होय'र रोटी-पाणी लेय'र दिसावर कमावण जोग टुरग्या। दोपारी होयो तो भूख लागी। जणा भाणू बोल्यौ, 'सामी कोई वडौ गाव निगै आवै है, बठै तळाव माथै बैठ'र रोटी जीमसा।'

दोनू तळाव माथै बैठ'र रोटी जीम'र कीं आराम करण जोग सूत्या। भाणू रै सूतै-सूतै रै मन में विचार आयौ कै औ वडौ गाव है। अठै सू कीं रुपिया कमावण री तजबीज लगावणी चाइजै। भाणू बोल्यौ, 'मागू ! थू इण गाव में जाय'र कह कै म्हारौ गयौ हो जिकौ थारै तळाव में ज्यू इ पाणी में उतरयौ कै पाणी में आग लागगी अर वो वळ'र मरग्यो।'

मागू बोल्यौ, 'थू भाग खाय राखी है काई ?'

भाणू बोल्यौ, 'मागू थनैं म्हा माथै भरोसौ है क नीं, थू तौ कहू ज्यू करतौ जा। आपारा दोना रा ई पौ'बारा है।'

मागू बोल्यौ, 'जिण गाव में रैणौ, हाजी हाजी कैणौ। थारै साथै जीणौ थारै साथै मरणौ, बोल काई करणौ है ?'

भाणू बोल्यौ, 'लोग थारी वात माथै हसैला पण थू इण वात री सर्त लगाय लीजै जित्तै रुपिया री भी वै लगावणी चावै।'

मागू गाव रै सै सू वडे सराय रै आगै ऊभ'र बोलण लाग्यौ, 'सुणौ गाव आळा ! म्हारौ गधौ थारै तळाब रै पाणी में उतर्यौ तो पाणी में आग लागगी अर म्हारौ गधौ बळ'र मरग्यौ। म्हारी कीं मदद करौ।'

लोग भेळा तो खासा हुयोडा हा पण सगळा उणरी खिल्ली उडावण लागग्या। जणा वो बोल्यौ, 'जे म्हैं झूठौ हू तो दावै जित्तै रुपिया री सर्त लगायलौ।'

सराय रौ मालिक बोल्यौ, 'म्हैं दस हजार रुपिया री सर्त लगावू हू।'

मागू बोल्यौ, 'थै सगळा लोग म्हारै साथै तळाब माथै चालो।'

सराय रौ मालिक बोल्यौ, 'हा भाया ! थै सगळा म्हारै सागै चालो, थै ई न्याय करौला कै कुण साचौ अर कुण कूडौ ?'

सगळी भीड तळाब माथै पूगगी। मागू बोल्यौ, 'क्यू भाणू, आपारौ गधौ इण पाणी में आग लागण सू बळ'र मर्यौ कै नीं ?'

भाणू बोल्यौ, 'हा।'

लोग अर सराय रौ मालिक एक सागै बोल्या, 'अरे भला आदमी, पाणी में आग कदैई आगै ई लागी ?'

भाणू बोल्यौ, 'सापडतै लागै है। म्हारै गधै रै अेक पासै सिघलै (चूनै) रा दो कट्टा बाध्योडा हा अर दूजै पासै भी सिघलै रा दो कट्टा बाध्योडा हा। गधौ ज्यू ई पाणी में उतर्यौ तो सिघलै माय सू धूवौ उठण लागौ अर देखता देखता गधौ बळ'र पाणी में बहग्यौ। अजू ताई इण तळाब में उणरी हाडक्या मिल जासी। थै कैवौ कै वळै कोनीं तो चार सिघलै रा कट्टा गधै रै बाध'र पाणी में उतारौ अर उणनैं बळतौ आख्या देखलौ।'

सगळा बोल्या, 'सिघलै सू तो पाणी में आग लागसी ई। थू साचौ है भाई।'

सराय रौ मालिक आपरौ माथौ कूट लियौ अर सगळा रै सामी दस हजार रुपिया मागू नैं गिणा दिया। भाणू अर मागू हरखै कोडै गाव सू सहर कानी टुरग्या। भाणू बोल्यौ, 'मागू, पैला मारै वो ईज मीर हुवै। भिडतै ई आपारी जीत हुई है, अवै जीतता ई जास्या।'

इण भात बाता करता करता मागू अर भाणू सहर पूगग्या। दोनू भाईडा सहर रै अेक होटल में रात नैं वासौ लीनौ। उण ईज होटल में भाणू-मागू रै कमरै रै पाखती कमरै में बिरजू नाव रौ सुनार आय ठैर्यौ हो। दिनूगै भाणू अर मागू रा बिरजू सू रामा-स्यामा होया अर दोपारौ होता होता तीनू सागीडा भायला बणग्या। रात पडी जणा तीनू कमरै में तास रमण ढूका तो भाणू बोल्यौ, 'बिरजू काई काम जोग सहर आयौ है ?'

बिरजू बोल्यौ, 'अबै जद थै म्हारा पक्का साथी होयग्या तो पछै थानैं तो साची बताया ई सरसी। म्हारै सोनै री साकळ हाथ लागी है, उणनैं सस्तै दामा में बेचण आयौ हू।'

मागू बोल्यौ, 'सस्तै दामा में देवौ तो म्हानैं ई देय देवौ।'

बिरजू बोल्यौ, 'घरा बैठी गगा आयगी है तो म्हैं अबै भटका खावतौ क्यू फिरू ? म्हा कनै ३० हजार री साकळ है पण मजबूरी में १२ हजार में देवू हू। थानैं लेवणी है तो पैल थारी। म्हैं साकळ रौ अेक टुकडौ थारै सामी काट'र थानैं दू हू, चावौ तो बजार में जाय'र पतियारी करलौ अर साथै ई सोनै रा भाव भी पूछ आवौ। साकळ पछै ले लिया।'

भाणू बोल्यौ, 'दिनूगै म्हनैं देय दिया म्हैं परखा लासू। पण अबार तो म्हारै कनै दस हजार रुपिया ईज है।'

बिरजू बोल्यौ, 'कोई बात कोनीं। अेकर दस हजार दे दिया, बाकी रा पछै करता रैस्या।'

अबै दिनूगै-दिनूगै ई बिरजू, भाणू अर मागू सामी बीं साकळ रौ अेक टुकडौ काट्यौ अर भाणू नें दे दियौ अर साकळ मागू नैं देय'र बोल्यौ, 'खूजै में घालली, आपा कमरै में बेठ्या हा। भाणूजी बेगा आया।'

भाणू बजार में जाय'र साकळ रौ सोनौ परखायौ तो ठा लाग्यौ कै सोनौ तो सोळै आना खरौ है। भाणू पूठौ आय'र बिरजू नैं दस हजार रुपिया देय दिया अर कैवै भाईडा, अबार म्हा कनै होटल रौ किरायौ चुकावण जोग रकम नीं है, थू देवतौ जाइ।'

बिरजू बोल्यौ, 'इसी छोटी-मोटी बाता रौ विचार नीं करणौ। होटल रौ किरायौ हू देंवतौ जासू।'

अबै बिरजू रुपिया लेय'र रेलगाडी चढग्यौ। गाडी में बिरजू रै पाखती में भवरौ आय बैठै है। बाता ई बाता में दोनू भायला बण जावै है। जणा ठेसण माथै गाडी रुकी तो भवरौ चाय लेवण नैं गाडी सू नीचे उतर्‌यौ अर दो चाय लेय'र पाछौ डिब्बै में आय बैठ्यौ। चाय पीया नैं पदरै मिनट ई नीठ हुया हुसी कै बिरजू तो लाबौ पसर'र सोयग्यौ क्यूकै भवरौ उणरी चाय में नसै री गोळ्या घोळ नाखी ही। गाडी आगलै ठेसण माथै थमी तो भवरौ बिरजू रौ सामान लेय'र उतरग्यौ। भवरौ गाव में पूग्यौ तो बा ईज सराय मिली जिणरै मालिक सू भाणू मागू सर्त राख'र दस हजार रुपिया जीत्या हा। भवरौ उणमें कमरौ लेय'र ठैरग्यौ।

सराय री मालिक देख्यौ, आसामी ऊची है। इण जोग मालिक रात नैं भवरै कनै फूटरी फर्री लुगाई भेजी। भवरी लुगाई रै चक्कर में आयग्यौ। सराय रौ मालिक पिस्तौल लेय'र भवरै रै कमरै में आय धमकै। भवरी डरतौ उणरै पगा में पडग्यौ तद वो वोल्यौ, 'वता रुपिया कितरा है। भवरौ विरजू री थैली खोल'र उण मायला दस हजार रुपिया उणनैं दे देवै। सराय री मालिक जणा रुपिया गिण्या तो देख्यौ अै तो हू दिया जिका ई रुपिया है। वा लुगाई बोली, 'लिछमी अेक ठौड नीं टिकै है, आ तो घूमती रैवै है।

अठीनै मागू अर भाणू मोद में डूब्योडा गाव पूग्या अर गाव रै सुनार नैं वा साकळ वेचण नैं जावै। जद सुनार साकळ री परख करी तो वा साव पीतळ री निकळी अर बा कनै जिकी साकळ री टुकडी हो वो ईज खरौ हो। सुनार बोल्यौ, 'इण टुकडे रा दो सौ रुपिया ले जावौ।'

गाव रै सुनार सू आ वात सुण'र दोना री मूडौ धोळौफट पडग्यौ। मागू वोल्यौ, 'ले भाणू, नहाया जित्तौ ई पुन।'

आज घणकरा घूस लेवै है अर इतरी ई देवै है। सगळा आपरै मन नैं राजी करै है। अ जद व कनै पूग्यौ तो अ कैवै ला ५० रुपिया, जणा काम हुसी। अ राजी कै म्हारौ काम हुयग्यौ। व राजी कै हू ५० रुपिया ले लिया। व री काम स सू पड्यौ। व राजी, म्हारौ काम होयग्यौ अर स राजी कै म्हैं पचास रुपिया ले लिया। स री काम द सू पड्यौ तो द, स सू ५० रुपिया ले लिया। स राजी कै म्हारौ काम होयग्यौ अर द राजी कै म्हैं ५० रुपिया ले लिया। द रो काम अ सू पड्यौ। अ वोल्यौ, 'ला ५० रुपिया।' द राजी कै म्हारौ काम होयग्यौ अर अ राजी कै म्हैं पचास रुपिया ले लिया। जणा अ न तो ५० रुपिया दिया अर न लिया। ५० रुपिया घूम घुमा'र पूठ अ कनै आयग्या।

इण मुजव अणजाणै में इण लेण-देण रै मकडजाळ में मिनख अैडौ फस्योडौ है कै न मरया ई सरै न जीया ई सरै। औ खून अैडौ मूडै लाग्योडौ है कै छोड्या ई नीं छूटै। चपडासी सू लेय'र टणकेल हाकम अर मत्री ताई, व्यापारी सू लेय'र मजदूर ताई लेवण-देवण रै धधै में उळझ्योडा है। आ छूत री बीमारी अैडी लागी है कै सगळा ई इण बीमारी नैं अगेज्या बैठ्या है। ज्यू कुत्तौ हाडकी नैं चूसै अर आपरौ खून ई पीवै है। वो आ समझै है कै औ खून हाडी माय सू आवै है। इया ई घूस लेवण आळा समझै कै म्हैं घूस रा रुपिया मुफत में ले लिया पण देवण आळी बात भूल्या बैठ्या है।

घरआळा मारै

गगै री बाप गाव में सगळा घरा री पचायती करतौ हो। इण जोग गाव में मानीजतौ मिनख हो। इण मुजब आपरी आण-बाण अर स्यान सारू आपरै बेटै-बेटिया रा ब्याव अैडी धूमधाम सू करया हा कै लोग वाह-वाह करता नीं थाक्या हा। कदै कोई तिवार हुवतौ तो वो जी खोल'र खरचा करतौ। इण मुजब गाव आळा उणरी घणी बडाई करता हा अर गगै री बापू इण बडाई में इतरौ रमग्यौ हो कै वीनैं ठाह ई नीं लाग्यो कै वो करज में दबतौ जा रैयौ है। रैयी-खैयी कसर उण बगत पूरी हुयगी जद उणरौ सुरगवास होयौ अर गंगै नैं करज लेवणौ पडियौ। गंगै रै कीं समझ में नीं आ रैयी है कै इण करज सू लारौ कीकर छूटसी।

गगै रै बाप नैं मरया दो-तीन दिन होया है। गंगै री सगळो कुटम्ब कबीलो भेळो होय'र फुरवा जीमण जीमै है अर औ अडगौ बारै दिन ताई चालसी। गगौ मन ई मन बोल्यौ, गगला ! थारै कुटम्ब-कबीलै में दो सौ नैडा मिनख-लुगाई है। अै जे इया जीमसी तो थारौ कादौ काढ नाखसी। पण गगौ दात भींच'र बोलो-बोलो बैठ्यौ लोगा नैं टुगर-टुगर देखै है। गंगै नैं उदास देख'र दिलासौ देवण जोग काकीसा आ बैठ्या तो गगौ बोल्यौ, 'काकीसा ! औ इया जीमण काई हो रैयौ है?'

काकीसा बोल्या, 'गगा औ तो हुवती आयी है। इणमें थू कोई नादीदौ काम तो कर नीं रैयौ है।'

गगौ चुपचाप बैठग्यौ। जणा औसर री बाता चाली तो गंगै रा कान खडा होयग्या। गगौ मन ई मन बोल्यौ, 'अवै बोल्या ई सरसी।'

गंगै री मा, काकी, मामी, भूआ सगळी लुगाया बैठी तो गगौ बोल्यौ, 'बापू रै क्रियाकर्म माथै जितरौ भी खरच होयौ है वै सगळा रुपिया ब्याजुणा लिया है। अवै औसर करयौ तो घर रा सगळा गैणा विकता निंगै आवैला।'

भूआ बोली, 'गगा म्हारौ भाई लाखीणौ मिनख हो। थू उणरौ औसर नीं कर'र काई धूड उडासी ?'

मा बोली, 'बेटा आपानै आपारी नाक तो राखणी ई पडसी।'

काकी बोली, 'गगा थू इया साव फीस क्यू काढै है। थारै कनै नीं है तो म्हैं हीरजी कनै सू ब्याजुणा दिरा देसू।'

मामी बोली, 'रुपिया री काई माजणौ, सोनी-चादी है तो वै रु है। गगला ! थू किण माथै अैडो कजूस गयौ है रे, थारौ बाप तो अैडो कोनी

मा बोली, 'बेटा औ जहर तो थनैं पीवणौ ई पडसी।'

गगौ बोल्यौ, 'थै सगळा कैवौ हो तो अबै गैंणा तो बेचिया पडसी।'

गंगै रा गैंणा-गाठा सै विकग्या पण ब्याज फेरू भी लारो नीं छो अर गंगै री जोडायत खेता में काम करै। जणा खेती में काम नीं हुवै तो मजू रात नैं धणी-बहू रळ'र छाट्या बणै जणा जा'र ब्याज चुकती करता अर ब्याव जोग कीं रुपिया जोडता हा। पाखती गाव में सुखजी रै बेटै सू बेटी र हुवण सू पैला सगाई री रीता-पाता हुई तो उणमें भी रुपियौ लागग्यौ। कीं थो लारै रैयौ उणसू बेटी रा हाथ पीळा करण री सोचै हो। पण घर रा सगळ गंगै कनै सू बेटी रै ब्याव में सागोपाग खरच करा नाखै। गंगै रा खेत भी मेलीज जावै। अबै गंगै सू ब्याज भरणौ ई ओखौ होयग्यौ तो रुपिया देवण आ माथै पड ब्याज लगावण ढूका। गंगै रै कीं गतागम में नीं आवै अर अेक रा खेत टापरी सो कीं विकग्यौ। अबै गगौ पाखती सहर में पूग'र धणी लुगाई कर'र पेट पाळण ढूकै।

थोडै दिना ताई तो गगौ मजूरी करी पण पछै मादौ पड्यौ तो इसौ कै मजूरी करण जोग आसग रैयी कोनीं। आ तो वा ईज बात साची हुई मूडाता ई गडा पडग्या। अबै गंगै री बहू काम करण जोग जावै है अर ग बैठ्यौ लुगाई री कमाई खावै। वो उणनैं खारौ जहर लागै पण करै तो का ना रात नैं नींद आवै अर ना दिन में जक पडै। गगौ रात-दिन माचै प सूत्यौ विचारै कै अै घर रा लोग कैडा'क है। म्हनैं घोडै चढा-चढा'र अैडी दी है कै म्हारै बाप नैं रोवू हू। कठै गई वा काकी, मामी अर भूआ। स बिसींज गई ? मावडी तो मरगी अर म्हनैं रोवतौ छोडगी।

गंगै री बहू जिण घर में काम करती ही उणरै पोतै रौ जलम इण मुजब आज वा इतरौ काम कर्यौ कै उणरी कमर ई टूटगी। मालक भूडी लुगाई ही कै उणरी मींगणी ई नीं भींजै। जिया-तिया आज मोडै ता

कर जणा गगै री बहू घरा पूगी तो गगौ बोल्यो, 'आज इतरी मोडी कीकर आई?' बा लारे सू तळतळीजती आई ही सो बोली, 'थानैं सूत्या सूत्या नैं काई जोर आवै हैं मालिक छोडे जणा आवू नीं ? अबै टुकडौ करसू, खा'र सोया कीं नेहचौ आसी।'

गगौ मून धारया माचे पर सूत्यौ जहर रा घूट पीवै हो। वो आधी रात नैं माचौ छोड'र उठ्यौ। जोडायत आखै दिन री थाक्योडी अबै घोडा वेच'र सूती ही। गगौ घर सू निकळ'र होळै होळै कनलै मुसाणा में जा बड्यौ। बठै अेक चिता जग रैयी ही। गगलो वडबडावण ढूकौ, थारे जीवणै में धिक्कार है, लुगाई री कमाई खाय खाय'र थारौ जमीर ई मरग्यो। इण जीणै में अवे सार कोनीं। गगला इण बळती चिता में कूद जा जिकौ थारो अत हुय जासी अर घरआळा सारू बाळण री झझट ई मिट जासी। ज्यू गगौ चिता में कूदण लाग्यौ तो मौत आय उणरौ हाथ पकड्यौ अर बोली, 'म्हैं मोत हू। अबार थारै मरण री टेम नीं आयी है। इण जोग थू मर नीं सकै।'

गगौ गळगळौ होय'र बोल्यौ, 'लोग म्हनैं जीवण कोनीं दे अर थू म्हनैं मरण कोनीं दे ! बता म्हैं करू तो काई करू ?'

मौत बोली, 'लोग थनैं जीवण क्यू कोनीं देवै ?'

गगौ आपरै घर री कहाणी सू लेय'र बहू री मजूरी ताई री सगळी बात माड'र बताई अर बोल्यौ, 'अै सगळा म्हनैं मारण आळा घरआळा ई है।'

मौत कैयी, 'म्हैं थारै जोग अेक काम तो कर सकू हू। बाकी म्हारै कीं वख में नीं है।'

गगौ बोल्यौ, 'वो काई काम है ?'

मौत बोली, 'मिनख जद बीमार पड'र माचौ झाल लेवै तो म्हैं थनैं उणरै पगाणै ऊभी लाधू तो समझी औ मिनख मरै कोनीं चाहै कितरौ ई मादौ क्यू नीं पडै अर जणा म्हैं तनै उण मांदे मिनख रै सिराणै ऊभी दीखू तो थू समझ जाइजै कै औ मिनख अवै बचै कोनी। बींनै मरया ई सरसी।'

गगौ बोल्यौ, 'इतरौ थू कर देसी तो म्हैं कमाय खासू। थारौ राम भलौ करै।'

गगौ घरै पूग'र आपरै घरा कीं चूरणा रा भाडिया राख'र वैद बण वैठ्यौ। उणरी जोडायत बोली, 'औ काई कुडकौ रोप्यौ हो। थानैं काई ठाह है वैदगिरी रौ ?'

वो बोल्यौ, 'देखती जा भागवान !'

वो बोल्यौ, 'देखती जा भागवान !'

थोडे टेम में ई गगी वैद अैडी चमक्यौ कै उणरै घरा लोगा री लेण लागण ढूकगी। गगी जिण मांदै मिनख नैं देख'र कैय देंवतौ कै औ अबै बचै कोनीं तो बींनैं मरया ई सरतौ अर जिकौ मिनख अैडी लागतौ कै औ अेक-दो घडी रौ ईज पण गगाजी वैद कह देता कै औ मरै कोनीं तो वो मरतौ कोनीं। अबै तो डाक्टर भी गगाजी रै घर रा चक्कर काटण ढूकग्या अर पूछण लाग्या कै गगाजी आ विद्या तो म्हानैं भी बतावौ। जिकै नैं थै कैयदौ कै औ मरसी तो म्हे लाख जतन करला पण बींनैं मरणौ ई पडै अर जिकै नैं म्हे कैवा कै औ बच नीं सकै पण थै कहौ औ मर नीं सकै तो वो मरै कोनीं। पण गगाजी आपरी आ विद्या किणनैं ई नीं बतावै।

गंगै सू अबै गगाजी वैद होयग्या हा। चोखळै में चावा। मोकळा रुपिया कमा लिया हा। घर-खेत सगळा पाछा छुडा लिया हा। जोडायत नैं गैंणा-गाभा सू जडाजध कर नाखी ही। गगजी अबै बूढा होयग्या तो जोडायत अर टावरा सू बोल्या, 'अबै आपा कनै मोकळौ धन है इण जोग गाव में चाल'र रैस्या।'

सगळा राजी हा। अबै गगाजी गाव में सुख सू दिनडा काटण लागग्या। अेक दिन मौत आय'र बोली, 'गगा ! अबै थारी भी टेम आयग्यी है। काल रात नैं चार बज्या लेवण नैं आसू, त्यार रैइजै।'

गगी बोल्यौ, 'डावडी ! इया ना कर, अबै तो म्हारै कनै रुपिया टक्का होया है। आनैं भोगण दे, म्हारे पोता रा ब्याव करण दै। कीं तो सुख रौ वायरौ लेवण दे।'

मौत बोली, 'गगा जणा टेम आ जावै है तो पछै बीं जीव नैं इण ससार सू जावणौ ई पडे। बींनैं कोई नीं रोक सकै है। म्हैं टेमोटेम था कनै आवू हू, थू थारा गूदडा भेळा कर'र त्यार बैठ्यौ मिली !'

दिनूंगै पूणी चार बज्या गगजी नीचै माथे अर ऊंचा टागडा कर शीर्पासन करण ढूक्या। चार बज्या मौत आई तो गगाजी नैं देख्या कै सिर तणा खड्या हे। मौत बोली, 'गगला ! थू तो म्हामें कैडीक करी है। थू म्हारा सगळा अैसान भूलग्यौ। अबै म्हैं जमराज नैं जाय'र काई जवाब देसू। म्हन ठीक चार बज्या थारी आत्मा लेय'र जमराज नैं पाच बज्या ताई हाजर करणी है अर म्हैं अबै थारै सिराणे कीकर खडी होऊ अर कीकर थारी आत्मा नैं कब्जै करू ? म्हनैं ई काई पटकौ पड्यौ जकौ थनैं साचौ भेद बता दियौ। म्हैं म्हारै बाप नैं बैठी रोवू हू, थू मजा करै है।'

पूणी पाच बजी तो गंगै री जोडायत गंगै खातर चाय लेय'र आई। आगै गंगै नैं अैडी दसा में देख्यौ कै माथौ नीचै अर टागडा ऊपर तो वीं हाकौ कर्‌यौ। सगळा घरआळा भेळा होयग्या अर गगाजी रा टागडा पकड'र नीचा करण लाग्या तो गगौ बोल्यौ, 'म्हारा टागडा नीचा ना करो, म्हैं मर जासू।'

सगळा बोल्या, 'इया रौ तो माथौ भुवाळी खायग्यौ दीसै, इणी जोग अैंगी-बैंगी बाता करै है। सगळा घरआळा जुट'र गगाजी रा टागडा पकड'र हाथ सू नीचै कर नाख्या। टागडा नीचा होवता ई गगाजी रै सिराणै मौत आ खडी हुई अर गगाजी रौ हसलौ उडग्यौ। मारग बैंवती बगत मौत बोली, 'थारै घरआळा रौ भलौ हुवै कै म्हैं जमराज नैं अबै पाच बज्या थनैं हाजर कर देसू।'

गगौ बोल्यौ, 'म्हैं कदैई कोनीं मरतौ, अै घरआळा ई म्हनैं मार्‌यौ है।'

फदंडपचं

भोजासर गाव रा लोग सीधा-साधा अर भोळा-ढाळा। हियै सागीडी हेत लियोडा हा। पण हर ठौड माथै अेक काचर री बीज तो लाध ई जावै। भोजासर गाव में भी कानजी नाम री मिनख काचर रै बीज सू कम नीं हो। कानजी कनै मोकळौ रुपियौ अर खेत हा। गाव में उणरी गुवाडी नामी ही। कानजी नैं घाई-घूती करण री आदत ही। किणी रौ सुधरयोडौ काम बिगाड नीं देंवतौ तद ताई उणरै जी में नेहचौ नीं बापरतौ। किणनैं लडावू-किणनैं भिडावू, किणरी सगाई-सगपण तोडावू जैडी बाता में आखौ दिन माथौ खपावतौ रैंवतौ। जठै ताई किणी दो मिनखा नैं आपस में भिडा नीं देंवतौ, सगाई-सगपण तोडाय नीं देंवतौ जितरै उणरी हाजमौ ठीक नीं होंवतौ। कानजी नैं पचायत री भी घणी चाव हो पण उणरी आ भूडी आदता रै कारण लोग पचायत चुणाव में उणनैं नेडौ ई नीं लागण दियौ। पण वो आपरै रुपिया रै ताण फदडपच बण बैठ्यौ हो।

आज गाव री पचायत बैठी है कै गाव रौ भलौ कीकर कर्यौ जावै। इण पचा में कानजी भी बिना बुलाया आ बैठ्या हा। पचायत पूरी हुई तो लोग आप आपरै घरा गया तो मोडजी सरपच नैं पूछ्यौ, 'औ कानियौ अठै बिना बुलाया ई कीकर आयौ ?'

सरपच बोल्यौ, 'औ फदडपच है। इण पुटिचरै नैं बीच में आय'र राफड घाल्या बिना रगत नीं आवै।'

मोडजी बोल्या, 'औ पुटिचरौ काई हुवे है ?'

सरपच समझायौ, 'जिकौ घाई-घूती करतौ फिरै, लोगा नैं लडावतौ फिरै, सुधर्यै कामा नैं बिगाडतौ फिरै, उणनैं पुटिचरौ कैया करै।'

आज सीतू गाव री पचायत बुलाई है क्यूकै काळू री बकरी सीतू रै खेत में बड'र चिन्हीक चरली ही। पचा रै साथै कानजी भी आय बैठ्या। पचा फैसलौ दियौ कै काळू सीतू नैं बीस रुपिया दड रा देवै। सगळा पचायत रै फैसलै री वाह-वाह करी, इणमें कानजी भी भेळा हा। दूजै दिन कानजी काळू रै घरा जाय'र

बोल्या, 'काळू भाई ! थारै साथै न्याय कोनीं होयो क्यूंकै बकरी खेत बडता ई थू काढ लायी ही इण जोग था माथै घणै सू घणा पाच रुपिया दड रा हुवणा चाईजता।'

काळू बोल्यौ, 'म्हारै साथै कुण है, सगळा सीतू रै कानी रळ्योडा है।'

कानजी बोल्या, 'म्हैं हू नीं डफा !'

काळू बोल्यौ, 'थारी तो बोट ई कोनीं, म्हारै साथै होया काई कारी लागै?'

कानो बोल्यौ, 'काळू ! जठै फदडपच खडो हुवै वठै सगळा वीं रै सागै हुवै है। थू पचायत बुला, थारै कानी फैसलो नीं कराऊ तो म्हनैं फोट कैय दीजै।'

कानजी रै भरवा सू काळू पचायत बुलाई तो पचा फैसलो दियो कै बीस रुपिया घणा है क्यूंकै बकरी तो खेत में बडता ई निकाळ ली ही। इण मुजब दड रा सात रुपिया काळू सीतू नैं देवै। कानजी काळू कनै जाय'र बोल्यौ, 'देख्यौ फदडपच री कमाल, म्हा पर थू जी जमा'र राख्या कर।'

आज कानजी नैं नींद सोरी आई। तीन दिना पछै कानजी रै पेट में फेरू खळबळी चालण ढूकी अर सीतू कनै जाय'र बोल्यौ, 'सीत भाई, थारै साथै न्याय नीं हुयौ रे ! बकरी सगळो खेत चरगी अर थनै बीस रुपिया री ठौड सात रुपिया दिराया है ?'

सीतू बोल्यौ, 'म्हैं काई करू पच काळू कानी होयग्या।'

कानजी बोल्या, 'पचा री काई माजणो, वै तो जको फैसलो पैला दियो हो पाछो वो ईज फैसलो लागू करणो पडसी। थू पचायत बुलायलै। म्हैं हू नीं थारै सागै। जिणरै सागै फदडपच हुवै वीं रा काम हुवै ई है।'

अबै सीतू पाछी पचायत बुलायी तो पचा फैसलो दियो सात रुपिया री ठोड काळू दस रुपिया देसी अर पचायत उठगी तो काळू अर सीतू में तू-तू मैं-मैं होवण लागी। माथा फूटणै री नौबत आयगी तो सरपच दोना नैं आपरै घरा लेयग्यौ अर बोल्यौ, 'थारै आ बार-बार पचायत बुलावण सू म्हा पचा में फूट पडण ढूकी है। थानैं घडी-घडी कुण भडकावै है ?'

काळू होळै-सै गुणकौ नाख्यो, 'कानजी !'

आ सुण'र सीतू रा कान खडया होयग्या। वो बोल्यौ, 'म्हनैं भी कानो ई सीळी चढातो हो।'

काळू बोल्यौ, 'सत्यानास जावै रै फदडपच थारी, थू म्हारा मोडका फोडा नाखतो।'

सरपच बोल्यौ, 'देखौ इण पुटिचरै सू थै दूर ई रैया नीं तो औ अैडा जुलम करावैला कै आखौ गाव आगळ्या ऊची कर कर'र कूकैली।'

अेक दिन सहर सू गाव में हाकम अर अेलकार ग्राम पचायत नैं गाव में सुधार जोग रुपिया देवण नैं आया। हाकम सरपच नें बुलावण जोग अेलकार नैं भेज्यौ। अेलकार सरपच रै घरा जाय'र पूछ्यौ, 'सरपचजी कठै है ?'

घर माय सू कैयौ, 'वे तो खेत गयोडा है, परसू ताई आसी।'

अेलकार गाव आळा नैं कैयौ, 'भाया ! सरपच नैं बुलावौ, सहर सू हाकम आया है।'

गाव आळा बोल्या, 'सरपच री खेत गाव सू घणी आतरौ हे इण मुजब आप कैवौ तो फदडपच नैं हाकमा कनै भेज देवा ?'

अेलकार हाकम नैं जाय'र कैयो, 'सरपच तो खेत गयोडौ है, वो परसू ताई आसी। खेत गाव सू खासौ आतरै है। गावआळा री कैवणी हे कै आप फरमावौ तो फदडपच नैं भेज देवा। आपरौ हुकम हुवै तो फदडपच नैं बुला लाऊ।'

हाकम बोल्यौ, 'पैली कागद देख ! भोड्या, सरकार काई औ फदडपच रौ नूवौ पद थरप दियौ है काई ? पच अर सरपच तो सुण्या हा पण औ फदडपच नाव तो आज ई सुण्यौ है।'

अेलकार कागदा नैं उथळ-पुथळ'र देख नाख्या पण औ नूवौ पद कठेई निगै नीं आयो। जणा हाकम बोल्या, 'लागै है औ नूवौ पद इण गाव में ई है। इण मुजब इणसू तो मिलणौ ई पडसी। थू जा, फदडपच नैं ई बुलाय ला।'

अेलकार कानजी रे घरा जाय'र पूछ्यौ, 'काई सा, फदडपच आप ईज हो काई ?'

कानजी बोल्या, 'हा म्हैं ईज हू। बोलौ ! थारौ काई काम अटकग्यौ ?'

अेलकार बोल्यो, 'फदडपचजी थारौ जवाब कोनीं जणा मिलण आळे नैं भिडतै ई उणरौ काम अटकण री बात पूछ्या ठाह लाग्यो कै थै गाव रा सगळा मिनखा रौ घणीई ध्यान राखै हो। थानैं म्हारा हाकम ग्राम पचायत में मिलण सारू बुलाया है।'

इतरौ सुणता ई कानजी री बाछा खिलगी। मन में विचार्‌यौ, कानिया ! आज ताई तो थू धिगाणै ई पचायत में जा बैठतौ हो पण आज हाकम खुद चला'र बुला रैया है। कानजी मोदीलौ अबै मूछा पर वट देवती-देवती ग्राम पचायत रै भवन में बडता ई खखारौ कर्‌यौ जिणसू कै हाकम जाण जावै कोई मोटौ मिनख आयौ है।

हाकम बोल्या, 'थै ई फदडपच हो काई ?'

कानजी बोल्या, 'हा सा, म्हैं ईज हू इण गाव री फदडपच।'

अबै डाकीडी बोलण लाग्यौ तो बोलतौ ईज गयौ। हाकम नैं अेक आखर ई नीं बोलण दियौ। हाकमा नैं अर अेलकार नैं बाता करतौ-करतौ आपरै घरा लेयग्यौ। घरा दोना री सागोपाग खातरदारी करी। बा खातर माचा ढळा दिया अर जीमण जूठण रौ सराजाम कर'र रात नैं फदडपचजी हाकमा सू बाता करण ढूका। अेलकार रौ माचौ हाकम सू आतरै ढाळ्यौ हो। हाकम मन ई मन विचार्यौ कै औ आदमी तो घणौई सातरौ है। राज नैं अैडी पद बणावण सारू जरूर लिखसा।

अबै कानजी चिलम भर'र पीवता-पीवता बोल्या, 'बुरौ नीं मानौ तो अेक बात केवू।'

हाकम रा कान खडा हुयौ कै औ अबै काई कैसी ? कानजी बोल्या, 'म्हैं जोगमाई री सौगन खाई है कै म्हैं बात किणनैं ई नीं करू।'

सुण'र हाकम रै पेट में खळबळी चालण ढूकी कै कानिया, अबै तो मोगम खोल्या ई जीव नैं नेहचौ हुसी। हाकम बोल्या, 'कीं बतावौला कै इया ई इलम-टिला देसौ ?'

कानियौ बोल्यौ, 'थै पैला जोगमाई री सौगन खावौ कै किणी नैं ई आ बात नीं बतावौला।'

हाकम फटाक देणी सौगन खायली। तद कानजी बोल्या, 'थारौ अेलकार थारै जोग दारू री बोतला लावण जोग दो सौ रुपिया माग्या है अर म्हनैं थानैं कैवण जोग मना कर्यौ है। म्हनैं जोगमाई री सौगन खवाई है। जे थै इण बाबत अेलकार नैं पूछसौ तो थारी सौगन जासी अर म्हारी पत जासी।'

आ बात सुण'र हाकम दाता री घट्टी पीसण ढूकौ पण काई करै, ववना सू बध्योडौ हो इण मुजब अेलकार नैं वो कीं नीं कैय सक्यौ। हाकम री अेलकार माथै खार सामी दीखण लाग्यौ तो कानजी रै जीव में ठारी पडी अर नींद भी सोरी आई।

दिनूगै-दिनूगै कानजी अर अेलकार दिसा करणै रोही कानी निकळ्या तो कानजी अेलकार नैं कैयौ, 'रात नैं थारै हाकम सू घणी हथाई हुई।

अेलकार बोल्यौ, 'वो तो म्हैं भी देखतौ हो।'

कानजी बोल्या, 'थनैं बाता तो सगळी बताय देवू पण काई करू थारा हाकम म्हनैं मना कर राख्यौ है। खाली मना करतौ तो भी बताय देवतौ पण वै तो

म्हनैं इण सारू जोगमाई री सौगन दिराय दी कै आ बात म्हैं किणनैं ई नीं कहू।'

अबै अेलकार रै पेट में खळबळी चालण ढूकी तो अेलकार घडी-घडी पूछण लाग्यौ अर लीलड्या गावण ढूकी तो कानजी बोल्या, 'पैला थू सौगन खा कै म्हैं जिकी बात कहू बा हाकम नैं पाछी नीं कैवैला।'

अेलकार भी फटाक सौगन खाई तो कानजी कैयौ, 'थारौ हाकम गाव रा काम करावण जोग रुपिया देवण सटै हजार रुपिया माग्या है अर कैयौ कै म्हारै अेलकार नैं इण बात री भणकारी ई नीं पडणी चाइजै।'

अेलकार बोल्यौ, 'आ बात है। हाकम अेकलौ ई जीमण जीमणौ चावै है। म्हनै लूखौ ई राखै। इण हाकम नैं तो म्हैं देख लेसू।'

दोपारी हुवता-हुवता हाकम अर अेलकार में अैडी झडप हुई कै गाव रा लोग देखता ई रैयग्या। हाकम अर अेलकार न्यारा-न्यारा सहर कानी व्हीर हुयग्या। दूजै दिन जद सरपच गाव में आयौ तो उणनैं सहर सू हाकम अर अेलकार आवण री जाणकारी गाव आळा दीवी।

सरपच बोल्यौ, 'म्हैं हाकमा रै दफ्तर रा चक्कर काटतौ-काटतौ म्हारै पगा री पगरख्या घिस नाखी है जणा जाय'र हाकम री आख खुली ही अर गाव री भलाई जोग रुपिया देवण री बात करी ही। थै बानैं काल दोपारै ई भगा नाख्या। गाव रा बोल्या, 'म्हानैं काई ठाह, बै तो फदडपच रै घरा ठैर्‌या हा अर उणनैं लोगा नैं लडाया बिना जक नीं पडै।

सरपच पूछ्यौ, 'हाकम अर अेलकार तो कोनीं लड्या ?'

गाव रा बोल्या, 'बै दोनू तो चोखा-भला लडीज्या है। लडता लडता ई सहर गया है।'

सरपच बोल्यौ, 'थारौ सत्यानास जावै रे फदडपच। गाव रौ नुकसाण करा नाख्यौ। थू पुटिचरा कद मरसी अर कद गाव रौ भलौ हुसी ?'

पाणी पी लियौ

रुघजी, आसजी, अगरुजी अर मानजी ऊनाळै री रात में धोरै माथै बैठ्या-बैठ्या बाता करै हा। रुघजी बोल्या, 'आजकाल भ्रष्टाचारी चारूमेर राफड लीला घाल राखी है अर आज रा साचा मिनख वींनैं टुगर-टुगर देख रैया है।'

आसजी बोल्या, 'देस रा मोट्यारा रै काई बाळौ बळग्यौ ? वै भी रुळियारा रै साथै रैय रैय'र रुळियार होयग्या है।'

अगरुजी बोल्या, 'आज साच कुवै में बैठो-बैठो रोवै है अर कूड चारूमेर चोडै-धाडै भाजती फिरै है।'

रुघजी बोल्या, मानजी ! था जिसा साचा मिनख ई अवै बैठ्या-बैठ्या इण लुचा री हा में हा मिलावण ढूका हो तो देस री लुटिया डूबणी ई है।'

मानजी चोला-बोला बैठा रैया तो रुघलो बोल्यौ, 'कीं मोगम तो खोलो। था जिसा सोनै सरीखा खरा मिनख भी साव खोटा साथै रळ जासौ तो पछै इण देस री काई हाल होसी ? इतरी राफड लीला चौडे-धाडै होय रैयी है अर थै कीं बोलो ई कोनीं, कीं तो बोलौ बेटी रा बापा !'

मानजी बोल्या, 'भाईडा ! थै नीं बोलावता तो आछौ रैंवतौ पण थै मानौ ई कोनीं तो पछै सुणौ, 'म्हैं तो आ साथै रळ'र पाणी पी लियौ हूं।'

रुघजी बोल्या, 'थै कीं मोगम ई खोलौ भी, तो भूल-भूल्लैया में घाल'र खोलौ। औ पाणी पीवण रौ काई बबाळ है ?'

मानजी बोल्या, 'पाणी पीवण रौ अैडो कुडको है कै इणमें पजिया पछै पाछौ निकळणौ घणौ अबखौ है। था अवै पूछ ही लियौ है तो लो सुणावू—

जागळ गाव में अेक फूटे-टूटे मिदर में अेक साधु आय'र उणनैं साफ-सुथरो कर पूजा करण ढूको पण वठै इण ऊचे धोरै माथै मिदर में गाव रौ कोई भी मिनख नीं बावडै। इण जोग महाराज भूखा मरण ढूकै है। अेक रात पाच फिटोळ छोरा मिदर में आय विराज्या तो साधु महाराज रै भी कीं खावण-पीवण

रौ जुगाड होयी। साधु उण छोरा नैं कैयौ कै थै म्हारौ अेक काम कर नाखौ, म्हैं थानैं सौ रुपिया देसू।'

वै बोल्या, 'काई काम है ?'

महाराज बोल्या, 'थै गाव में औ रोळौ कर नाखौ कै साधु महाराज नैं आधी रात नैं भगवान दरसण देवै है।'

अबै फिटोळ छोरा आखै गाव में रोळौ कर नाख्यौ कै साधु महाराज नैं भगवान आधी रात रा दरसण देवै है। पूरै गाव रा लोग मिदर आगै आय ऊभा अर साधु महाराज नैं पूछ्यौ, 'म्हैं लोग ओ काई सुणा हा कै थानैं आधी रात नैं भगवान दरसण देवै हे ?'

साधु महाराज बोल्या, 'साची ई सुणी हो। जिका नैं दरसण करणौ है तो बै काल आधी रात नैं सौ रुपिया भगवान री भेंट, अेक नारेळ, अेक लाल रग री चूनडी अर प्रसाद लेंवता आवै।'

दूजै दिन रात रा आखौ गाव उमड पड्यौ तो साधु बाबौ बोल्यौ, 'आधा नैं आज अर आधा नैं काल दरसण करा सू। इण मुजब आधा लोग आप आपरै घरा पधारौ।'

साधु बाबै रै इण अेलाण रै उपरात घणकरा गावठी बठै ई डेरा दियोडा रैया। वै उणा नैं पूछणौ चावै हा कै भगवान रा दरसण हुया कै नीं ?'

जद आधी रात हुई तो साधु महाराज मिदर रो आडो ढक लियौ। अेक कूणै में अेक मिनख नैं बैठा'र उणरै माथै ऊपर अेक लाल कपडौ नाख'र माथौ अर मूडौ ढक दियौ अर अेक गिलास में थोडो-सो चरणामृत उण मिनख नैं पावता कैयौ, 'जे थू असली बाप रौ नीं है तो थनैं चक्कर आवैलो अर थू भगवान रा दरसण नीं कर सकैलो अर जे थू असली बाप रौ हुवैलौ तो ना थनै चक्कर आवै अर थू भगवान रा दरसण कर लेवैलौ। चरणामृत पीवता ई उणनैं चक्कर रौ झटकौ लागै। साधु महाराज कपडौ दूर करता बोलै, 'देख सामी भगवान दरसण देवै है नीं।'

वो नीं कैवै तो असली बाप रौ बेटौ कोनीं इण मुजब उणनैं केवणौ पडै कै हा भगवान दरसण दे दिया।'

जणा वो बाहर आयौ तो बोल्यौ, 'काई बात है, भगवान रा दरसण करया पछै अबै तो जमारौ ई सुधरग्यौ।'

इण मुजब सगळौ गाव चरणामृत रो पाणी पी-पी'र भगवान रा दरसण

कर लिया। साधु महाराज मालोमाल हुयग्या। अेक रात साधु महाराज पईसा टक्का लेय'र रफू-चक्कर हुयग्या। साधु महाराज तो अबै मिदर में है कोनीं तो ओमलौ अर भोमलौ मिदर रै पगाथिया माथै बैठ्या-बैठ्या वाता करै है तो भोमलौ पूछ्यौ, 'क्यू ओमला ! थू डफा भगवान रा दरसण कर्‌या के ?'

ओमलौ बोल्यौ, 'पैला थू बता।'

तद भोमली अटकती अटकती बोल्यौ, 'कोनीं कर्‌या भाई।'

ओमलौ बोल्यौ, 'म्हैं भी कोनीं कर्‌या।'

'तो पछै थू कूड क्यू बोल्यौ ?' भोमलो पूछ्यौ।

ओमलौ बोल्यौ, 'औ ईज तो म्हैं थनैं पूछू तो काई पडूत्तर होसी ? डफा, वो मोडौ आपानैं पाणी पाय'र गूगा कर नाख्या हा अर सगळा ई पाणी पी लियौ। पाणी पीया पछै आपा किया कैवता कै म्हानैं चक्कर आयौ। जे यू कैवा तो आपा असल बाप री औलाद कोनीं। इण जोग कूडौ ई कैवणौ पड्यौ कै भगवान रा दरसण होयग्या। वेटौ मोडो आपा सगळा नैं पाणी पायग्यौ।'

सुगनी चादण गाव में दिसावर सू घणकरा रुपिया कमा'र पाछौ आयौ तो गाव आळा उणरै आवण माथै घणौ ई उछव मनायौ। सुगनी सगळै मिनखा रौ इतरौ हेत देख'र बाग-बाग होयग्यौ अर पूछ्यौ, 'भाया ! म्हैं था सगळै गाव आळा जोग काई काम करू कै थानैं सगळा नैं लाभ पूगै।'

गावआळा बोल्या, 'गाव में अेक कूवौ खुदवाय दो तो गाव सगळै रौ भलौ हुय जासी।'

सुगनी धरम-करम सू जुड्योडौ मिनख हो। इण मुजब इण धरम रै काम खातर राजी होयग्यौ। गाव रै बारै कूवौ खोदण री जाग्या चाक'र कूवौ खुदण ढूकौ। जणा कूवौ खुद'र त्यार होयग्यौ तो सुगनी रात नैं कूवै माथै बैठ'र मत्र पढण लाग्यौ तो दिन ऊगता ऊगता कूवै माय सू हेलौ होयौ, 'इण आत्मा रौ हेलौ सुणौ ! जिकौ भी इण कूवै रौ मीठौ पाणी पीवैला, वो पागल होय जासी।'

औ हेलौ सुण'र सुगनजी रै नीचली जमीन सिरकगी। वै गाव कानी भाग्या। इण भाजा-नासी में गेलै विचाळै मोटौ भाटौ पड्यौ हो, उणसू ठोकर खाई अर दूजै भाटै माथै सिर तणा पड्या तो चेतौ भूलग्या। तीन-चार घटा पछै लोगा देख्यौ, सुगनजी चेतौ भूल्या पड्या है तो वानैं उठा'र अस्पताळ में भरती करा दिया। सुगनजी तीन दिना ताई चेतौ भूल्योडा ई पड्या रैया। इण पछै सुगनजी नैं जणा चेतौ होयौ तो वा भिडतै ई औ पूछ्यौ कै कूवै रै पाणी रौ काई होयौ ?'

सगळा बोल्या, 'सुगनजी था धरम रौ जिकौ काम कर्‌यौ है वो भुलावण जोग नीं है। था जिकौ कूवौ खुदवायौ है उणरौ पाणी तो सागोपाग मीठो है। म्हे सगळा पी-पी'र थानैं आसीस देवा हा।'

इतरौ सुणता ई सुगजी आपरौ माथौ कूट लियौ। बै विचारण लाग्या के अबे अै तो सगळा पागल होयग्या है। इणरौ पाप सुगनिया डफा थनैं लागसी इण मुजब आनैं कीं समझा जिकौ अै रस्तै माथै आवे।'

सुगजी गाव आळा नैं समझा-समझा'र धापग्यौ पण जुलमीडा बारी अेक जणौ ई नीं सुणी। सुगनजी बोल्या, 'भाया ! थे अै ऊधा काम कर'र थारी ई हाण करो हो। थे औ पागलपणौ कद छोडसो, अरे थै उण कूवै रौ पाणी पी लियौ जिकै नैं पीया मिनख पागल हुय जावै है।'

लोगवाग सुगनजी री खिल्या उडाता उडाता मैणा-मोसा देवण ढूका। औ कैडी'क बाता करै है कै कूवै रौ मीठो पाणी पीया लोग पागल हुय जावै हे ? लागे है सुगनजी आपरौ चेतौ दिसावर छोड आया है। अरे थै इया ई बाता करी तो अेक दिन पागल थानैं होवणौ पडसी।' पण सुगनजी आपरै धरम पर सेंठा जम्योडा हा। इण मुजब गाव रा लोगा नैं समझावण जोग जतन करणौ नीं छोड्यौ।

सुगनजी री बाता सुणता-सुणता गाव रा सगळा मिनख आखता होयग्या। इण जोग मिनख भेळा होय'र मत्रणा करी कै अबे पाणी माथै उपरिया कर बहवण ढूकौ। इणी ढाळै सुगनजी बाता करता रैया तो गाव रौ बेडौ गरक हुय जासी। इण मुजब अबै सुगनजी नैं पागलखानै में भरती कराया ही सरसी। जणा सुगनजी पागलखानै जावण जोग मना कर्‌यौ अर कैयौ अरे पागलखानै में तो थानैं होवणौ चाइजै अर थै म्हनैं ले जावौ हो ? उलटौ चोर कोतटवाळ नैं डांटै ?'

अेक गाव आळौ बोल्यौ, 'अै इया कोनीं मानै, इण जोग आनैं टागा-टोळी कर'र ले जावणा पडसी।' उणरै कैवता ई सुगनजी नैं गावआळा टागा-टोळी कर'र पागलखानै लेयग्या।

गावआळा बोल्या, 'डाक्टर सा'ब ! अै पागल होयग्या है। इण मुजब आरौ इलाज करौ।'

सुगनजी बोल्या, 'नीं डाक्टर सा'ब ! अै लोग उण मीठै कूवै रौ पाणी पी लियौ है, इण जोग अै सगळा पागल होयग्या है। थै म्हारे साथै रळ'र इया रौ इलाज करौ।'

डाक्टर सा'ब बोल्या, 'सुगनजी जे थै साच कैवो हो अर उण कूवै रौ

पाणी पीया ई पागल हुवै है तो म्हैं भी उण कूवै री पाणी पीवू हू। इण मुजब म्हैं भी पागल ई हुयौ। पछै कम्पोडर सू बोल्या, 'सुगनजी रै बिजळी रा झटका लगावण जोग औजार सभाळ।'

इतरौ सुणता ई सुगनजी रै पेट में खळबळी चालण ढूक्यौ। मन ई मन विचार्‌यौ, अबै थू धरम-करम पर रैयौ तो लोग सुरगा पूगाय नाखसी। इण डाक्टर रै भी उण कूवै रौ पाणी पीयोडो है। सुगनजी री आत्मा बोली, डफा ! अबै थू औ पाणी नीं पीयौ तो गोपिन्दा खावतौ ई जासी। इण मुजब औ पाणी पीयलै। सुगनजी बोल्या, 'बीजळी रा झटका देवण सू पैला म्हनैं थै उण कूवै रौ पाणी पावौ।'

कनै ऊभा मिनख बोल्या, 'अबै आयी नीं रस्तै पर।'

अबै सुगनजी नैं भी उण कूवै रौ पाणी पायौ। पाणी पीवता ई सुगनजी ऍंगी-बेंगी बाता करण ढूका तो लोग बोल्या, 'सुगनजी ठीक होयग्या है। औ तो घणाई समझदार है। साच कैयी है साभर री झील में जिकौ भी पड्यौ वो लूण होयग्यौ।'

मानजी बोल्या, 'क्यू भाया ! आपा पाणी पीयोडा हा कै नीं ?'

सगळा बोल्या, 'पाणी तो पीया ई सरे। नीं पीया सुगनजी आळी होवै।'

मानजी कैयी, 'जणै किणनैं ई कैवा कै थै औ ऊधा काम मत करौ तो वै औडा पडूत्तर देवै कै मत पूछौ ? लोगा नैं कैवा हा कै औ फिटोळ फैल क्यू करौ? अर क्यू टाबरा नैं फैल टीवी माथै देखण दो हो तो वै आत्मा री हेलौ तो सुणै कोनीं अर मन-बुद्धि रौ सहारौ लेय'र औडा-औडा पडूत्तर देवै है कै मत पूछौ। थै जूनै जमानै रा मिनख हो अर आज दुनिया कितरी आगै बधगी है, थै कूवै री मेंढकी कूवै में ई हो।'

वै बोल्या, 'औ मिनख ओपरौ लागै है इणनैं अठै सू बारै फैंक नाखौ नीं तो औ आपा रै मजा में किरकिर रळा देसी। इण जोग इणनैं अठै सू टिल्ला दे-देय भगा नाखौ। बारी बाता सुणी तो म्हैं बोल्यौ, 'म्हैं कूडौ हू अर थै साचा, क्यूकै म्हैं पाणी पी लियो हो।' वै बोल्या, 'आयग्यौ नीं रस्तै सर। डफा ! थू ई मजा ले अर म्हानैं ई लेवण दे।'

मानजी बोल्या, 'क्यू पाणी पीणौ चोखौ है नीं'

सगळा बोल्या, 'हा भाई हा। जिण गाव में रैणौ, हाजी हाजी कैणौ। आत्मा रा हेला सुण्या पार नीं पडै है।

महा चोर

कानौ बीकानेर सू माउट आबू जावण सारू रेलगाडी में चढ्यौ तो डब्बौ लोगा सू ठसाठस भरयोडौ। तिल राखण नैं ई ठौड नीं। कानौ डब्बै में बडणै जोग आफळ करण लाग्यौ तो अेक भलमाणस बोल्यौ, 'अरे ! इणनैं भी आवण दो।' पण लोग तो देखै है नीं कै आ रेलगाडी म्हारै बाप-दादा री है। म्हैं इणमें चढण नैं टिकट लियौ है, कोई दूजौ कीकर म्हारी ठौड माथै बैठ सकै है। भलमाणस बोल्या, *'भाया! आ गाडी अठै ई रह जासी। थै ठौड सारू जिकौ मोह देखावौ हो* नीं तो उतरसौ जणै पाछौ इण सामी मुड'र ई कोनीं जोवौ। इण वास्तै बापडै नैं मायनै तो आवण दो।' जणा कठैई जाय'र कानौ माय बड्यौ अर आखी रात गाडी में ऊभौ-ऊभौ जोधपुर पूग्यौ। जोधपुर में कानौ डब्बै माय सू उतर'र आरक्षण आळै डब्बै में जा चढ्यौ।

लूणी जक्शन आवता-आवता टी टी बाबू डब्बौ चैक करता कानै कनै आया तो बोल्या, 'थारौ रिजर्वेसन टिकट थोडौ ई है। मारवाड जक्शन आवता ई इण डब्बै सू उतर जाइजै।'

कानौ बोल्यौ, 'बाबूजी म्हनैं माउट आबू जावणौ है। इण मुजब आबू रोड ताई अेक बैठण आळी सीट री आरक्षण कर दो तो म्हैं मारवाड जक्शन माथै सुख सू रोटी जीम लेसू। आखी रात आख्या में काढी है इण जोग नींद भी ले लेसू।'

टी टी बाबू बोल्यौ, 'जगह नहीं है।'

कानौ कैयौ, 'कोई बात कोनीं सा, उतर जासू। पण आपसू अेक अरदास करू हू। आबू रोड डोढ बज्या आसी। अेक बैठण री सीट देय दिरावौ।'

टी टी बाबू कैयौ, 'एक बार बोल दिया ना जगह नहीं है, फिर क्यों दिमाग खा रहा है।' टी टी बाबू लूणी जक्शन माथै उतरग्यौ।

टी टी बाबूजी री ड्यूटी जोधपुर सू मारवाड जक्शन ताईज ही। टी टी बाबू पाली में कानै आळै डब्बै में आय बड्या अर कानै नैं पूछ्यौ, 'थारै रिजर्वेशन भोत जरूरी है काई ?'

'जरूरी है जणै ईज तो थानैं अरदास कर रैयौ हू।' कानौ बोल्यौ।

'ला तो दस रुपिया दे, थारै रसीद काट दू।' टी टी बाबू बोल्यौ।

कानी टी टी बाबू कानी आख्या फाड-फाड'र देखण लागग्यौ। कानै नैं इण ढाळै आख्या फाडतौ देख'र टी टी बाबू मन ई मन जाणग्यौ कै आ तिला में तेल कोनीं। वै बोल्या, 'रसीद कोनीं कटावणी काई ?'

कानौ हकडावतौ सो बोल्यौ, 'नहीं-नहीं काटणी है सा।' अर दस रुपिया रौ नोट काढ'र टी टी बाबू कानी कर दिया। टी टी बाबू दो रुपिया री रसीद काट'र कानै नैं पकडाय दी। कानौ उण रसीद नैं पलटा दे देय'र ६ ापग्यौ पण वा दो रुपिया सू ज्यादा नीं हुई। रसीद दो रुपिया री अर दस रौ नोट झडका लियौ। कानौ मन ई मन बोल्यौ, 'जुलमिडौ आठ रुपिया म्हासू मार लिया। पण काई करा? सगळी ठौडा माथै रोळ-गदोळ ई रोळ-गदोळ है। जठीनै देखा बठीनै ई लूट खसोट ई लूट खसोट है। कानिया अबै आठ रुपिया नैं भूल अर सुख सू बैठ।

पाली सू चाल्योडी रेलगाडी अेक घंटै में मारवाड जक्शन पूगगी। अेक घंटै रौ टेम काटण जोग डब्बै में बैठ्या लोग अेक दूजै सू बाता करण ढूकै। वा में टी टी बाबूजी भी रळ जावै है। इत्तै में टमाटर अर काकडी वेचण आळौ आ धमकै अर सेठा कानी देखतौ बोल्यौ, 'टमाटर काकडी देवू ?'

सेठ बोल्या, 'किया दी भाई काकडी-टमाटर ?'

वो बोल्यौ, 'पाच रुपिया री प्लेट।'

सेठ पूछ्यौ, 'अेक प्लेट में कित्ती काकडी अर कित्ता टमाटर हुसी ?'

वो बोल्यौ, 'अेक टमाटर अर अेक काकडी।'

सेठ कैयौ, 'भला आदमी, थारै पल्लै राम है कै कोनीं ? अेक काकडी अर अेक टमाटर रा पाच रुपिया लेवता थनै लाज कोनीं आवै ?'

पाखती में बैठ्यौ सुनार जिकै री गाडी में बडता ई सेठा सू झडप होयगी ही। वो बोल्यौ, 'सेठ ! थू तो राम पल्लै राखै है ? चावळ-दाळ में थू भाटा रळा रळा'र बेच नाखै है। अरे, औ पाच रुपिया में टमाटर, काकडी, नींबू अर मसाला रळा'र देवै है पण थू तो काकरा रा रुपिया लेवै है।'

सेठ बोल्यौ, 'म्हैं थनै चोखी तरै जाणू हू। घणौ सचवादौ मत बण। थू सोनै में निरो ई पीतळ रळा-रळा'र बेचै जको ठाह ई कोनीं। थू तो सोनौ देवता ई मारै अर लेवता ई मारै है। आज बडो महात्मा बण'र धरम-करम री बाता करै है।'

पाखती में वैठ्यौ ठेकेदार बोल्यौ, 'थै दोनू जणा गाडी हकी जद सू मायौ खावण ढूका हो। म्हैं थानैं दोना नैं जाणू हू। थै दोनू लोगा नैं दोना हाथा सू लूटौ हो अर अठै सचवादा वणौ हो।'

अबकै सेठ अर सुनार दोनू अेक सागै बोल्या, 'थू किसी दूध सू न्हायोडी है लाडी ! थू तो सीमेंट री ठौड राख लगा-लगा'र लखपति वणग्यौ है। सौ ऊदरा खायनै मिनकी हज करण नैं चाली !'

टी टी वावू कीं सुसताया पछै बोलण ढूका, 'देखौ आज चारूमेर भ्रष्टाचार ई भ्रष्टाचार वाकौ फाड्या दीसै है। गोटाळा माथै गोटाळा हुवै है। इणमें मोटा-मोट टणकैल मिनख ई सामी आवै है पण उणा री कीं कोनीं विगडै।'

सेठ बोल्यौ, 'माया ! अवै तो डूबी माथै तीन वास है।'

सुनार वोल्यौ, 'लूट ई लूट मचियोडी है।'

ठेकैदार बोल्यौ, 'इण देस रा काई हाल हुसी, भगवान ई जाणै ?'

टी टी वावू बोल्यौ, 'भगवान काई जाणै, आपा जाणा कोनी काई इण मुजव भ्रष्टाचार टागडा पसारसी तो आपा जीवाला किया ?'

'थै भी साच कहौ टी टी वावूजी, अवार थै म्हारै कनै सू दस रुपिया लेय'र दो रुपिया री रसीद काटी हो। औ भ्रष्टाचार नीं तो और काई है ?'

टी टी बोल्यौ, 'अै तो सगळा ई लेवै है।'

कानौ वोल्यौ, 'साची कैवो हो आप, सगळा में म्हैं ई भेळौ हो। म्हैं लेवू जणै ईज तो थानैं दिया है। कूवै में हुसी जणै ईज तो खेळी में आसी। चोर चोर मासिया भाई।'

टी टी वावू बोल्यौ, 'आ हुई नीं वात। अवै ठीक है आगै बोल !'

कानौ कैयौ, 'म्हैं जद आवू रोड सू माउट आवू जावण आळी वस में चढसू जणै वा गाडी पूगण आळी टेम थवौथव भरयोडी मिलसी। म्हैं कडक्टर नैं पाच रुपिया री नोट टिकट सू न्यारो देसू जणै वो म्हनैं सटाक सू मायनै घाल लेसी।'

टी टी वावू वोल्यौ, 'सगळा लेवै-देवै है। अवै टी टी वावू नैं कीं वैम होयग्यौ कै ओ कुण है ?'

वो पूछ्यौ, 'आपरौ परिचय ?'

कानौ बोल्यौ, 'म्हैं तो अेक प्राइमरी स्कूल रौ इकलोतौ मास्टर हू। म्हैं जद वदळी करावण नैं जावू तो म्हनैं कीं न कीं देवणौ ई पडै है।'

सगळा बोल्या, 'हा भाई वै तो देवणा ई पडसी।'

कानी बोल्यौ, 'म्हें मरी छुटिया लेवण जावू तो भी म्हनैं देवणी ई पडै।'

सगळा बोल्या, 'बिना लिया-दिया तो कठैई पत्तौ ई नीं हालै।'

कानौ बोल्यौ, 'म्हारी आ तणखा इण लेण-देण में ई लाग जावै तो पछै म्हें टाबरा री पेट कीकर पाळू ?' सगळा कानै रै मूडै कानी देखण लागग्या।

जिण देस री मास्टर बिगडग्यौ तो वो सगळौ देस ई बिगडग्यौ समझौ। क्यूंकै इण देस रौ टणकेल सू टणकेल हाकम किणी मास्टर रौ चेलौ ईज हुवै। इण देस रौ सैसू बडौ ब्योपारी भी किणी मास्टर रौ चेलौ ईज है। इण देस रौ बडै सू बडौ वैज्ञानिक भी मास्टर रौ चेलौ है। इण देस रौ प्रधानमत्री अर राष्ट्रपति मास्टर रा चेला है। कबीर दासजी कैयौ है–

गुरु गोबिन्द दोनू खड्या, का कै लागू पाय ।
बलिहारी गुरु आप की, गोबिन्द दियौ बताय ।।

आज इण देस में सै सू हैटी निजरा सू मास्टर नैं समाज देखै। मास्टर भी आखर आदमी है। उणनैं समाज में रैवणौ है तो दूजा करै ज्यू उणनैं ई करणौ पडसी। अबार था कह दियौ लिया-दिया बिना कोई काम कोनीं हुवै तो पछै औ मास्टर किया जीवसी। आ हियै कोई कागसी फेरै ई कोनीं। इणी जोग अबै देस में डफळी बोल रैयी है। चेती रैवता गुरु री साख नीं बैठाई तो सगळा गोपिन्दा खावता ई जासी।

कानौ बोल्यौ, 'अेक छोरौ आपरै बाप री जेब माय सू दस रुपिया री चोरी करली। जणा छोरौ घरा आयौ तो बापूजी पूछ्यौ– थू म्हारी जेब माय सू दस रुपिया चोरी क्यू करिया ? वो छोरौ बोल्यौ– म्हनैं पैंसिल लावणी ही। बापूजी बोल्या– काल तो म्हें थनैं दफ्तर सू पैंसिल लाय'र दी ही ? छोरौ बोल्यौ– थै भी तो दफ्तर सू चोरी कर'र ई लाया हा। इण मुजब जे म्हें चोरी करली तो काई परळै होयगी ? सुण'र बापूजी रौ मूडौ मगसौ पडग्यौ।

कानौ बोल्यौ, 'टाबर रै इण दुनिया में दो ई हीरा हुवै है। पैलौ उणरौ बाप। आपरै पापा सू बडौ किणनैं ई नीं मानै अर दूजौ उणरौ गुरु। गुरुजी सू बडौ किणनैं ई नीं मानै। वो जिया बाप अर गुरु करै विया ई करण ढूकै है।'

अबै कानौ टी टी कानी देख'र बोल्यौ, 'था जिसा बाप चोर है, म्हा जिसा गुरु चोर है। इण मुजब अबै आवण आळा टाबर महा चोर हुसी।'

टी टी बाबू खूजै माय सू दस रुपिया री नोट काढ'र कानै कानी करता बोल्या, 'लो थारा आठ रुपिया, पाछा लेलो।'

कानौ बोल्यौ, 'औ तो अबै थारै कनै ई राखौ। थै औ आठ-आठ रुपिया काई ठा कित्ता जणा कनै सू लिया हो, पाछा किण किणनैं देंवता फिरसौ ?'

कानियौ मास्टर

मोडै गाव में भोमलौ अर गोमलौ पक्का भायला हा। दूजै कानी ओमलौ अर सोमलौ पक्का भायला हा। इण जोग दो धडा बणग्या हा। अेक भोमलै-गोमलै रौ अर दूजौ ओमलै-सोमलै रौ। दोना धडा विचाळै खींचाताणी चालती ही। गाव विचाळै ऊचौ धोरो हो। ऊनाळै में गाव रा मिनख रोटी जीम'र धोरै माथै हथाई करण जोग पूग जावता हा। बाता ई बाता में गोमलौ-भोमलौ, ओमलै-सोमलै नैं हेठौ दिखावण री तजवीज लगावता हा। कणैई गोमलै-भोमलै रै हाथ बात लाग जावती तो कणैई ओमलै-सोमलै रै बात हाथ लाग जावती। जिकै रै बात हाथ लाग जावती उणनैं रात नैं नींद सोरी आवती अर जिकै रै बात हाथ नीं लागती तो आखी रात आख्या में काढणी पडती।

अेक रात भोमलौ, गोमलै नैं न्यारौ ले जाय'र उणरै कान में कीं गुणकौ नाख्यौ तो ओमलै-सोमलै रै अैडी बळत लागी कै बुझाया इ नीं बुझै। दूजै दिन फेरू गोमलौ, भोमलै नैं न्यारौ ले जाय'र कान में कीं कैयौ अर दोनू हस्या। ओमलौ अर सोमलौ आ रा फैल देख'र बोल्या, 'अै आपरै बारै में ईज कानाफूसी करै है।

अेक दिन ओमलै-सोमलै सहन करी, दो दिन सहन करी पण तीजै दिन तो दोनू धडा में तू-तू म्हैं-म्हैं हुयगी अर दोनू धडा आपस में भिड पड्या। किणी रा हाथ टूट्या तो किणी री टागड्या। किणी रा भोडका फूट्या तो किणी री कडतू टूटी। दोनू पासी खून-खराबौ हुया पछै ठड वापरी। दोनू धडा अेकदम ठडा पडग्या।

इण आडै टेम में मास्टरजी विचाळै पड्या। मास्टरजी पढ्या-लिख्या अर गुण्योडा हा। वै सैणा-समझणा हा, इणीं सारू आखौ गाव वारी बात मानतौ हो। इण मुजब गाव आळा वानैं बीच में पडण सारू कैयौ।

मास्टरजी दोनू धडा नैं बुला'र पूछ्यौ, 'क्यू भाया ! म्हैं जकौ फैसलौ देसू वीं नैं दोनू धडा मानसौ।'

दोनू धडा रा मौजीज मिनख बोल्या, 'हा मानसा।'

मास्टरजी बोल्या, 'ओमजी ! थे बतावौ कै आ लडाई किण कारण हुई?'

ओमलौ बोल्यौ, 'म्हैं अर सोमलौ जद सामलै धोरै माथै बैठ्या हा तो भोमलौ-गोमलौ म्हारै खिलाफ कानाफूसी करै हा।'

मास्टरजी बोल्या, 'भोमला-गोमला' बताऔ थै लोग रोज-रोज काई कानाफूसी करता हा ?'

मास्टरजी भोमलै कानी देख्यौ तो वो बोल्यौ, 'कोनीं बतावू ?'

तद मास्टरजी गोमलै कानी देख्यौ तो वो भी बोल्यौ कै कोनीं बतावू।

मास्टरजी बोल्या, 'औ कान में फुसफुसाणौ अैडो रोग है कै इणरो कोई इलाज कोनीं। इण कानाफूसी सू बडा-बडा काम होयग्या है। बीकानेर सहर इण कानाफूसी रै लाण ईज थरपीज्यो है। म्हैं थानैं कानाफूसी री तीन काण्या सुणावू हू। थै हियै उतारया जणै ईज इण बात रौ निवेडो हुसी--

"जोधपुर रा राजा राव जोधौजी जद आपरो दरबार लगा'र बैठ्या हा तो उणा री पाटवी राजकुवर बीकोजी अर जोधैजी रा छोटा भाई काधळजी भी राज दरबार में बैठ्या हा। काकौ-भतीजो आपस में कानाफूसी करता हा तो जोधोजी बोल्या, 'आज काकौ भतीज काई कानाफूसी करौ हो ? कोई दूजौ राज थरपण जोग

कानाफूसी करौ हो काई ?'

काधळजी बोल्या, 'आ काइ बडी बात है। थै कैवौ तो राज ई थरप लेसा। हुकम करौ।'

जोधौजी बोल्या, 'तो आप अठै सूं फौज अर रुपिया-टक्का लेवता जावौ।'

तद बीकौजी अर काधळजी फौज लेय'र बीकानेर कानी व्हीर होया। बीकौजी जद बीकानेर री थरपणा करी तो पूगळ में भाट्या सू बा नैं भिडणौ पड्यौ। पछै बीकानेर सहर बस्यौ।"

मास्टरजी बोल्या, 'देख्यौ कानाफूसी रौ कमाल। राज रा राज थरपीज जावै है इणसू। भोमला-गोमला थै भी कानाफूसी कर'र कोई नूंवै राज री थरपणा री जुगत बिठावता हा काई ?'

दोनू बोल्या, 'अैडी बात नीं है।'

मास्टरजी बोल्या, 'दूजी बात सुणौ ! भोमला-गोमला अर ओमला-सोमला, चेतौ राख्या भलौ ।

"जेठ-आसाढ री महीनी हो। राजा अर उमराव सिकार जोग निकळ्या। राजा, उमरावा सू न्यारो पडग्यौ। राजा गेलौ भूलग्यौ अर वाळू धोरा धरती में इनै सू उनै भाजतौ फिरै पण रस्तौ नीं लाधै। कनलौ पाणी नीवडग्यौ तो अबै राजा री जीभ बारै आयगी अर कठ खींचीजण लाग्या। राजा देख्यो मरसू पण उणनैं सजोग सू मूळौ अेवाडियौ अळघौ भेडा चरावतौ दीस्यौ। राजा उणनैं झालो दियौ तो वो भाज'र राजा कनै आयौ। राजा पाणी जोग सेनी करी। अेवाडियौ झटाक लोटडी सू राजा नैं पाणी पायौ अर गाव री रस्तौ बतायौ। राजा बोल्यौ, 'म्हैं अठै री राजा हू। थू म्हारी जान बचाई है। काल राज दरबार में पूग'र थारी मू-माग्यौ इनाम ले जाई।

आज अेवाडियौ दिनूंगै-दिनूगै ई फूल-फगरियौ बण'र हाथा डाग लेय'र काधै लोटडी नाख'र धर कूचा, धर मजला करतौ करतौ सहर रै माय आय बड्यौ। राजा री महल पूछतौ-पूछतौ जा पूग्यौ राजमहल। गढ री पोळ आगै पूग्यौ तो उणनैं माय जावण सू राजा रा चाकर रोकण लाग्या।

वो बोल्यौ, 'म्हैं मूळौ अेवाडियौ हू। म्हैं राजा नैं पाणी पायौ हो तो चठै ऊभा मिनख हस्या अर बोल्या, 'थू तो राजा नैं काई ठा पाणी पायौ कै नीं पायौ पण राजा थनैं आज भू पाय नाखसी। अठै सू जावै कै थनैं दो-चार हाथ बतावा?'

इत्तै में सजोग सू राजा आपरै दीवान साथै आवता दीस्या तो मूळौ भाज'र राजा रै पगा पड्यौ। राजा उणनैं उठा'र आपरै साथै ले जावतौ दीस्यौ तो जिका मूळै री खिल्ली उडावता हा, वा रा मूडा मगसा पडग्या। राजा मूळै नैं कैयौ, 'बोल माग जिकौ थू मागसी वो ई देसू।'

मूळौ बोल्यौ, 'देणौ ई है तो म्हनैं आ छूट देवौ कै म्हैं थानैं पान अरोगण सारू जद चाऊ तद आपरै कनै आय'र कान में पूछ सकू। आपरै पान अरोगणौ होवै तो हा कैय दिया, नीं अरोगणौ होवै तो ना कैय दिया।'

राजा कैयौ, 'डफा ! औ काई माग्यौ है। फेर सोचले ?'

मूळौ बोल्यौ, 'सोच लियौ अन्नदाता ! देवणौ है तो ओ ईज देवौ नीं तो म्हैं तो औ चाल्यौ।'

राजा बोल्यौ, 'जा थनैं आ छूट दी।'

मूळौ फूल ज्यू हळकौ होयोडौ मोदीजौ लावा-लावा डग भरतौ सटाक गाव पूग्यौ तो मूळै री जोडायत आख्या फाड्या उणनैं उडीकै ही। बा मन ई मन में लाडू पावती ही कै राजा सोनी-चादी अर रुपिया देसी। म्हैं गैणा बणवासू, तीर्थां

जासू। जद मूळजी घर में बड्या तो जोडायत पूछ्यौ, 'काई लाया हो ?'

मूळौ बोल्यौ, 'म्हैं तो राजा रै कान में जणा घावू जणा पूछण री हक लायो हू।'

आ बात सुण'र मूळै री लुगाई आपरौ माथौ कूट लियौ अर बोली, 'करम फूट्या ! औ ई मागणी हो तो पछै गयौ ई क्यू हो ? करम फूट्या अै कोयलडी, घग्घू सू घरवास।'

मूळौ बोल्यौ, 'भागवान ! थू देखती जा, इण कान में फुसफुसाया काइ रा काई गुल खिलसी, थनैं काई ठाह ?'

राजा दरबार लगावै तो मूळौ राजा रै कान में आय'र पूछै, 'पान अरोगसी सा !' अबै राजा सहर में जावै तो मूळौ कान में पूछै, राजा बाग में जावै तो कान में पूछै। यू करता करता लोगा अबै मूळै रौ नाव ई कानियौ मास्टर धार दियौ। लोगा री निजरा में औ कानियौ मास्टर राजा रै इत्तौ नेडौ है कै राजा आपरी निजू बाता इणसू ई करै है। इण जोग सहर रा मानीजता मिनख ई अबै समझग्या कै आपा रौ काम राजा सू जणा ही हुसी जणा कानियै मास्टर नैं आपा आपारौ बणा लेस्या। कानिया मास्टर सू जुगत बैठावण जोग लोग उणरै घरा सभाळ ले ले'र पूगण ढूका तो कानिया मास्टर रै पौ'बारा पचीस हा। आज कानिया मास्टर रै हवेली झुकोडी है। बहवड गैंणा सू लदोडी है। मूळजी आपरी जोडायत सू बोल्या, 'देख्यौ कान में फुसफुसाणै री कमाल ! कान में फुसफुसाया लिछमी दौडी-दौडी आवै है।''

भोमला-गोमला थै भी मूळजी दाई लिछमी बुलावण जोग तो कान में नीं फुसफुसा रैया हा ?' मास्टरजी पूछ्यौ।

गोमलौ बोल्यौ, 'नीं सा।'

थोडी देर सुस्ताया पछै मास्टरजी बोल्या, 'लो अबै तीजोडी कहाणी ई सुणलौ।'

"धारा नगरी री राजा भोज घणौ प्रतापी हो। वो आपरी रया रा हाल-चाल जाणण सारू भेस बदळ'र रात नैं सहर में टोह लेंवतौ हो कै कुण काई करै है ? अेक रात राजा झूपडी कनै सू निकळ्यौ तो माय सू बड-बडावण री आवाज आय रैयी ही। राजा झूपडी रै नेडौ पूग्या कान लगा'र सुणण लाग्यौ। माय सू आवाज अरै माफ सुणीजण लागी– इण देस रै मत्री अर राजा री सत्यानाम जावै। बडेरा री धन धर्मनै री कमाइ नैं जुलमी मत्री खायग्यौ। न्याव तो अरै रैयौ ई कोनी।'

राजा भोज उण झूपडी में वड'र वोल्यौ, 'पाणी मिलसी काई ?'

झूपडी मायलौ मिनख बोल्यौ, 'सामी मटकी में पड्यौ है, पी लेवौ। कुण हो थै ?'

राजा वोल्यौ, 'वटावू हू।'

मिनख वोल्यौ, 'वारै सू आयौ है तो घडी दो घडी अठै सुसता ले। रोटी जीमणी है तो सामी दो रोट्या पडी है, जीमलै।'

पाणी पीया पछै राजा वोल्यौ, 'अबार थै वडवडाय रैया हा कै इण देस रौ मत्री अर राजा रौ सत्यानास जावै।'

वो वोल्यौ, 'अठै रौ राजा तो घणोई चोखौ है पण उणरौ मत्री लुचौ-लफगौ है। म्हारै बाप रा राख्योडा सोनै-चादी रा गैंणा अर रुपिया हजम करग्यौ। मत्री री अैडी पूच है कै वो म्हनै राजा कनै फटकण ई कोनीं देवै।'

राजा वोल्यौ, 'म्हैं ईज इण देस रौ राजा हू। थारा गैंणा-रुपिया वो मत्री काई नीं देवै उणरी छिया ई देसी। थू काल उण वगत आइजै जद म्हैं दरवार लगा'र वैठू। थू म्हारै कान में फुस-फुसा'र बुवौ जाई पछै देख थारा गैंणा-रुपिया सिझ्या पडण सू पैला-पैला पूगता हुवै कै नीं ? वो मिनख दरवार में जा'र राजा रै कान में फुस-फुसा'र जावै तो वो मत्री देखै। मत्री री पगा री जमीन खिसक गई। दरबार सू छूटता ई सै सू पैला उण औ काम कर्यौ कै उण मिनख नैं गैंणा-रुपिया पूगता कर्या अर उणसू माफी माग'र लीलड्या गाई कै राजा सामी म्हारी पत राखजै।''

मास्टरजी बोल्या, 'देख्यौ कान में फुस-फुसावण री कमाल ! विना कान रै इण ससार में कीं नीं है। थै सगळा म्हारी वाता कान ढेर'र जणा ई सुणी हो जणा थारै कान है। अरे कान री महिमा अपार है।

अभिमन्यु आपरी मा रै पेट में चक्रव्यूह में वडण री बात कान सू ई सुणी ही। बादसाह अर पैगम्बर सुलेमान कीडी री बात भी काना सुण लेता हा।'

मास्टरजी आगै बोल्या, 'भोमला-गोमला ! डफा थारै कान में फुस-फुसावण री बाता कीं हियै उतरी कै नीं ?'

दोनू बोल्या, 'उतरगी'

मास्टरजी बोल्या, 'अबै भोमजी-गोमजी भोगम खोलौ, उण दिन कान में काई फुसफुसावता हा ?'

दोनू वोल्या, 'मास्टरजी म्हारा घर क्यू उजाडो हो। थे कैवो तो थारे कान में कह दा !'

मास्टरजी वोल्या, 'डफा ! थे कान में कैयी जणा इज तो इतरा भोडका फूट्या है अर अवे म्हारे कान में कैय'र म्हारी ई भोडकौ फोडासी काई ?'

भोमली वोल्यौ, 'गोमला अवै मोगम खोलणी ई पडसी।'

अवै दोनू सागै वोल्या, 'म्हारी दोना री लुगाया घरा माय म्हासू लुगाया आळा काम करावै है। आ ईज वात म्हैं अेक-दूजे रै कान में फुसफुसावै हा।'

आ सुण'र ओमली अर सोमली माथौ पकड'र वैठग्या। ओमली वोल्यौ, 'थारो सत्यानास जावै रे, हकनाक लोगा रा हाथ-गोडा तुडवाय दिया !'

आज मिनिस्टरा रै, अफसरा रै, सेठ-साऊकारा रै, नेतावा रै, जठीनै निजर पसारसी वठेई कानिया मास्टर निगै आसी। आज रौ मिनख इण कानिया मास्टरा री जठै ताई जुगाड नीं वैठाय लेवै वित्तै ताई काम हुवणौ घणौ अवखौ है। किणी भी पार्टी रौ राज हुवौ, कानिया मास्टरा री भीड लागी ही रैवै है। अै लोग इत्ता चतर हुवै है कै वै कान में कैवण जोग कठै न कठैई जुगाड वैठा ही लेवै।

रै सू बडौ जीव

फूलासर गाव रै धोरै माथै भगवान राम रै मिदर रा पुजारीजी महाराज सुखदेवजी हा। महाराज मिदर रै माय ई पूजा करता अर आपरी कोटडी में जाय विराजता। इग्यारै महीना ताई मून राखता अर अेक महीनौ बै मिदर रै बारै बण्योडी चौथडी माथै विराजता अर प्रवचन देंवता हा। उण मुजब आसै-पासै रै गाव रा लोग बारा प्रवचन सुणण सारू आय दूकता हा। महाराज प्रवचन देय'र पूठा कोटडी माय जाय विराजता हा अर अेक वरस पछै ईज पाछा दिखता हा।

रामलाल महाराज रो खास भगत हो। इण जोग आखरी महीनौ पूरो हुवणै री वो बाट उडीकतौ रैवतौ। आज महाराज बारै पधारया तो रामूडी उणरी घणी खेरवाळी करै है। महाराज बारै आया तो सागीडी भीड ही। महाराज बोल्या, 'आज थै किण बात माथै बोलण जोग कही हो ?'

रामूडी बोल्यौ, 'मिनख जमारै सू मोटौ कीं नीं है, इण जोग मिनख माथै ईज कीं फुरमावौ ।'

महाराज बोल्या, 'साच कैयो, मिनख जमारौ मिलणौ घणौ दोरौ। औ भाग आळा नैं मिलै है। अरे मिनखाजूणी खातर तो देवता ई तरसै है क्यूकै भगवान मिनख नैं ईज आ छूट दीनी है कै वो दावै ज्यू कर सके है। वो चोखौ भी कर सकै अर माडौ भी कर सकै है। आ छूट देवता नैं ई कोनीं मिल्योडी। इण जोग मिनख जमारौ अेळौ नीं गमावणौ। कबीरदासजी कैयौ है–

राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय ।
जो सुख साधु सग में, जो बैकुट न होय ।।

महाराज बोल्या, 'इण मिनख जमारै नैं आपा कोड्या रै भाव वेचा हा। इण जोग थारै हियै बात जणा ई उतरसी जणा कोई उपाय करसा। अेक बार तेरापथ रा आचार्य भिक्षु आपरै चेला नैं गाव में भेज्या कै धोवण ले आवौ। चेला गाव में गया। उणा अेक घर सू धोवण माग्यौ पण घर-धणियाणी साव नटगी। बा बोली– थै चोखा-चोखा भोजन ले जावौ तो म्हें थानैं दू जिणसू कै आगोतर में म्हनैं ई चोखा भोजन मिलसी। जे म्हें थानैं धोवण देसू तो आगोतर में म्हनैं ई धोवण

ईज मिलसी।' चेला घणोई कह्यौ पण वा टस सू मस नीं हुई। चेला सगळा जतन कर हार्‌या जणा वै आपरै गुरुजी नैं जाय'र रामकथा सुणाई। तद आचार्य भिक्षु चेला नैं साथै लेय'र उण लुगाई रै घरा पूग्या अर कह्यौ, 'माई ! थारी गाय काई खावै है ?'

वा बोली, 'घास खावै है।'

'अर थनैं इणरै बदळै में काई मिलै ?' आचार्य भिक्षु पूछ्यौ।

वा बोली, 'दूध मिलै है।'

आचार्य भिक्षु उणनैं समझाई, 'इणी भात थू म्हानैं धोवण देसी तो आगोतर में थनै भी चोखा-चोखा भोजन मिलसी।'

वा बात नैं समझगी अर फटाक सू धोवण दे दियौ। उण जोग कह्या-सुण्या लोग मानै कोनीं। उपाय कर्‌या ई काम सरै है।

महाराज बोल्या, 'म्हैं थासू अेक सवाल पूछू हू, थै साच-साच बताया।'

सगळा बोल्या, 'हुकम फरमावौ।'

महाराज पूछ्यौ, 'इण ससार में भगवान इतरा जीव बणाया है जिका में आदमी भी है, सेर भी है, हाथी भी है, कुत्तो भी है। छोटी सू छोटी कीडी ताई है। आ सगळा जीवा माय सु सिरै कुण है ? जिकै री बरोबरी दूजौ जीव नीं कर सकै।

अेक बोल्यौ, 'आ माय सगळा सू बडो जीव तो आदमी है।'

महाराज बोल्या, 'क्यू भाया ! सगळा री हामी है नीं ?'

सगळा बोल्या, 'हा महाराज !'

महाराज बोल्या, 'साची बात है। आदमी दूजा सगळा जीवा नैं बख में करलै। इण मुजब आदमी ई से सू सिरै है। अबै आ बतावौ के भगवान इण ससार में सुख सू रैवण सारू जिकौ फायदौ पुगायौ है ज्यूकै पाणी, डूगर, नदिया, पखा, रेलगाडी, हवाई जहाज आद, इणरी सै सू घणौ फायदौ कुणसौ जीव उठावै है ?'

सगळा बोल्या, 'आदमी।'

महाराज बोल्या, 'साच कैवो हो। आदमी जद सगळा जीवा में सिरै है तो फायदौ तो बो ईज उठासी। जितरौ भगवान रै नेडौ आदमी है, उतरौ जानवर नीं है। अबै आ बतावौ कै सगळा जीवा में सै सू घणौ दुःखी कुणसौ जीव है ?'

सगळा बोल्या, 'बो भी आदमी ईज है।'

महाराज पूछ्यौ, 'सगळा जीवा में सै सू चिंतित कुणसौ जीव है ?

सगळा बोल्या, 'आदमी।'

महाराज फेर पूछ्यौ, 'अर सगळै जीवा में सै सू घणौ भयभीत कुणसौ जीव है?'

सगळा बोल्या, 'आदमी।'

'सगळा जीवा में ईसकाखोर कुणसौ जीव है ?'

'आदमी।'

'सगळा जीवा में चुगलखोर कुणसौ जीव है ?'

'आदमी।'

'सगळा जीवा में सै सू घणी लडण-भिडण वाळौ कुणसौ जीव है ?'

'आदमी।'

'सगळा जीवा में आपाधापी करण आळौ कुणसौ जीव है ?'

'आदमी।'

महाराज कैयौ, 'तो जणै चिन्हीक तो हियै कागसी फेरो। थे सै सू बडै जीव री गिणती में आवौ हो फेरू भी सै सू घणा दु खी हो, चिंतित हो, भयभीत हो, लडण-भिडण आळा हो। ईसकाखोरा हो तो थै इण बात जोग ई सै सू सिरै माथै हो कै दु खडा पावण जोग हो, थोडो विचारो ! भगवान थानैं सो कीं दियौ है पण अणजाणै में थै दु खडै में झूलो हो। जणा मिनख दूजै री बुरी सोचण ढूकै तो बो खुद ई दु खडै में डूब जावै है।

वेदात कह है कै आदमी जणा बुरी सोचण ढूकै है तो पछै वो सुपनै में भी बुरी देखण लागै है। डॉ जानसन अंग्रेजी भाषा रा लूठा भाषाविद् हा। पण उणरी दूजै विद्वान एडमड बर्क सू तालमेल नीं हो। जॉनसन सुपनै में देख्यौ एडमड बर्क उणनैं तर्क में हरा नाख्यौ है। डॉ जॉनसन साहित्य रै क्षेत्र में किणी सू हार मानण आळा नीं हा। डॉ जॉनसन नैं इतरो बडो सदमौ पूग्यौ कै बै नींद में ई रोवण लाग्या। बेगा ई बै आसूवा सू भींज'र अर सिबक्या सू खीझ'र जागग्या। जाग्या जणा डॉ जॉनसन आपरै सुपनै माथै विचारयौ तो बा पायौ कै एडमड बर्क रै साथै शास्त्राथ में दोनू कानी तर्क तो बै खुद ई दे रैया हा। सूत्या री आ हार ही अर जाग्या पछै जीत लागण लागी। क्यूकै बै आपरै ई तर्क सू हारग्या हा। इणनैं 'रामचरितमानस' में बडै सीधे-सादे ढग सू समझायौ गयौ है–

ज्यौं सपने अपने सिर कटि कोइ ।
जागै बिन मुक्ति नहि होइ ।।

वेदात कैवै है कै आदमी खुद ई व्यक्ति अर विषय दोना रो रोल पूरो करै है। ओ ई स्वर्ग अर नरक रो सोच है। इणसू मुक्ति री जरूरत है। अेक

लुगाई जिकै नैं वेदात रो ग्या हो। वा राज मारग मायै अेक हाथ में बासती अर दूजै हाथ में पाणी लिया जावती ही। सामै सूं धरम-गुरु आ रैया हा। वै किणी भी धरम रा हुय सकै है। वां पूछ्यो, 'अेक हाथ में बासती अर दूजै हाथ में पाणी ले'र जावण रो कांई मतलब है ?'

तो वा निरायत सू बोली, 'ओ बासती थारै सुरग या जन्नत नैं बाळण जोग है अर ओ पाणी थारै नरक या दोजख नैं ठंडी करण जोग है।'

धरम-गुरु देखता ई रैयग्या। थारो सुरग-नरक थारै मन सू जुड्योडा है।

रामूडी बोल्यी, 'मराराज दु ख रै मकडजाळ माय सू निकळा कींकर ?'

मराराज बोल्या, 'मिनख नैं दु ख तीन कारणा सू हुवै है– १ आदमी सू, २ हालात सू, ३ चीज-वस्तु सू।

सुख-दु ख आपा दूजा नैं सूप्या राखा हा। दूजौ मिनख ई आपा नैं दु ख दे सकै है अर सुख दे सकै है। आपा उणरा गुलाम (चाकर) हा। जिया अबार म्हैं थानैं गाळ्या काढू तो थै बळ'र भूगडी हो जासो अर जणा म्हैं थारी बडाई करू तो थै औडा राजी हुसो जाणै थानैं सो की मिलग्यी है। जिया बीजळी रो लोटियो जगावा हा तो खटकी करया ई जगै है अर खटकी करया ई बुझै है, इण मुजब खटकै रो लोटियो गुलाम है। इणी जोग जणा कोई आपानैं गाळ्या काढै तो आपा बळण ढूका हा क्यूकै आपारी खटकी उणरै हाथ में है। जणा वो आपारी बडाई करै तो आपा साव ठडा हुय जावा हा क्यूकै खटकी उणरै हाथ में है। गाळ्या काढण आळो साव डफोळ है जणा ई गाळ्या काढै है। पण आपा सैणा-समझणा होय'र ई आपारी खटकी डफोळा रै हाथ में थमाय देवा हा।

अेक बार भगवान बुद्ध अेक गाव में पूग्या। उण गाव आळा भगवान बुद्ध सू नराज हा। इण जोग बानैं गाळ्या काढण ढूका तो भगवान बुद्ध कैयी, 'आनद! (भगवान बुद्ध रो खास चेलौ) लारलै गाव में आपानैं लोगा काई दियी हो ?'

आनद बोल्यौ, 'मिठाया अर फळ-फूल।'

भगवान बुद्ध बोल्या, 'आपा बारो काई करयौ हो ?'

आनद बोल्यौ, 'बानैं ई पाछा दे दिया हा।'

भगवान बुद्ध बोल्या, 'आनैं भी आ दियी जिकी पाछौ देयदो। आपा ना लेवा हा अर ना देवा हा।'

इण भात भगवान बुद्ध आपरी खटकी बारै हाथा में नीं सूप्यी।

हालात – आदमी हालात सू दु खी अर सुखी हुवै है। इण मुजब मिनख हालात रो गुलाम है। अेक आदमी रै घरा चार बटावू आय ढूक्या तो वो

ग्यो अर बोल्या, 'थानैं ओ संदेसौ देवणौ जरूरी हो। अबै म्हानैं दूजी ठौड फटाक
ऽचणौ है।' इत्ती कैय'र वै बटावू आया ज्यू ई पाछा निकळग्या। वो आदमी सुखी
ग्यौ।

अेक सेठ रै कारखाने में आग लागगी। सेठजी दु खी हुयोडा मूंडौ उतार
ठ्या हा। इतरै में उणरी बडी बेटी आयी तो बाप बोल्यौ, 'सो कीं लुटग्यौ,
ारखाने में आग लागगी।'

बेटी बोल्यी, 'आज दिनूगै ई कारखानौ म्हैं बेच दियौ हो अर रुपिया
क में जमा है।' बेटै रै मूंडै आ बात सुण'र सेठजी राजी होयग्या। इण जोग
नख हालात री गुलाम है।

चीज वस्त - आदमी चीज-वस्तु सू दु खी हुवै अर सुखी हुवै। इण
ज़ब मिनख चीज-वस्तु री गुलाम है। जणा घर में टी वी नीं है तो मिनख दु खी
। फलाणै-फलाणे रै टीवी है, आपांरै कोनीं। इण दु खडै में रात-दिन झूलै है जणा
ीवी आयगी तो सुख री सास लेवै है। इण मुजब आदमी आपरौ सुख-दु ख दूजा
हाथ अडाणै धर राख्या है। गुलाम मिनख सुखी कींकर हो सकै है ? मिनख
ापरी कूत रौ घणै सू घणौ ७ फीसदी ई काम में लेवै है, बाकी ६३ फीसदी तो
ारतौ साथै ई ले जावै है।

महाराज बोल्या, 'अबै आपा औ ठा लगावा कै इण दु ख-सुख री जड
ुणसी है ? वींनैं पकड्या ई इलाज हुयसी।'

महाराज बोल्या, 'सुख-दु ख थारै माय किणसू उपजै है ?'

अेक बोल्यौ, 'मन सू।'

महाराज बोल्या, 'म्हैं तो थारै साथै हू पण थै सगळा काई कैवो हो ?'

सगळा बोल्या, 'औ मन ई अैडौ ज़ुलमी है कै दुखी करदै अर सुखी
करदै है।'

मन घणौई सैंठो है। उणनैं अेक ठौड माथै बैठाणौ घणौ दोरौ है पण
अभ्यास अर वैराग्य सू मन नैं बख में करयौ जाय सकै है। गीता रै छठै अध्याय
में कैयी गयी है--

'असशय महावाहो मनो दुर्निग्रह चलम ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्यण च गृहाते ।।'

अर्थात् हे महावाहु ! निस्सदेह मन रौ निग्रह करणौ घणौ अबखौ है। औ
घणौ उछाछळौ है, पण हे कुन्ती पुत्र अर्जुन ! इण मन नैं अभ्यास अर वैराग्य
सू वस में करयौ जाय सकै है।

जद ताई मन री डोरी थारै हाथ में है उण टेम ताई मन थारौ चाकर (गुलाम) है। जे डोरी छूटगी तो मन थानें चाकर वणा लेसी। अेक वार स्वामी रामतीर्थ घूमण नैं निकळ्या तो अेक किसान वळध नैं जेवडी सू बाध्या जोर सू खींचतौ लावतौ दीख्यौ। स्वामीजी वोल्या, 'काई वात है, इणनैं जोर सू खींचतौ क्यू लावै है ?

वो वोल्यौ, 'म्हैं इणरौ धणी हू। जिया चावू विया लै जासू।'

थोडी ताळ पछै वळध जेवडी तुडा'र भाज छूट्यौ। अबै वळध आगै-आगै अर किसान लारै-लारै। भाजता-भाजता स्वामीजी कनै आय दूका तो स्वाजी उणसू ओजू पूछ्यौ, 'अबै काई हुयौ ?'

किसान वोल्यौ, 'जद ताई डोरी म्हारै हाथ में ही, म्हैं इणरौ धणी हो, अबै डोरी टूटगी इण वास्तै अबै औ जठीनै जासी बठीनै ई म्हनैं जावणौ पडसी क्यूकै अबै औ म्हारौ धणी वणग्यौ है।'

इण जोग थै मन री डोर नैं सैंठी पकड्या राखौ। महाराज बोल्या, 'आ जाणण जोग आपा रळ-मिळ'र जतन करा कै औ मन है काई ? सगळा आप-आपरा विचार राखै, इणमें सकौ नीं करै।'

कोई बोल्यौ, 'मन चचल है।' कोई वोल्यौ, 'दूरगामी है।' कोई बोल्यौ, 'सकल्प-विकल्प' मन है।' कोई बोल्यौ, 'विचार ई मन है।'

महाराज बोल्या, 'मन आत्मा री अेक उपकरण है जिणसू बो विषया रौ ज्ञान करै है। आत्मा सीधौ विषया रौ ज्ञान नीं कर सकै। बा मन नैं प्रेरित करै है। मन इन्द्रिया सू जुड्योडौ है। इन्द्रिया विषया सू सबध राखै है, जणै जाय'र आत्मा नैं विषया रो ज्ञान हुवै है। थारै कीं पल्लै पड्यौ कै नीं ?'

सगळा बोल्या, 'कीं पल्लै नीं पड्यौ है।'

महाराज बोल्या, 'साच कैयौ। मन नैं किणी परिभाषा में बाधणौ घणौ दोरौ है। इण मुजब आ हियै कागसी फेरौ कै आपा जणा हवा री परिभाषा नीं जाणा हा पण हवा नैं जाणा हा, तो बतावौ हवा नैं कीकर जाणा हा ?'

सगळा बोल्या, 'महसूस करिया।'

महाराज बोल्या, 'इया ई मन नैं महसूस करिया जाण लेसा। बोलौ, हवा नैं आपा वख में किया करा हा ?'

सगळा बोल्या, 'बीजळी सू पखौ चला'र हवा नैं बस में करला हा।

महाराज बोल्या, 'साच कैयो। हवा नैं वख करण जोग दो चीजा काम आई। पैलौ पखौ जिको उपकरण है अर दूजी ताकत जिकी बीजळी है। जणा

बीजळी री ताकत मिल्या पखौ चालण ढूकै तो आपा हवा नैं ज्यू चावा ज्यू नचावण ढूका हा। इया ई मन नैं बख में करणो है तो थारी सास उपकरण है अर आत्मबळ ताकत है।'

मन चचल नीं है पण उणनैं जणा आपरी ठौड नीं मिलै तो पछै वो भटको खावतौ इनै सू बिन्नै फिरतौ फिरै है। इण जोग चचल लागै है। जणा आपा रेलगाडी में चढा हा अर बैठण जोग ठौड नीं मिलै तो मिनख इनै सू बिन्नै भूवाळी खावतौ फिरै है अर जणा उणनैं ठौड मिल जावै तो वो अैडौ सुधौ-साधौ बण'र बैठे है कै मत पूछौ बात। मन री सागी ठौड हिरदै में है। इणमें बैठ्या पछै औ कठीनै ई नीं भटकै है।

जणा मिनख रै आ हिये उतर जावै है कै इण ससार में भगवान सू न्यारौ म्हारौ कोई नीं है तो पछै बीनैं आ ठाह लाग जावै है कै म्हैं मरया ई भगवान कनै पूगसू। मौत री ठाह लाग्या पछै मन भगवान में ई रम जावै है—

अेक नाथ बाबै नैं उणरी अचपळौ चेली पूछ्यौ, 'बाबोजी ! थै साचै मन सू भगवान नैं याद करौ हो कै लोक दिखाई करौ हो ?'

बाबौ बोल्यो, 'इणरौ पडूत्तर तो म्हैं पछै देसू। म्हनैं थारै मूडै माथै असुभ चिह्न निजर आवै है, इण जोग थारौ हाथ देखा !'

हाथ देख्या पछै बाबैजी री मूडी उतरग्यौ अर वै गुम-सुम होय'र बैठग्या। बाबैजी रा आ गत देख'र वो चेलो उणानैं आख्या फाड-फाड'र देखण ढूकौ अर बोल्यौ, 'बाबोजी ! काई बात है ?'

बाबौ होळै-सीक बोल्यौ, 'कैवण जोग बात कोनीं।'

अबै वो चेलौ तो बात बतावण सारू लारै ई पडग्यौ। जणा बाबोजी बोल्या, 'थारी उमर सात दिन ई है। अबै थू कैवे तो थारै पूछण री उत्तर दू ?'

चेलौ बोल्यौ, 'काल पाछो आवूला।' कैय'र भाजग्यौ। सात दिना में घर में पड्यौ-पड्यौ मौत नें उडीकतो-उडीकतौ सूक'र काटै ज्यू होयग्यौ। सातवैं दिन बाबोजी चेलै रै घरा ई आय पूग्या। घर रा सगळा लोग भेळा हुयोडा हा। बाबोजी बोल्या, 'थू मरै कोनी पण आ बात बता कै आ सात दिना में थनैं काई-काई ध्यान आयौ ?'

वो बोल्यौ, 'बाबा ! भगवान रै सिवाय कीं ध्यान नीं आयौ।'

बाबोजी बोल्या, 'सात दिन हुवो चायै सित्तर बरस हुवौ, इणसू काई फरक पडै है। जणा मौत नैं समझलै तो पछै थारौ मन कठैई नीं भटकै। बो ई मिनख सैं सू बडो है जिकौ भगवान सू अेकाकार करलै।'

मन नैं वख में करण जोग सास रौ उपकरण आत्मवळ री ताकत रै सहारौ लेवणौ पडसी। सरीर नैं साव ढीलौ छोड'र आख्या मींच'र आवती-जावती सास नैं आत्मवळ री ताकत साथै देखता जावौ, देखता जावौ। मन वख में आ जासी। इण सास प्रेक्षाध्यान रौ प्रयोग दिन में दो बार दिनूगै-सिझ्या थारी जितरी ताकत है, वीं मुजव करता जावौ। दो महीना में थानैं चानणौ दीसण लागसी।

महाराज सावरै नैं कैयौ, 'थू भजन मडळी लायौ है नीं ?'
सावरौ बोल्यौ, 'हा महाराज !'
'तो आज मन माथै ई भजन सुणाव।'
सावरौ गावै है—

रे मन, तू सुख में बसै, जग सरग बण जाय ।
रे मन, तू दुख में बसै, जग नरक बण जाय ।।
रे मन, तू हरि में बसै, भवसागर तर जाय ।

रे मनडा छोड दै अट-पट चाल, जग में सीधौ-सीधौ चाल ।
रे मनडा छोड दै आळ-जजाळ, जग में सीधौ-सीधौ चाल ।।

मन जीत्या ई जग नैं जीतै, जीतै नभ पताळ ।
जे मन रै तू बख में होजा, खींचती दीसै खाल ।।
रे मनडा
बिन मन लाग्या कदै नीं उतरै, अतस में गुरु ज्ञान ।
मन लाग्या ई सफळ हुवै है, सगळा जप-तप ध्यान ।।
रे मनडा

मन भटकै मन तरसै है, मन उळझै दिन-रात ।
चचल मन नैं वश करता ई, चैन पडै दिन-रात ।।
रे मनडा

सरदार अली मन बस में करता, माथै उतरयो भार ।
जीव मायनै हुयौ चानणौ, भली करी करतार ।।
रे मनडा

चेतौ भूल्योडौ

भेरूदान सेठ नरेन्द्रजी नैं मिनखा रै चेतै रै बारै में व्याख्यान देवण जोग बुलवाया है। मिनख-लुगाया सू हाल सैंठी भरयोडी है। नरेन्द्रजी बोल्या, 'मिनखा री चेतौ बो ई है जिका आज में जीवै, आज नैं जाणै अर आज नैं देखै। मिनख घणकरी जमारी बीतोडै काल अर आवण आळै काल री लूणाघाटी में भूवाळी खावती रैवै है। आज नैं तो वो साव भूल जावै है। जणा आज अर आवण आळै काल में इतरी पक्की गठजोड है जिया पाणी अर लहरा री है, माटी अर घडियै री है, सबद अर अरथ री है। आवण आळै काल नैं वर्तमान सू मोल लियौ जाय सकै है। पण मिनख कने आज में जीवण जोग टेम ई नीं है। इण मुजब थानैं घणकरा लोग चेतौ भूल्योडा ई दिखसी। कणै-कणै आपा कैवा हा थू कठै घुमोडी है, औ घुमोडी काई है ? इणरी दूजी नाम चेती भूलोडी है, क्यूकै वो आज नैं छोड'र बीतोडै काल में या आवण आळै काल में रमतौ रमै है। मिनख सुख खोजण जोग कितरा पड-पच रावै है पण आज में जिकौ सुख है बीनैं वो नीं देखै है। जणा मोटा-मोटा मिनख भी इण भवरजाळ में फसियोडा दीसै तो पछै आपा किसी चितारी में हा ?

ओक बार युधिष्ठिर कनै ओक मिनख आयौ अर आपरौ काम बतायौ तो युधिष्ठिर बोल्यौ, 'काल आइजे, थारो काम कर देसू।'

कनै ई भीम खड्यौ हो। वो जोर सू हस्यौ, तो युधिष्ठिर उणनैं पूछ्यौ, 'हस्यौ किया ?'

भीम बोल्यौ, 'म्हारी भाई काल लाई तो जीवतौ रहसी।'

आ बात सुण'र युधिष्ठिर नें चेतौ होयौ अर उण बी मिनख नैं पूठौ बुलायो अर उणरौ काम कर दियौ। कबीरदासजी कैयौ है—

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलै होयगी, बहुरी करेगो कब ? ।।

आ आपा कैवा हा, सुणा हा, पण करा कोनीं क्यूकै आपा कनै आपारौ

चेतौ हुवै ई कोनीं। चेतौ भूल्योडौ मिनख तो तेली आळै वळध ज्यू आख्या ऊपर टोपसिया लगायोडौ भूवाळी खावतौ ई फिरै है।

इण ससार में पाख-पखेरू, जीव-जिनावर भी मिनखा सू घणो चेतौ राखै है। भगवान माथै भरोसौ राख'र आज रौ खावणे री चुग्गौ चुगै है अर कालै काई मिलसी, सावरियै माथै छोड देवै। काल रो चुग्गौ चुगण जोग वो जीवतौ रैसी कै नीं? आ बात तो साविरियौ ई जाणै है। आ बात मिनख जाणतौ बूझतौ काना में कवा लेवै है अर जिन्सा भेळी करण जोग रात-दिन लाग्यौ रैवै है अर उमर भर भार ढोवतो रैवै है। वो चेतौ भूल्योडौ नीं तो पछै काई है ? गीता में श्रीकृष्ण केयौ है कै थू करम करतौ जा, फळ री चिता म्हा पर छोड दै। भगवान री बात कैवण-सुणण री है, करण जोग नीं है। करसी तो बोई जिके रै चेतौ घट में हुसी। इया ई मिनख अैडा दुवा सुणावै है जिकै सू लागै इण माथै चालसी तो उण रौ चेतौ कठैई नीं जावै पण दुवा सुणण जोग ई है, करण जोग नीं क्यूकै मिनख चेतौ भूल्योडौ है—

बाधकर चलते नहीं, पक्षी और दरवेश ।
जिनको तकवा रब का, उनको रिजक हमेश ॥

चाणक्य केयौ, 'हे भगवान ! म्हारौ सो कीं खोस लेइ पण म्हारौ चेतौ ना खोसी। जणा आदमी रौ चेतौ बुवो जावै है तो पछै बो चेतौ भूल्योडौ चारूमेरा भटका खावतो ई फिरै है। मिनख रो चेतौ मोटै तौर पर चार बाता सू विखरतौ निगे आवै है— १ क्रोध सू, २ लोभ सू, ३ अहकार सू, ४ मोह सू।

क्रोध री पैलौ काम औ हुवै है कै आदमी रै चेतै रो खातमौ करै है। विना चेतै रै मिनख अैडी उछळ कूद करै है कै बो जिनावर नैं भी लारै छोड देवै। गीता में कैयो है, 'क्रोध सू मूढ भाव पैदा हुय जावै हे अर याददास्त री ताकत भ्रमित हुवै है, वीं सू बुद्धि अर विवेक रौ क्षय हुवै है।' हजरत मोहम्मद स अ व सू पूछ्यौ गयौ कै सै सू वडी वीर कुण है तो वै बोल्या, 'जो क्रोध माथै काबू पाय लेवै।' हदीस सही बुखारी सरीफ।

चीन में वागली नाव रौ सेनापति आपरै सैनिका रै साथै सत कन्फयूशियस रै कनै जाय'र प्रार्थना करी अर कैयी, 'महाराज ! म्हनैं सुरग अर नरक री व्याख्या कर'र आ रौ फरक वतावौ।'

सत हस्या अर बोल्या, 'थू जोद्धौ कहवावै है पण असल में है कोनी। अरे थू तो म्हनैं मगतै ज्यू लागै है।'

सगळा रै सामै आपरी हेठी होवता देख'र जोद्धै रै नाक री नास्या सू काळै नाग ज्यू फुफकारा निकळ ढुकी अर फटाक तलवार म्यान सू निकाळली। आ बात देख'र सत फेरू जोर सू हस्या अर बोल्या, 'जिकी तलवार माथै थनै इत्तौ घमड है, वा तो नकली है। थारै जीव नैं नेहचौ नीं हुवै तो म्हारी नस काट'र वता।'

वागली सोचण ढूकी। उणनैं लखायौ कै सत री बाता में पक्कायत कोई सार री बात है नीं तो मरण जोग कुण राजी हुवै है ? वो थोडौ धीरो पड्यौ अर होळै सी'क तलवार नैं म्यान में घाल'र सत रै पगा पडग्यौ।

सत बोल्या, 'जणा थू क्रोध रै बास्ती में बळतौ हो, तो थू तलवार दिखावतौ हो वो नरक हो, जिया ई थू धीरो पड चेतै में आयग्यौ तो थू सुरग में पूगग्यौ।'

अध्यात्मवादिया री मानणी है कै क्रोध मोहनीय काम रौ उदय भाव है। चिकित्सा विज्ञान में इणनैं एड्रीनल ग्रथि में घणौ स्राव हुवणौ मानै है। इणसू दिल री धडकण तेज हुय जावै है, जिका सू केई अेक रोग हुवण ढूकै है। क्रोध नैं काबू करणौ घणौ अवखो है। जणा मिनख जोरा सू चक्कर खावतौ अेकदम रुकै तो पछै वीं नैं जोर सू भोम माथै पड्या ई सरै है। इण मुजब क्रोध नैं भी होळै-होळै वख में करया ई औ हुवै है।

योग सस्थान लोनावाला (पूना) में बठै काम करण आळा डाक्टरा क्रोध सू पाचन सस्था पर काई असर हुवै इण मुजब अेक मिनख नैं चोखा-चोखा भोजन करा'र उणरै अमास्य री फोटू लीनौ। उणरै बाद उण आदमी नैं वा इत्तौ क्रोधित करचौ कै वो हाफण ढूकग्यौ। तद वै उणनैं पकड'र पूठी अमास्य री फोटू लीनौ। इणरै बाद उण मिनख नैं कैयौ कै म्हैं देखणौ चावा हा कै क्रोध सू थारै अमास्य माथै काई असर हुवै। इण जोग क्रोध नैं भूलजा। वो मिनख राजी होयग्यौ। जद वो अणूतौ राजी होयग्यौ तो फेरू अमास्य री फोटू लीनी। पैले फोटू में अमास्य पूरी फैल्योडी हो, दूजै फोटू में अमास्य इसा सुकड्यौ कै जाणै सगळी भेळी होय'र गाठ वणगी ही अर तीजी फोटू पैलै जैडी हालत मे नीं आयौ। इण जोग क्रोध सू सगळी हाण ई हाण है।

इग्लैंड में हर साल १६ अरब पौण्ड री नुकसाण क्रोध रै कारण तोड-फोड सू हुवै है। जित्ती भी मार-काट री हिसा हुवै उणरो घणकरौ मतलब कै ८० फीसदी कारण औ क्रोध ई है। केई बार तो हालात अैडा वण जावै है के मिनख

नैं क्रोध करत्या ई सरै है पण साच तो औ ई है कै क्रोध आपरै सरीर अर भेजै नैं हाण पुगावै है। क्रोध– १ भूख री खात्मा करै है, २ नींद हराम कर नाखै है, ३ आता अर मासपेशिया माथै असर हुवै है।

क्रोध सू बचण जोग थे कीं कळाप कर सकौ हो जिणसू इण रोग सू छुटकारो पाय सकौ हो– १ जणा थानैं थोडी-थोडी क्रोध हुवै तो थै लाबी-लाबी सास लेवण ढूकौ अर बानैं सौ ताईं री गिणती तक गिणौ। होळै-होळै आ थारी आदत बण जासी। इणमें टेम तो लागसी पण जणा आदत पड जासी तो आपो-आप ओ काम हुवण ढूकसी, जिया आपा रोज दफ्तर कानी आपणी साईकिल, स्कूटर, गाडी नैं ले जावा हा, जिकी आपारी आदत में आ जावै है। जणा अेक दिन आपानैं दूजी ठौड जावणौ हुवै तो आपरा हाथ रोजीनै आळी सडक पासै ले जावता ई दीखसी क्यूकै हाथा री मासपेशिया री आदत पड्योडी है, इण जाग बा आपो-आप करण ढूकै है। इया ई जणा आपा कैवा हा कै आ बात म्हारै मूडै सू निकळगी, म्हैं कैवणी तो नीं चावती हो पण आपैई निकळगी। इणी जोग जणा थारी आदत पड जासी कै क्रोध होवता ई लाबी-लाबी सासा चालण ढूकसी अर थारौ क्रोध भाजतौ निगै आसी।

क्रोध री टेम थानैं कीं नीं सूझै है क्यूकै हियै चेतौ तो रैवै ई कोनीं। इण मुजब थारी लुगाई या दूजौ मिनख जिको थारै खासौ नेडी है तो दोनू आपरै हाथ सू लिख'र कागद राखलै जिणमें लिख्योडौ हुवै कै 'म्हैं क्रोध नीं करूला।' क्रोधी री चेती तो नीं है पण दूजै री चेतौ घर में है। इण जोग बीनैं कागद देखावै अर दो गिलास ठडै पाणी रा पावै अर उणनैं कैवै कै जोर सू पग पटक जिणसू कै क्रोध जमीन में बुवी जावै।

मिनखा री सैं सू दुसमी लोभ है। लोभी री चित्त ठिकाणै रैवै ई कोनीं। इण जोग बो रात-दिन चेती भूल्योडौ ई रैवै है। अेक काम पूरो हुवै कोनीं कै दूज री लोभ आ घेरै। इण जोग वो नींद में भी बड-बडावती रैवै। इण जोग मिनख री आख्या माथै लोभ री पाटी अैडी बध्योडी रैवै है कै वो आधौ हुयोडी चारूमेरा भचबेड्या खावती फिरै है। लोभ अैडी रोग है कै इणसू लारी मरया ई छूटै है। लोभ क्रोध नैं जगावण जोग माचिस री वा तूळी है जिकी लाय लगा'र सो कीं स्वाह कर नाखै है। लोभ अैडी खाडौ है जकी कदैई भरीजै ई कोनीं। लोभ सैं सू पैला विवेक री खातमौ करै, जिया मिनख री विवेक नीं है तो चेती रैवण री सवाल ई नीं उठै। मिनख आपरै मा-बाप नैं भी गाळ्या काढती नीं सकै है। ओरगजेब

बादसाह नैं लोभ राज लेवण जोग इतरौ आधौ कर दियौ कै बो सगळे भाया नैं मरा'र बाप नैं कैद कर लियौ। इणी मुजब जोधपुर रो राजा मालदेव राजगदी रै लोभ में आधौ होय'र आपरै बाप गगे नैं खतम कर नाख्यौ। इणी मुजब राणा कुभा नैं उणरौ बेटौ भोजराज गादी लेवण जोग मार नाख्यौ हो। मरती टेम अेक जणो भी इण राज नैं साथै नीं ले जाय सक्यौ हो पण चेती नीं रैया ई अैडा काम हुवै है।

अेक साधु राजमहल में बडण लाग्यौ तो पहरेदार उणनैं माय बडण जोग मना करै है। पण साधु कैवै है आ सराय है। इणमें म्हैं ठहरसू। पहरैदार केवै, 'महाराज ! औ राजा रौ महल है, सराय कोनी।' जणा साधु सू सगळा जतन कर'र हारग्या पण साधु नीं मान्यौ तो पहरैदार राजा कनै पूग'र अरदास करै है, अेक हटी साधु कैवै है औ महल अेक सराय है। म्हैं इणमें ठहरण जोग माय जासू। राजा दरबाऱ्या रै साथै साधु कनै आयौ अर साधु नैं प्रणाम कऱ्यौ क्यूकै राजा धरम-करम सू जुड्योडो हो। इण मुजब साधु रो आव-आदर करतो बोल्यौ, 'महाराज ! औ राजमहल है, सराय कोनी।'

साधु पूछ्यौ, 'राजन ! आ बतावौ के औ महल कुण बणवायौ ?'

राजा बोल्यौ, 'म्हारा दादोसा बणवायौ।'

साधु कैयौ, 'तो बुलावौ थारै दादोसा नैं।'

राजा बोल्यौ, 'बै तो सुरग सिधारग्या।'

'तो थारै पिताश्री नैं ही बुलायलो।' साधु कैयौ।

राजा बोल्यौ, 'बै भी सुरग सिधारग्या।'

साधु कैयौ, 'हे राजन ! इणी'ज भात अेक दिन थू भी मर जासी। तो थै बतावौ कै आ सराय नीं तो पछै काई है ?'

राजा रौ चेतौ जागग्यौ। बोल्यौ, 'महाराज ! म्हैं तो अजू ताई चेतौ भूल्योडो हो। लोभ रै चकारियै में आयोडो हो। अबै चेतौ बापरग्यौ है।'

पछै राजा भी राजपाट छोड'र साधु बण जावै है।

अहक्कार मिनख रै हाडो-हाड बैठ्योडो है। सगळा ई आपरै अहकार में डूब्या रैवै है। 'म्हनैं घडगी बा तो बाड में ई बडगी' अर 'म्हासू गोरी बीं नैं पीळियै रौ रोग।' अहकार रै चक्करा में आय'र चेतौ भूल्योडो मिनख नीं करण आळा क्रम कर नाखै है। क्यूकै उणरै घट में चेतौ नीं हुवै है। दुर्योधन अहकार रै वख में आय'र घर लक्ष्मी री लाज सगळा सामै उघेडण लाग्यौ, तो मनावण आळा जित्ता

कळाप करणा हा, बै कर धाप्या पण दुर्योधन री चेतौ कने नीं हो। रामायण रै दूसरै अध्याय में जणा गुरु वशिष्ठ आपरै चेला नैं आखरी सिक्षा देवण ढूका तो बोल्या, 'सूक्ष्म सरीर स्थूल सरीर माय सू बारै निकाळण री कला राम नैं ईज आवै।' इण जोग गुरु वशिष्ठ अर भगवान राम आपरै सूक्ष्म सरीर माथै आभै माय जाय विराज्या अर गुरु चेलै नैं आखरी सीख देंवती टेम कैयौ, 'देख राम ! इण गुरु नैं औ अहकार है कै इण ससार में म्हा जेडौ कोई दूजौ नीं है। औ अहकार इणनैं खा जासी।'

भगवान राम बोल्या, 'गुरुदेव ! औ तो लोगा री भलो करै है।'

गुरु केयौ, 'लोगा री तो भलौ करै पण आपरौ बुरौ करै है।'

नरेन्द्रजी बोल्या, 'इसौ उदाहरण थानैं किणी दूजै धरम अर देस में नीं मिलेला कै गुरु आपरी कमी आपरै चेला नैं बतावता सकौ नीं करै है।'

में में अहकार लुक्योडो बैठ्यौ है। मैं ई सत्य हू, इण अेक ई आखर नैं कुरुक्षेत्र रै जुद्ध नें जलम दे'र लाखू मिनखा नैं मरा नाख्या हा। इणी जोग हिटलर कैयो, 'म्हें कहू वो ई सुद्ध है। सुद्ध कुण, जिकै नैं हिटलर कैवै।' दूसरै विश्वजुद्ध में लाखू मिनख अेक अह रै कारण मर खपग्या। दस लाख यहुदिया नैं जिका निहत्था हा वानैं देखता-देखता बाळ'र राख कर दिया हा। इण अहकार रूपी राखस रै बख में आया पछै मिनख री चेतौ नेडै-तेडै भी नीं रैवै है।

योगवशिस्ठ बतावै है के लोग म्हारै ई गुण नैं गावै अर म्हारी ईज पूजा करे। अैडी मनस्या अहकारिया रै मन में हुवै है, जिका री चित्त अहकार युक्त है। वानैं इसी इछा हुवै कोनीं। स्वामी रामतीर्थ कीं विद्वता सू प्रभावित हुय'र अमेरिका रा १८ विश्वविद्यालया मिल'र वानैं मानद-उपाधि देवण री फैसलौ कर्यौ। स्वामीजी इण उपाधि नैं लेवण सू नम्रतापूर्वक मना कर दियौ अर कैयौ, 'म्हारै 'स्वामी' अर 'एम ए ', दो कळक पैला सू ई लाग्योडा है। अबै म्हैं तीजौ कळक कठै राखसू। जस, कीर्त्ति, लोकेषणा, प्रतिष्ठा, प्रससा, बडाई अर पूजा आद रै चक्करा में पड्या सू ही अहकार ऊचौ आवतौ दीसै है। इण जोग मान अर बडाई सू बचणौ ई चोखौ है।

कबीरदासजी अहकार नैं अैडी पटक-पटक'र मार्यौ है कै इणरी कुत्ता भी खीर कोनीं खावै है। 'मैं' यानी अग्रेजी में 'आई' पर कबीरदासजी कैयी है—

तू तो धुन रे धुनिया अपनी धुन, पराई धुनि का पाप न पुन
तेरी रूई में पाच बिनोले, पहले उनको चुन, तू तो धुन रे
मैना ने मैं ना कही, मोल भयो दस-बीस
बकरे ने मैं-मैं कही तो आन कटायो सीस
फक्र बकरे ने किया मेरे सिवा कोई नहीं
जब वह मैं-मैं कर चुका बे माइने अहबाब में
फेर दी जम कर छुरी गर्दन पर तब कसाब ने
गोस्त हड्डिया मास चमडा था जो जिसमें यार में
कुछ फिका, कुछ लुटा, कुछ बिका बाजार में
रह गई आतें फकत मैं-मैं सुनाने के लिए
ले गया धुनका उसे धुनकी बनाने के लिए
जरब के सोटे की जब मार उस पे पडने लगी
तो मैं के बदले तू ही तू की फिर सदा आने लगी
सची तो धुन तब ई जाणे भाई सगळै तार बजै तू ई तू
तू तो धुन रे धुनिया अपनी धुन, पराई धुनि का पाप न पुन
तेरी रूई में पाच बिनोले, पहले उनको चुन, तू तो धुन रे

मोह में डूब्योडो मिनख पछै चेतै रै नेडै-तेडे ई नीं रैवै है। वींनैं भलौ काम वो ईज लागै है जिकै में उणरौ, उणरै धरआळा रौ अर उणरै टाबरा रो फायदौ होवतौ हुवै। इण जोग फायदै आळै काम नैं ई वो सैं सू आगै राखै है। वो इण गोरखधधै में लाग्योडो रैवै है कै रुपिया नैं कीकर बचावू, घर नैं ऊचौ किया लावू, टाबरा नैं किया ऊची ठौडा माथै पूगावू। औ अळूझाड ईज उणरौ धरम बण जावै है, बाकी सै बाता भूल जावै। इण मुजब मोह में फस्योडे री चेतौ आसै-पासै भी नीं रैवै है।

आपारै सरीर में जिण भात वात, पित्त अर कफ हुवै है जिका नैं आपा सतुलित राख्या ई निरोग रैवा हा इणी ढाळै आपारै सरीर में क्रोध, लोभ, अहकार अर मोह है, जिका नैं भी काबू में राख्या ई आपा चेतै मैं रैस्या। क्यूकै अै आपणै सरीर रा हिस्सा है।

क्रोध मिनख री स्वाभाविक आदत है। क्रोध घणकरै टेम बीत्योडी बाता माथै ई आवै है। इण जोग मिनख भूतकाळ में क्रोध रौ दास (चाकर) है, जिकौ बीतग्यौ, उणरी ठौड आपा हाथ पाणी लेवा कै आगै सू क्रोध नीं करा। इणी ढाळै

लोभ भेळो करण री आदत सू हुवै है जिको आगे आवण आळै जीवण में जीवण सारू धन री कमी रै डर सू हुवै। इण जोग लोभ भविष्योन्मुखी है। आदमी बुढापै में अपणै आपनैं सैं सृ निवळो समझै है। काई ठा काल काई हुवै ? इण डर सू मोटै सू मोटा धनवान रुपिया-टक्का नैं दाता सू पकड्या राखै। इण जोग आवण आळै काल जोग जो लोभ हुयो है उणनैं आज में ढाळणो चाईजै। भविष्योन्मुखी लोभ नैं वर्तमानोन्मुखी वणावणो चाइजै। दया-धरम रै काम में खरच करती टेम लोभ नीं करणो चाइजै। अहकार अर मोह आज में हुवै है। इणनैं जिको होयग्यो है उणमें वदळ दो जिके सू मैं अर मेरा मटियामेट हुय जासी। औ सो कीं चेतो राख्या ई सभव है।

नरेन्द्रजी वोल्या, 'थे इत्ता जणा वैठ्या हो, साच-साच वोल्या ! अठै थारो इम्तान नीं है सोच'र वोल्या आपरी वात आपनैं ठाह लाग जासी पछै उणरो उपाय करण जोग सोचसा।' फेर वोल्या, 'थारै सगळा रै मूडै आगै कागज अर पेन पड्यो है अर थारै सगळा रै हाथ में घडी वाध्योडी है, वीं नैं विना देख्या कागज माथै पेन सू उण घडी रै डायल रो रग लिखदो।'

लिख्या पछै पूछ्यो, 'साची-साची वताया कै कित्ता जणा सही लिख्यो है।' पण ओक रो ई हाथ नीं उठ्यो। तद नरेन्द्रजी बोल्या, 'आपा रोज घडी देखा हा पण उणरै डायल रो रग भी है इणनैं देखण सारू आपा कनै समै नीं है। क्यूके चेतो कठैई ओर है। फटाक टेम रो पतो लाग्यो अर दौड पड्या।'

ओक बार म्हैं चार-पाच भायला वाजार में वैंवता हा। सामै ओक सेठ दुकान ढकतो हो। म्हैं कैयो, 'लोग चेतो भूल्योडा ई घणकरो टेम निकाळ दे है।'

भायला वोल्या, 'सगळा चेतो राखै है, विना चेतै रै काम किया चलै ?'

म्हैं वोल्यो, 'देखो, सामै इण सेठ दुकान रै ताळो लगा दियो है नीं।'

सगळा वोल्या, 'हा।'

सेठ पचासेक पावडा नीठ चाल्यो हुसी कै म्हैं भायला रै साथै फटाफट सेठ नैं नावड्यो अर वोल्यो, 'सेठा ! थे थारी दुकान रो ताळो खुलो ई छोड आया हो।'

इतरो सुणता ई सेठ पूठो भाग्यो। म्हैं वोल्यो, 'देख लियो नीं, औ चेतो भूल्योडो है कै नीं।'

सोच

जणा गाव में भैरू बावै री आवण री दिन हुवै तो आखौ गाव वासू मिलण जोग अेक ठौड भेळा हुय जावै है। भैरू बावौ भण्योडौ-गुण्योडौ मिनख है। वो गाव रा लोगा खातर दवाया अर टाबरा खातर पढण जोग पोथ्या लाय'र वानैं मुफत में वाटै है अर वारै जीवण सुधारण जोग की ज्ञान री वाता बता जावै है।

भैरू बावै री वाता गाव रा सगळा लोग चेतौ राख'र सुणता-सुणता अगै-चगै लगावै है। आज गाव रा मास्टरजी बोल्या, 'बावा ! आज तो कीं सोच-विचार पर बोलौ क्यूकै सगळा ई सोच-फिकर में डूब्योडा है। आनैं कोई अैडौ मारग देखावौ कै अै कीं सुख सू जी सकै।

भैरू बावौ बोल्या, 'सोच ई काम करण री आत्मा है। इण चोखी सोच सू ई औ ससार बणियौ है। सैं सू चोखी सोच जी में उपजै। आपा जणा साफ-सुथरी सोच राखा तो आपी-आपमें, कुटव-कबीलै में, देस अर दुनिया में सागोपाग भलाई जोग बदळाव लाय सका हा। "अेक अेवाडियै नैं अेक मिनख पूछ्यौ कै आज मौसम कैडोक रैसी, तो बोल्यौ कै जिया म्हैं चावूला विया ई रैसी। मिनख पूछ्यौ कै मौसम थारौ चाकर है काई ? तद अेवाडियौ बोल्यौ कै चाकर तो कोनीं पण मौसम हर हाल में वैडौ ई रैसी जेडौ म्हारौ सावरौ चाहसी अर म्हारी खुसी म्हारै सावरियै रै साथै है।" कित्ती साफ सुथरी सोच है अेवाडियै री। हालात तो जिसा है बिसा इ रैसी, वै बदळै कोनीं। बदळण आळौ तो आपा रौ मन है। इण जोग थै थारौ मन बदळौ। गीता कैवै है कै मिनख आपरै मन री मेल धोय'र समभाव नैं अगेजै तो उणरी सोच सफ़ेदै पणै सू निकळ'र फैलती जासी जिकै सू सुख ई सुख होसी।'

कीं सास लेय'र भैरू बावौ फेरू बोल्या, 'दुनिया में दो तरै रा लोग हुवै है। अेक वै जिका बोलै पैला अर सोचै पछै। अैडा मिनखा नैं अतपत पछतावणौ पडै क्यूकै कबाण सू तीर, मूडै सू बोल अर लुगाई रौ पग बारै पड्या पछै पूठा

नीं बावडे है। दूजा मिनख बे है जिका सोचे पैला अर बोलै पछै। अेडा लोग सुखी तो रैवै ई है, साथे ई सैणा-समझणा भी हुवै है।

पैला तो सेखचली अेक ई हो पण अवै तो सेखचली ई सेखचली निगै आवै हे। सगळा ई ऊचा-ऊचा सुपना देखे है। हाथ कीं नीं आवै है। कोरा सुपना देख-देख'र राजी हुवै है। इण सोच री लूणाघाटी में अैडी लट-पटीजे है कै इण मक्कड-जाळ माय सू निकळणौ घणौ दोरो हुवे है। जद मिनख टावर हो तो वो सोचतौ हो कै पढ-लिख'र ऊची नौकरी लागसू। नौकरी लागगी तो सोचण ढूकौ घणा रुपिया कींकर कमाऊ। जद रुपिया ई भेळा होयग्या तो बेटा-बेटी रै ब्याव रे सोच में पड जावे हे। उणसू कीं सास खावै ई कोनीं कै पोता-पोत्या रै ब्याव-अेढा रौ सोच लाग जावै हे अर इणी सोच विचार में आखर में सुरगा सिधार जावै।

जिका मिनख चोखो सोचै वींनें चोखो ई पडूत्तर मिलै है पण जिकौ भूडौ सोचै उणरौ पडूत्तर भी भूडौ ईज मिले, क्यूके हवा में थारै विचारा नें ले जावण जोग बळ-बूतौ है। जणा इण हवा रे बळ-बूतै सू हजारा कोसा सू थारी फोटौ आ जावै है तो थारा विचार क्यू नीं आय सकै ? थे जेडी सोच सामलै मिनख ताईं राखौ हो तो थारा विचार सामली मिनख पकडलै है अर वो भी थारै खातर थारै जैडा ई सोच बणायलै है।

"अेक बार राजा अर मत्री रोही में घोडा माथे चढियोडा बैंवता हा कै सामै अेक मिनख रोही माय सू लकड्या बाढ'र उणरौ भारी लावतौ निजर आयौ। उणनैं देखनै राजा बोल्यो, 'मत्री ! औ काई सोचै हे ?'

मत्री बोल्यौ, 'जिकौ थे उणरै खातर सोचौ हो, वो ई थारै खातर औ सोचै है।'

राजा बोल्यौ, 'आ किया होय सकै है ?'

मत्री बोल्यौ, 'थे उणरै खातर काई सोचौ हो ? इण हवा में थारा विचार ले जावण री खिमता है।'

राजा बोल्यौ, 'औ बदमास है, रोही नैं बाढ-बाढ'र सूनी कर नाखी है। म्हैं इणनैं सजा देसू।'

वो मिनख नेडी आवती दीस्यौ तो मत्री राजा नैं कैयौ, 'आप झाडी रै ओटै लुक जावौ, म्हैं इणसू बात करूला।'

राजा झाडी री ओटी ले लियौ। नेडौ आया मत्री उण मिनख नैं पूछ्यौ,

'भाया, गाव कित्तोक दूर है ?'

वो बोल्यौ, 'दो कोस।'

मन्त्री बोल्यौ, 'थू कीं सुण्यौ कै नीं ? इण देस रौ राजा सुरग सिधारग्यौ।'

वो बोल्यौ, 'औ तो चोखौ हुयौ पण वीं रै सारू सुरग में कठै ठौड पडी है ? वो तो गरीबा रौ खून चूसतौ हो।' कैय'र वो मिनख आगै टुर व्हीर हुयौ।

राजा झाडी रै ओलै सू निकळ'र बारै आयौ। मन्त्री कैयौ, 'सुण लियौ राजाजी। आप उण मिनख सारू बुरौ सोचता हा तो वो आपरै बारे में भलौ किण भात सोच सकै हे ?

आगै चाल्या राजा अर मन्त्री नैं गाव रै गोरवै अेक डोकरी भार उखण्योडी मिली। वा डागडी रै सहारै होळे-होळै आवती दीसी तो मन्त्री बोल्यौ, 'महाराज ! अबै आप इण डोकरी रै बारै में काई सोचौ हो ?'

राजा बोल्यौ, 'बापडी इण उमर में बोझौ ढोवै है। म्हैं इणरै खावण-पीवण री पेटियौ बाधसू।'

डोकरी नैडी आवती दीसी तो मन्त्री, राजा नैं कैयौ, 'अन्नदाता, आप झाडकी रै ओलै हुवौ। म्हैं इण डोकरी नैं आपरै बाबत पूछणी चावू।'

राजाजी फेरू अेक झाडकी रै लारै लुक बैठ्या। मन्त्री उण डोकरी नैं पूछ्यौ, 'गाव कित्तोक दूर है ?'

डोकरी बोली, 'वो सामी दीसै हे।'

मन्त्री बोल्यौ, 'थू सुण्यौ कै नीं ? अठै री राजा मरग्यो।'

औ दु खद समाचार सुण'र डोकरी रोवण ढूकगी अर विलाप करती बोली, 'बापडौ धणी ई भलौ माणस हो। पण भलै मिनख नैं भगवान कद छोडे ?'

डोकरी आगै निकळगी तो मन्त्री राजा नैं कैयौ, 'देख्यौ राजन ! जिणरै प्रति आपरी सोच चोखौ हो तो सामलै री सोच भी आपरै प्रति चोखौ है अर जिकै रै कानी थारी सोच माडौ हो तो थारै सारू उणरौ सोच भी माडौ हो।"

भैरू बाबौ कीं सुसता'र फेरू बोल्यौ, 'भाया ! थारा सोच ई थानैं रोगलौ बणा नाखै अर थारौ सोच ई थानैं निरोग बणावै है। म्हैं थानैं अेक काम कराऊ हू। थै इणनैं मन सू करया। अठै ई थारै सामै दूध रौ दूध अर पाणी रौ पाणी हुवती निगै आसी। थै सगळा आख्या मींचलौ अर थारै सागै कोई भारी दु खडै री बात बीत्योडी है, उणनैं याद करौ। अेक बार नीं, बार-बार याद करौ। थोडी ताळ में थै दु खडै रै दरियाव में बैंवता निगै आसौ।

अबै थै आख्या खोल'र बानैं पूठी मींचौ अर थारै साथै घस्योडी किणी सुखद घटना नैं चितारौ। थोडी'क ताळ में थै सुख रा समदर में तिरता मैसूस करस्यौ। इण भात थानैं दु ख रै दरियाव अर सुख रा समदर में कुण घाल्यौ ? थारो सोच। थारै सोच रौ सीधौ हमलौ थारी अत स्रावी ग्रथिया माथै हुवै है। ताळवै रै नीचै पिनीयल ग्रथी, कान रै कनै पिच्यूटरी ग्रथी, गळै में थाइराइड अर पैरा थाइराइड ग्रथी अर नाभि कनै अेड्रीनल ग्रथी माथै थारै सोच रौ सीधौ हमलौ हुवै है अर इण माय सू हारमोन्स निकळ'र थानैं रोगा रै कुडके में पजा लेवै है, जिकै सू दिल रौ दोरौ, ब्लड प्रेसर रौ हाई होवणी, डाइबिटिज आद रोग हुवता निंगै आवै है। इण भुजब थै थारे सोच नैं चोखौ राखौ। चोखै सोच खातर थारी आत्मा हेला देवे है पण थै उणरी बात नें गिनारौ ई कोनी।

मिनख जणा विचार माथे निजर राखै तो वै सबद बण जावै है। सबद माथै निजर राखै तो वै करम बण जावे है। जद करम पर निजर राखै तो बा आदत बण जावै है अर आदत पर निजर राख्या वा चरित्र बण जावै है। चरित्र पर निजर राखै तो बा ही थारी नियती बण जावे है। उपनिषदा में कैयीज्यौ है के थै वैडा ई हो जैडा थारा विचार है अर जैडा थारा विचार है वैडी ई थारी आकाक्षा अर जैडी थारी आकाक्षा, वैडा ई थारा काम। जैडा थारा काम, वैडा ई थारा भाग।

'जैसी करनी, वैसी भरनी, न माने तो करके देख।
जन्नत भी है दोजक भी है, न माने तो मरके देख ॥

इण जोग थारै विचारा नैं चोखा करौ। जणा दु खडौ आ पडै तो वीं नैं निरायत सू दूर करौ। जणा सोचणै सू कीं नीं हुवै तो पछै दु ख नैं सोच साथै जोड'र घणा दु खी क्यू हुवौ ? दु ख मिट सकै तो बीं नें मेटौ जणा वो रातभर सोच्या ई नीं मिटै तो पछे वीं नैं छोड्या ई जीवण रो सार है। जे उणरै चिपग्या तो पछै इसौ सोच थानैं मार नाखेलौ। औ दूहो घडी-घडी बोलौ, जिकै सू थारौ दु खडो कीं हळको हुसी--

तुलसी भरोसे राम के, निरभै हो के सोय।
अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होय ॥

मन नैं साफ-सुथरौ राखण जोग चोखौ सोच हुवणौ जरूरी है अर चोखी सोच जद ई होसी जणा आपा कोजी सोच बारै निकाळ देसा। अेक म्यान में दो तलवारा कींकर रैय सकै है ? जिकै री जित्ती चोखी सोच हुसी वो बित्ती ई सुखी अर मन सू सैंठी हुसी।

किणी भी मिनख री पगै पागडै जीत में ८५ फीसदी सोच काम करै है बाकी १५ फीसदी में अकल, अनुभव अर योग्यता काम करै है। सगळी मानखी आपरी सोच, आपरी मान्यता अर आपरै जीव रै थावस में जीवै है। सोच बदळ्या मिनख री दिसा अर दसा, दोनू बदळ जावै है। सोच री बदळणी सोरौ कोनी पण आ नीं होवण आळी बात भी कोनी। विन्हिक मेहनत, लगन, भरोसौ, धीरज अर हिम्मत रै ताण इणनैं बदळ्यी जाय सकै है।'

बाबौ बोल्या, 'हू थानैं जिकी बाता बताऊ हू बानैं काठी पकड्या रैया। आ सू थारी सोच बदळती निंगै आसी—

१ दिन में केई बार आपौ आपनैं कैवौ कै म्हैं चोखै सोच री धणी बण सकू हू अर अेक दिन बण'र रैस्यू।

२ देख्या-सुण्या मुजब मिनख रै माथै में वे ई बाता रच-पच जावै है। इण मुजब न तो खोटी देखौ अर न खोटी सुणौ।

३ कोजै माहौल सू आतरै रैवौ अर भूडा मिनखा सू भायला मत घालौ।

४ चोखै-चोखै सोच माथै लिख्योडी पोथ्या पढौ।

५ मन अर मगज में कोजी सोच आवै तो उणनैं चोखी सोच में बदळ नाखौ।

पैला-पैला तो औ अचुळ-पचुळ लागसी, पण अेक हफ्तै पछै औ सोच चोखौ लागण ढूकसी अर तीन-चार महीना पछै थारौ जीवण ई बदळ जासी। औ काम चुनौती अर रोमाचकता सू भर्योडौ है। इण मुजब पैला-पैला औ थानैं अबखाई में घाल सकै है पण वेगा ई थै सागी ठौड आय ढूकसौ। आछी सोचण सू निस्चै ई आछौ फळ मिलसी।

१ आपरै गुणा नैं जाणौ।

२ आपरी कमायोडी पूजी खूटण लागै तो बीं पर ध्यान लगावौ।

३ दूजा रा गुणा नैं देखौ।

४ आपरै काम-धधै नैं जी लगा'र करौ।

५ किरकै साथै जीवौ।

६ आफत आन पडै तो सैंठा रैय'र बीं री सामनौ करौ।

औ सोच ई है जिकै सू मिनख भलौ हो जावै अर भूडौ भी हो जावै। "अेक बार भगवान जगन्नाथ जी रै रथ री जातरा निकळ रैयी ही। लोगा री अेक घडी अैडौ हो कै जातरा विचाळै बब फैंक'र हुलडबाजी कर नाखौ, पण उण घडै में सगळा ई भूडी सोचण आळा नीं हा। इक्कौ-दुक्कौ भलौ सोचण आळौ भी हो।

वारी आत्मा हेलौ दियौ कै बापडा बिना कसूर भोळा-ढाळा मिनख मारया जासी तो पुलिस कनै पूग'र सगळी तिगडमबाजी री भाडो फोड नाख्यौ अर पुलिस हुडदगिया नैं पकड लिया। मिनखा री हाण होवतौ-होवती बचग्यो। औ भली सोचण आळै री कमाल हो।"

अेक सोच सू दुनिया बदळ जावै। सोच सू कणैई धणी बण बैठे है तो कणैई कैवै म्हैं धणी नीं हू।

"अेक मिनख नैं दूजौ मिनख पूछ्यौ, 'आ कार थारी है काई ?'

वो बोल्यौ, 'म्हारी भी है अर म्हारी नीं भी है।'

पैलो मिनख पूछ्यो, 'इया किया ?'

वो मिनख बोल्यो, 'जद इणमें पेट्रोल घलावणौ होवे तो आ म्हारी है। इण पछै चढण जोग म्हारी कोनी, म्हारी लुगाई री है।"

इण मुजब सोच थारौ दास है, थै उणरा दास कोनी। आ बात थारै हियै उतरगी तो पछै थै मजा ई मजा करसौ।

चालती आई है

मोडै गाव में छोगजी री गुवाडी री आपरी न्यारी ई ओळखाण ही। छोगजी मानीजता मिनखा माय सू हा। आसै-पासै रा गावा में छोगजी रै नाव री धूसौ वाजतौ हो। छोगजी रै दो छोरया अर अेक छोरो हो। छोरै रौ नाव हीरालाल हो। हीरौ, हीरै ज्यू ईज हो। हीरौ गाव में पढण नैं जावतौ अर गुरुजी जिकौ काम करणौ देंवता हा उणसू वो आगूच काम कर लावतौ हो। इण जोग गुरुजी छोगजी नैं कैवता कै थारो बेटौ तो बेटौ काई है, खरौ सोनो है। हीरै जैडौ पढेसरी इण गाव में दूजौ कोई कोनी। इण मुजब इणनैं अबै सहर में भेज'र पढावौ।

गाव री पढाई पूरी कर हीरौ सहर में पढण जोग जावै है। सहर में अेक किरायै री कमरौ लेय'र हीरौ आपरी पढाई रौ काम सरू करदै। हर साल पैलै नम्बर पर पास हुवै है। जणा हीरै वकालत री पढाई पूरी करली तौ उणरौ व्याव कर दियौ। अबै हीरौ आपरै टाबरा रै साथै सहर में ई वकालत करै है अर समाज री भूडी रीता नैं मिटावण आळी कमेटी में भी रळ जावै है।

हीरै नैं समाचार मिल्या कै उणरा बापूजी सुरग सिधारग्या है तो वो ऊभा-घडी में आपरै टाबरा नैं लेय'र गाव आय जावै। बापूजी रौ दाग कर'र बारा फूल गगाजी में वैवाया पछै जद पाछौ घरा बावड्यौ तो घर में मरण आळै रै लारै भूडी रीता-पाता जिकी सरू हुई उणनैं देख'र उणरौ मन उचटग्यौ। हीरौ अचुळ-पचुळ नैं देख'र विचारण ढूकौ कै आ भूडी रीता-पाता नैं ढावण जोग किणसू बात करा ? तो उणरै सामनै घर रौ बडेरौ लूणौ काकौ आयौ। लूणौ काकौ गाव रौ सरपच भी हो। इण मुजब हीरौ समझ्यौ इणसू बडौ सैणौ-समझणौ गाव में और कुण लाधसी ?

लूणै काकै नैं अेकात में ले जाय'र हीरो बोल्यौ, 'काकोसा ! औ काई टेय रैयौ है ?'

लूणौ बोल्यौ, 'काई हुयौ ?'

हीरौ बोल्यौ, 'थै सैणा-समझणा भी हो अर गाव रा सरपच भी। सगळौ

कुटब-कबीलौ दिनूगै सिझ्या फुरवा जीमण जीमै है। पडितजी दक्षिणा अर गाभा-लत्ता री बाता में लाग्योडा है। लुगाया ओढावणी री बाता में लाग्योडी है। म्हैं तो औ फैल देख'र बगचूचौ होयग्यौ हू। घर रै मिनख नैं तो भगवान मार्‌यो है पण औ सगळा लोग तो सापरतेक मरण आळै रै घरआळा नैं जीवता ई मारै है। आनैं हया-दया ई को आवै नीं। घरआळा कूकै है अर औ मृछा रै ताव देंवता-देंवता माल उडावै है ? वाह रे लोगा ! थारी जींवता रौ राम कींकर निसरग्यौ ? भाई-वधु अर सगा-परसगी सू लेय'र पडतजी ताई लूट मचाय राखी है अर थै ऊभा-ऊभा देखौ हो ?'

लूणजी हीरै कानी आख्या फाड-फाड'र देखण लाग्या। हीरौ सहर रौ मोटौ वकील है। इण जोग लूणजी री सिटी-पीटी गुम होयगी। इतरै में हीरै रा मामोसा पन्नजी आय ढूक्या तो लूणौ बोल्यौ, 'देखौ पन्नजी ! कुटब-कबीलै में रैवणौ है तो आरै लारै चालणौ ई पडसी नीं ?'

पन्नजी हामी भरता बोल्या, 'जिकै गाव में रहणौ, हाजी हाजी कहणौ। आछी बात लोगा री। जिकै लोगा साथै रैवणौ है तो वारी बात भी मानणी पडसी।'

लूणौ बोल्यौ, 'पन्नजी ! अबै आ बात, थै ईज थारै इण भाणजै नैं समझावौ।'

हीरौ बोल्यौ, 'म्हैं तो आ भूडी रीता नैं तोडसू।'

पन्नजी बोल्या, 'भाणेज ! जिकी जूनी रीता चालती आई है बानैं तोडणी कोई हसी-खेल नीं है। औ घणौ अबखौ काम है। लागै है, थू म्हारी बैन री कड तोड नाखसी जणा गाव री लुगाया रोज-रोज मौसा देसी।'

हीरौ बोल्यौ, 'बात जूनी है, इण जोग मानलौ औ काम चोखौ है तो औ सोच सिरे सू ई गलत है। पाप कित्तो ई जूनौ हुवौ, उणनैं तो छोड्या ई सरसी।'

पन्नजी बोल्या, 'भाणेज, चालती रौ नाव गाडी है। खडी हुया पछै खटारौ। उणनैं गाडी कोई नीं कैवै। थनैं रीत रौ रायतौ तो करणौ ई पडसी। नीं करैला तो पछै लोग कैवैला कै हीरियो बाप लारै धूड उडायदी। थू इण कैबा में क्यू फसै है ?'

हीरौ बोल्यौ, 'जणा कोई तो आ भूडी रीता नैं तोडसी।'

पन्नजी बोल्या, 'औ भूडी रीता किया सरू हुवै अर किया मिट जावै, आज ताई कोई इणरौ पार नीं पायौ है। म्हे छोटा हा जणा ब्याव करण जोग क्वारौ मिनख सासरै रै खेत में काम करतौ, बींनणी लावण जोग रुपिया देंवतौ, बींनणी

रै गैणा चढाती पण अबै तो छोरी आळै सू छोरै आळौ बाप धन लेवै है। बता, आ रीत कुण घाली अर कुण तोडी ? इण जोग थू किणी पडपच में मत पड।'

पन्नजी कीं सुस्तार बोल्या, 'सगळा धान खावै है। सगळा सैणा-समझणा है। पण चालती आई नै तोड'र सैतमाख्या रै छातै में कोई हाथ घालणी नीं चावै। जणा मानखौ कैय देवै कै आ तो चालती आई है तो पछै टणकेल सू टणकेल मिनख बारै लारै लटुरिया करतौ-करतौ चालण ढूकै है। सुण ! थनैं दो कहाणिया सुणावू हू--

"लोग रेल री टिगट लेवण सारू लाबी कतार में ऊभा हा। लारै ई लारै ऊभी मिनख विचारयौ कै म्हारी बारी आसी जितरै तो रेलगाडी हक जासी। इण मुजब उण विचारयौ कै जीवडा अठै सू चालण में ई सार है। पण वो मिनख कुबदी हो अर कुबदी कुबद करया बिना मानै कोनी। रीसा बळतौ जावतौ-जावतौ आगै आळै मिनख रै माथै ऊपर फटीड मार'र भाजग्यौ। जे कतार में खडौ मिनख उणरै लारै भाजै तो पछै टिगट मिल्यौ ई समझौ। इण जोग वो आदमी आपरी ठौड ऊभौ-ऊभौ ईज मसमसीजण ढूकौ। अबै करै तो काई करै ? उणरै माथै आई जिकौ वो देयग्यौ थू अबै आगै आळै नैं पुरस दे अर वो रीसा बळतौ आगै आळै मिनख रै फटीड दे मारयौ। आगै आळौ ई सोच्यौ कै जे लारलै सू लडाई माडू तो म्हारौ टिगट लेवणौ अबखौ हो जासी इण मुजब वो आगलै रै फटीड चेप दियौ। इया करता-करता आगै ई आगै खडयै मिनख रै फटीड पाती आयौ तो अबै वो कीं रै मारै ? जणा वो पूठौ मुड'र आपरै लारलै नैं पूछ्यौ, 'थू म्हारै फटीड क्यू मारयौ ?' उणरै लारै ऊभौ आदमी बोल्यौ, 'लारै सू चालती आई है।' लारै सू चालती आई है सुण'र वो आदमी अेकदम ठंडौ पडग्यौ।"

' तो भाणेज ! चालती आई है रै आगै कोई नीं टिक सकै है। अबै दूजी कहाणी सुण !'

"अेक गुरुकुल में गुरुजी आपरा चेला नैं पढावता हा। हफ्तै में अेक दिन चेला साथै हवन करता हा। गुरुजी रै अेक अचपळी मिनकी ही। इण जोग गुरुजी जद हवन करता तो उणनैं कनै ई अेक खूंटै रै बाध्योडी राखता। जणा- जणा हवन होंवतौ उणसू पैला गुरुजी मिनकी री इण भात बदोबस्त कर देंवता हा।

केई बरस बीत्या पछै गुरुजी सुरग सिधारग्या। पण जणा हवन करण रो टेम आयौ तो चेला बोल्या, 'मिनकी नैं लावौ अर खूंटै सू बाधौ।' मिनकी अचपळी ही। इण वास्तै गुरुआणी भी नीं बोली। थोडै दिना पछै मिनकी भी मरगी।

अबै हवन होवण री दिन आयी तो चेला बोल्या, 'मिनकी नैं ला'र खूंटै बाध्या ई हवन होसी। आ सदा सू चालती आई है।'

गुरुआणी बोली, 'अरे बा तो मिनकी अचपळी ही, इण वास्तै थारा गुरुजी उणनैं खूंटै सू बाधता हा। पण मिनकी सू हवन री कीं लेणी-देणी कोनी।'

चेला बोल्या, 'आ किया होय सकै है। आ तो आज ताई चालती आई है। मिनकी खूंटै बाध्या ईज हवन होसी।'

छेकड गाव सू दूजी मिनकी ला'र खूंटै सू बाधी जणै कठेई जाय'र चेला हवन सरू कर्यौ।"

देख्यौ हीरा, चालती आई री कमाल ! डफा, चालती आई नैं ढावणौ घणौ अवखौ है।'

हीरै री भायली सुगनौ भी सहर सू उणरै साथै गाव आयोडौ हो। वो राज री नौकरी में बाबू लाग्योडौ है। वो बोल्यौ, 'हीरा ! थारा मामोसा साची कैवै है। जिकी लारै सू चालै है, बा आगै ताई चालती ई जावै है। जणा म्हैं बाबू बण'र दफ्तर में पूग्यौ तो म्हनैं पैलडी मत्र औ ई दिरीज्यौ कै लारली फाइल नैं देखो अर आगै वधौ। जणा लारली फाइल में मोटौ हाकम चिडी बैठा दी है तो पछै छोटै हाकम में आ कूत नीं है कै उणनैं खोटी बतायदै। वो तो लारलै हाकम री बात फटाक मान जावै क्यूकै चालती आई है। जणा म्हनैं भी कोई खोटौ काम करावणौ होवतौ तो म्हैं अबै जूनी फाइला टटोळण ढूकतौ कै इसौ काम पैला आळै मोटै हाकमा कर्यौ है। जणा फाइल मिल जावती तो उणनैं लगा'र मामलौ पेस करता ई फटाक 'हा' हुय'र ई आवती क्यूकै आ तो चालती आई है, इणनैं कुण रोक सकै ? हीरा ! देख भाईडा, इण चालती आई नैं राजा-महाराज अर बादसाह भी कोनी रोक सक्या तो आपा काई चितारी में हा। फिरोज तुगलक देख्यौ कै दरगावा माथै लुगाई-मिनख रा मेळा लागै अर बठै कोजा फेल हुवै है तो बीं हुकम निकाळ्यौ कै दरगावा माथै कोई लुगाई नीं जाय सकै। थोडै'क टेम ताई तो बीं रौ हुकम चाल्यौ पण पछै चालती आई है, रै आगै गोडा टेक नाख्या अर बादसाह नैं चुपचाप बैठ'र आपरै हुकम नैं टुगर-टुगर देख्या ई सर्यौ। इणी मुजब अलाउद्दीन खिलजी बादसाह इतरौ करडौ हो कै उणरै राज में कोई आधौ किलौ समान कम तोलतौ तो उणरौ आधौ किलौ मास काट लेंवतौ। बादसाह हुकम निकाळ्यौ कै जिका राज में भूडा-भूडा फैल हुवै है वै इण सराव नैं पीया ई हुवै है इण वास्तै जिण किणी नैं सराव पीवणी होवै तो बो सहर सू बारै कोस आतरै

जाय'र पीवै। औ हुकम केई दिना ताई तो चाल्यौ पछै इणरी फिसकी निकळगी। जणा बादसाह भी इण चालती आई नैं बख में नीं कर सक्या है तो थू अर म्हैं तो काई चितारी में हा ? थू थारै हियै कागसी फेर अर पछै ई की करण जोग बात करी नीं तो पछै टल्ला खावतौ फिरैलो।

हीरा ! आपा तो सहर में बुवा जासा पण मा'सा तो अठैई रैसी। गाव री बूढ़ी-वडेरया वानैं मौसा दे-दे'र वारै काळजियै में छेकला कर नाखसी। वा री जीवणी दोरी हुय जासी। अठीनै मा'सा नैं आपरै धणी री सोक अर बठीनै लोगा रै मौसा री दु खडौ। इण बुढापै में मा'सा सू दोलडा दुख झेलणा घणा अवखा हुसी। लोग ठौड-ठौड माथै वाता करसी। अेक ई वेटी हो, वो भी धनवान अर बाप लारै धूड उडायग्यौ। अै वाता मा'सा नैं ठाह कोनीं लागसी ?'

हीरी बोल्यी, 'वाह रे लोगा ! काळ सामै खडौ है पण आख्या मींचिया उणनैं देखै कोनी ? माय सू आत्मा हेला देवै है कै औ भूडी काम है पण थै सगळा उण आत्मा रै हेलै नैं सुणौ कोनी अर भेडा लारै भेडा बण'र टुरण लागौ हो। थै सगळा कैवौ तो म्हैं भेडा साथै भेड बण'र थारै साथै ई हू। जिकी चालती आई है, बा तो अवै चालती ई रैसी।'

पन्नजी बोल्या, 'साची कैवै है हीरा ! आत्मा री हेलौ म्हैं सुणा तो हा पण हळवा-हळवा सुणा हा। देख ! जणा कोई मिनख चकरीबव हुयोडौ अेकदम थमै तो वो धडाम सू धरती माथै पडै है। इण मुजब वो हळवा-हळवा थमै जणा वो पडै कोनी। म्हैं भी थारै साथै हा पण अै भूडी रीता अवै चकरीबव चढचोडी है, इण मुजब आनैं हळवा-हळवा वद करया ई सरसी।'

जीवतै सू मरचोडौ बत्तौ

मोडै गाव में रुगलै रा मा-बाप साव गरीब है। लै-दे'र अेक साळकी में ई गुजारौ चलावता हा। इण साल बिरखा धाकड हुई, इण जोग रात नैं साळकी धुड'र रुगलै अर उणरै मा-बाप माथै पडगी। भाया जोग सू रुगलौ तो बचग्यौ पण उणरा मा-बाप सुरग सिधारग्या। रुगलौ उण टेम छह बरसा रो हो। रुगलै रै आगै-लारै बीं रा मा-बाप ई हा। जणा रुगलो बिना मा-बाप बायरौ होयग्यौ तो पाखती रैवण आळा हीरजी उणनैं आपरै घर में वासौ दियौ।

रुगलौ जणा मोट्यार हुयौ तो वो हीरजी री रात-दिन चाकरी करै क्यूकै हीरजी उण माथै मोटौ उपकार करचौ हो। पण हीरजी अर उणरी जोडायत दोनू ई हया-दया बायरा हा। इण जोग रुगलै सू बै दिन-रात काम लेंवता पण रुगलो मोदीलौ नाक में सळ नीं घालतौ। रुगलौ हीरजी रा खेता में काम करै है, घर में काम करै। पण बदळै में उणनैं भरपेट रोटी ई नीं मिलै। गाव रा दूजा लोग भी रुगलै रै आगै-लारै कोई नीं हुवण सू उणनैं हेटी निजर सू देखै है। इण जोग रुगलो चारू कानी सू दुखडै में ई झूलै है। रुगलौ हीरजी रा सगळा काम करे है पण हीरजी अर उणरी जोडायत री मींगणी ई नीं भींजै है। बै रुगलै नैं गाळ्या काढण में कसर नीं राखै है। रुगलौ खेत सू काम कर आयौ तो हीरजी बोल्या, 'गाया नैं पाणी पाय ला।' गाया नैं पाणी पाय लायौ तो हीरजी री लुगाई बोली, 'ऊठियै नैं नीरी नाखदे।' रुगलै नैं अेक घडी ई सास नीं खावण देवै।

गाव रा सगळा लोग रुगलै नैं पगा में रुळावै। दावै जिकौ ई उणसू बेगार कढावै अर दावै ज्यू ई बींनैं कह नाखै। रुगलौ भोळौ-ढाळौ मिनख। मून धारचा सगळा री सुणै अर बारा काम करै है। जणा रुगलै नैं भूख लागै तो गाव आळा उणरै काम सटै आधीक रोटी री टुकडौ देय देवै है। गाव रै छोरा बीचाळै रामत रमतौ रुगलौ, तो बडा-बडा री चिलमा भरतौ रुगलौ। लुगाया नैं पाणी भरवातौ रुगलौ, गाव में ठौड-ठौड माथै रुगजी ई रुगजी निजर आवै है। पण खावण-पीवण री ठौड रुगजी रा अता-पता ई कोनी। इण सारू कोई रुगलै नैं कोनी पूछै।

आज सवारै-सवारै हीरजी अर उणरी लुगाई पाखती गाव में मेळी देखण गया है। रुगले नैं घर री सगळो काम भोळा'र गया है पण उणरै जीमण-जूठण री कीं सरतग कोनीं करग्या। दिनूंगै सू गाया-भैंसा, ऊठ-बकरड्या रा काम करतौ-करतौ दुपारै री टेम भूखा मरण लाग्यौ तो रुगलौ आखै गाव में भटक आयौ पण उणनैं खावण सारू कठेई रोटी नीं मिली क्यूंकै घणकरा लोग तो मेळौ देखण उठग्या हा। छड्यौ-बिछड्यौ जिकौ हो वो रुगले जैडौ ई हो। इण जोग अेक ई धोती आळौ काई तो न्हावै अर काई निचोवै ? रात पड्या हीरजी अर उणरी जोडायत घरा बावड्या तो लुगाई बोली, 'अबे आपा मेळै में फिरणै सू थाकग्या हा, इण जोग जिकी मिठाई लाया हा वीं नैं जीमला अर दो पुडकल्या मेळै में बची जकी रुगले नैं देयदो।'

हीरजी रुगले नैं हेलो कर्‌यौ अर दो पुड्या उणरै हाथ में थमा दी। जणा रुगलै रै हाथ में दो पुड्या लागी तो बो समझग्यौ म्हारै छप्पन भोग रा भोजन लागग्या है। भूखा मरतौ रुगलौ दोनूं पुड्या रा दो कवा कर्‌या अर पाणी पीय'र सूयग्यौ।

थोडी ताळ ताई तो रुगले नैं थावस रैयौ पण गबरु रै दो पुड्या सू हींग-फिटकडी ई नीं लागी। अबै पेट में ऊदरा थडी मचावण लाग्या तो पछै बा लारौ ई नीं छोड्यौ। रुगलौ पाणी पी-पी'र जितरा कळाप करणा हा कर लिया पण जुलमण भूख उणरौ लारौ नीं छोड्यौ। इया उठता-बैठता उण आखी रात आख्या में काढ दी।

दिन ऊगता ई हीरजी रुगले नैं लेय'र खेत कानी टुरग्या। हीरजी रै लारै बैवतै-बैवतै रुगलै री आख्या आडौ अधारौ आवण लागै है। रुगलौ भूखा मरतौ तिरवाळा खावतौ खेत पूग जावै है। खेत में पूग'र ऊचै धोरै माथै झूपडी बणावण लागै है। हीरजी ऊचा चढ'र सैंतीर बाध रैया हा अर रुगलौ हेठै ऊभौ सैंतीर नैं सहारौ देय ऊचौ कर्‌यौ। सैंतीर ऊचौ धरता ई टूट्यो अर रुगले रै माथै ऊपर आय पड्यौ। रुगलौ भूखा मरतौ तिरवाळा तो खावे ई हो सैंतीर माथै पर पड्या लारै काई छोडतौ। चिन्हिक देर लटापट कर्‌यौ अर साव ठडौ होयग्यौ। गाव में हाकौ फूटग्यौ कै बापडौ रुगलौ मरग्यौ।

अबै रुगलै री लास पडी है अर लोग आपस में बतळावण करै है। रुगलौ भलौ मिनख हो। सगळा रै आडौ आवतो। इसौ मिनख तो जोया ई नीं लाधै। जणा ई मिलतौ, हसतौ ई लाधतौ। म्हे भी उणनैं म्हारै टाबरा ज्यू राखता हा। उणनैं आ ठाह नीं लागण दियौ हो कै वो बिना मा-बाप रौ है। म्हे उणनैं मा-बाप रौ प्यार दियौ।

रुगलै री आत्मा बोली, 'वाह रे गाव रा लोगा ! जणा म्हैं जीवतौ हो ता

थे पगा री ठोकरा में रुळावता हा अर म्हारे मरता ई कैडो'क रग बदळ्यो है। कैवो के इणनें म्हारे टाबरा ज्यू राखता हा, अरे म्हें जणा भूखा मरती, था कनै टुकडो मागती तो थे कैडी'क फटकारा लगावता हा ? कैवे है इणनें मा-बाप नें याद नीं आवण जोग प्यार देंवता हा। काई थारी वै गाळ्या ई प्यार हो काई ? वाह रे लोगा ! थारो भी कोई पार नीं पायो है ! जीवता नें थे ठोकरा में रुळावौ अर मरया पछै माथै उखणो हो।'

धूडी अर धापू पाखती गाव सू आय'र मोडै गाव में रैवण लागी। दोनू ई घणी चतर ही, पण उणरे आगै-लारै कोई नीं हो अर अबै वारी उमर ढळण लागी तो मजूरी भी नीं हुवे। वानें ठाह लाग्यो के हीरजी रे खेत रै धोरै माथै लारले महीनै रुगलौ मरग्यौ हो। जणा धूडी बोली, 'धापू ! अबै आपा की खावण-पीवण री जुगाड बैठावा, नीं तो भूखा मरसा।'

धापू बोली, 'बता, काई करा ?'

धूडी बोली, 'आपा रुगलै नें जगावा।'

धापू बोली, 'किया ?'

धूडी कैयौ, 'म्हें रुगलौ मर्‌यौ हो उण ठौड केस खिडा'र मूडे सू झाग उडावती अडी टिल्या मारसू तौ लोग भेळा हो जासी। थू खेता में भाजती रोळौ करी कै धूडी में रुगजी महाराज आयग्या है।'

धापू कैयौ, 'ठीक है।'

अबै धोळै दोपारा धूडी, रुगलौ मर्‌यौ हो उण ठौड पूगगी। आपरा केस खिडा'र टील्या मारण ढूकी तो धापू रोळौ घाल्यौ कै धूडी में रुगजी महाराज आय बिराज्या है।

थोडी'क ताळ में आखौ गाव हीरजी रै खेत रै धोरै माथै आ पूग्यौ। धूडी री आख्या रातीचुट है। केस बिखर्‌योडा है। मूडे सू झाग आवे है। अबै वा आपरे माथै नें इण मुजब घुमावण लागी कै बो चकरीवब हुय जावै है। लोगा नें भेळा होया देख'र धापू बोली, 'इणमें रुगजी महाराज आय बिराज्या है।'

लोग धूडी री औ रूप देख'र डरग्या। धूडी थूक उछाळती बोली, 'म्हारौ अठै थान बणावौ नीं तो गाव माथै बलाय आवण वाळी है। जे मगळवार-मगळवार म्हारी पूजा नीं हुयी तो गाव री मटियामेट कर नाखसू।' इत्तौ केय'र धूडी अैडा फैल कर्‌या कै गावआळा बोल्या, 'अै तो रुगजी महाराज ई है। सगळा हाथ जोड'र बोल्या, 'महाराज ! म्हा पर किरपा राख्या, आप ज्यू फुरमावोला, त्यू इ करस्या।' गावआळा भेळा होय'र तै कर्‌यौ कै अठै रुगजी री थान थरपीजसी। मगळवार नें पूजा हुसी जणा रुगजी महाराज धूडी में आया है तो धूडी पूजारण होसी।

अबै रुगजी री सागोपाग पूजा हुवण लागी। लोग चढावा लावण ढूक्या। रुगजी रै धोक लगावण लाग्या। धूडी रै सागे धापू रै ई मजा लागग्या। धूप, वत्ती अर माळावा सू हरेक मगळवार नैं रुगजी रौ थान सजाइजै। लोग भजन गावै। जणा रुगलै री आत्मा बोली, 'इण ससार में मरया पछै मिनख रौ अैडौ मान हुवै। रुगला, थू तो डफोळ ई रैयौ जिको जींवता लोगा री ठोकरा खाई। इण मुजब तो थू कदेई मर जावतौ तो थारौ कितरौ मान होंवतौ। इण धूडी-धापू रौ भी जवाब नीं है। आ सैणा-समझणा नैं ई कैडा'क वगचूचा बणाय नाख्या हे अर म्हारे नाम सू मजा करै है। म्हैं कोई आयौ, नी गयौ पण आ धूडी माडाणी इ म्हनें बुला लियौ। लोग कैडा'क भोळा-ढाळा है। जणा म्हैं जीवतौ हो तो इण गाव रौ बाळ ई वाकौ नीं कर सकतौ हो, अबै मरया पछै इणनैं मटियामेट कर नाखसू ?'

रुगलै री आत्मा भगवान सू अरदास करी, 'देखौ भगवान ! थारा लोग कैडी'क अचुळ-पचुळ बाता करै है अर थै बैठ्या-बैठ्या देखो हो ?'

भगवान बोल्या, 'रुगला ! म्हैं मिनखा नैं भेजौ दियौ है जिणसू वै जाण सकै कै कुणसी बात चोखी है अर कुणसी माडी ? जिका भेजै नैं काम में लेवै है वै तो इण अचुळ-पचुळ बाता सू दूर रैवे अर जिका आपरै भेजै नैं घर रै आळै में राख'र इण मक्कड-जाळ में भचवेड्या खावता फिरै है तो पछै गोपिन्दा खावता ई जावै है।'

रुगलौ बोल्यौ, 'जणा धूडी पागल री साग बण'र लोगा नैं धमकावण ढूकी तो सगळा जणा लदुरिया करण ढूका हा। अबै ठाह लाग्यौ जणा गुडा बण'र लोग लोगा नैं धमका'र वोट लेय'र राज थरपलै है। वाह रे लोगा ! अर वाह ओ धूडी, थारौ तो कोई जवाब ई कोनीं ?'

भगवान बोल्या, 'रुगला डफा ! थू तो विना कीं करया ई थारौ राज थरप लियौ है।'

रुगलौ बोल्यौ, 'भगवान, थै भी कणैई-कणैई मस्करी करण ढूकौ हो। म्हैं बठै कठै हू, बठै तो धूडी माडाणी राज कर रैयी है।'

भगवान बोल्या, 'रुगला ! थू इण पडपचा में क्यू पडै है। माडाणी-आडाणी म्हैं कोनी जाणू। थू सापरतेक पूजीज रैयौ है। म्हैं अठै बैठ्यौ देख रैयौ हू। देख खेल फरुकावादी ! भगवान बैठ्या उवास्या लेवै है अर रुगजी महाराज पूजीज रैया है। इण मुजब थू म्हासू भी वत्तौ।'

रुगलौ बोल्यौ, 'आप साच फरमावौ हो। इण पापी ससार में जीवतै मिनख सू मरयोडौ वत्तौ है।'

लटकता काम

सचिवालय माय हुकमसिंघ नाव रो बाबू डोढ हुसियार हो। वो काम-काज अर बातचीत में अैडो चतर हो के सगळा ई उणरा भगत बण जावता हा। हुकमसिंघ में सैं सू बडो गुण औ हो के वो काम लटकावण में पैले नम्बर माथै हो। इण मुजब कानून री जाणकारी हुया बिना औ काम हुवणो अवखौ हो। हुकमसिंघ नें बालपणे सू ई कानून जाणण रो घणी चाव हो पण घर री दसा चोखी नीं हुवण सू दसवीं पास कर'र बाबू री नौकरी पकडली। नौकरी लाग्या पछे भी वो जिको चाव कानून री बाता में हो, वो कम नीं हुयौ।

हुकमसिंघ काम लटकावण में इतरौ चतर हो के उडती चिडी रा पाखडा नैं काट नाखतौ। काम लटक्या पछे जिके रो काम हुवै बीं री जीव आकळ-बाकळ करण ढूकै है। जणा ताई उणरौ काम नीं हुवै है वो तपडका मारतौ ई फिरै है। इण मुजब जिके कनै उण मिनख रौ काम हुवै उणरै चादी ई चादी है। इण जोग हुकमै नैं सगळा हाकम आपरै कनै राखणी चावै है क्यूकै काम लटक्या पछै हाकमा री हाजरी बजाया ई सरे है।

हुकमै री बदळी धवन साहब करा लाया तो पैला आळो हाकम खुराणी मन्त्री कनै पूग्यौ अर अरदास करी कै हुकमसिंघ नैं म्हारै अठै ई रैवण दो। मन्त्रीजी पैली आळै हुकम नैं पलट दियौ। जणा धवन साहब पूठा भाज्या अर मन्त्रीजी नैं कैयौ हुकमसिंघ नैं म्हारै कनै ई राखौ। इण भाजा-नासी में मन्त्रीजी नैं की वैम पडग्यौ कै अै दोनू हाकम अेक बाबू खातर इतरा उतावळा क्यू हो रैया है ? मन्त्री मन ई मन विचार्यौ कै इण बाबू आळै काम में कीं दाळ में काळौ है। मन्त्री आपरै निजू सचिव नैं बुला'र कैयौ कै पतौ लगा इण हुकमसिंघ बाबू खातर अै हाकम इतरी खींचा-ताणी क्यू करै है, इणमें इसौ काई गुण है ?

सचिव आसै-पासै सू ठाह लगायी तो ठाह लाग्यौ कै हुकमसिंघ कानून रौ कीडौ है। इण मुजब औ काम लटकावण में इतरौ चतर है कै इणरौ काट्योडौ पाणी ई कोनी मांगै। सचिव मन्त्रीजी नैं सगळी बात बताय दी तो मन्त्री बोल्या, 'औ

तो घणौ काम रौ मिनख है। इण जोग इणरी बदळी आपणै महकमै में करलो।'
हुकमसिंघ मत्रीजी रै महकमै में आय विराज्यौ। अवै हुकमै री पाचू आगळ्या घी में ही अर माथौ कढाई में। करेली अर नीम चढग्यौ।

मत्रीजी बोल्या, 'हुकमा ! अवै म्हारी सगळी फाइला थारी मींट माय सू निकळ'र म्हारै कनै आसी। काम समझग्यौ है नीं ?'

हुकमौ बोल्यौ, 'हुकम !'

मत्रीजी हस'र बोल्या, 'हुकम तो अवै हुकमै रा ई चालसी। सगळी फाइला मत्रीजी कनै जावण सू पैला हुकमसिंघ री मींट माय सू निकळण ढूकी तो हुकमै मत्रीजी नैं कैयौ, 'जिकौ काम आपनैं सटाक करणौ हुवै उण कागज माथै दो चिड्या बैठा नाख्या। म्हैं समझ जासू कै कागद चिडकल्या ले उडी अर जिकौ काम लटकावणौ हुवै उण कागज माथै अेक चिडी बैठा दिया जिणसू म्हैं समझ जासू कै आ चिडकली उडण जोग कोनीं। वीं काम नैं तो लटक्या ई सरसी।'

हुकमौ इतरौ चतर हो कै वो ना जाणै कठै सू अैडा-अैडा कानून खोज-खोज'र लावतौ अर अैडा अडगा लगावतौ कै वीं काम नैं लटक्या ई सरतौ। हुकमै रै घरा लोगा री जमघट लाग्यौ ई रैवतौ। लोग हुकमै रै घरा आवता तो साथै सभाळ लावणी नीं भूलता। फेर भी बारी काम तो रुपिया दिया-लिया ई हुवतौ हो। हुकमसिंघ सैणौ-समझणौ मिनख हो, इण मुजब वो चौथ रा रुपिया चपरासी सू लेय'र मत्रीजी ताई पूगता करतौ। इण मुजब हुकमै सू सगळा राजी हा अर उणरी हाजरी भरता हा। महकमै में आई बात चारूमेर फैल्योडी ही कै हुकम तो हुकमै रा ई चालै है। इणसू आवण आळा लोग विचारता कै हुकमसिंघ सू घरा मिल्या विना काम पार नीं पडै अर वै हुकमै रै घर री रस्तौ पकडता।

आज सुवै-सुवै हुकमै री वेटी री सुसरौ अनजी गाव सू हुकमै रै घरा काम करावण जोग आया है। अनजी बोल्या, 'हुकमजी ! गाव आळा सगळा कागज पूरा कर दीना है अर कैयौ है कै थारी सगौ अबार ऊची ठौड मत्रीजी कनै विराजै है इण जोग म्हनैं भेज्यौ है कै सटाक काम करा लासी। अबै थे औ काम सटाक करा दो तो म्हारी साख रैसी।'

हुकमौ बोल्यौ, 'काल करासा। अबार तो बैठौ, चाय-पाणी पीवौ।'

अनजी भळै बोल्या, 'सगळा कागज पूरा करा'र लायौ हू। बस मत्रीजी रौ हुकम ले जावणौ है।'

हुकमौ सगोजी री घणी ई मिजमानी करै है अर रात नैं सूवती टेम

बोल्यौ, 'काल चार बज्या दफ्तर आय'र मन्त्रीजी रै हुकम री पानी लेवता जाया।'

हुकमौ दफ्तर पूग'र अनजी री कागज जिको औ काम करतौ हो उण बाबू नैं दियौ अर बोल्यौ, 'औ काम म्हारी छोरी रै सुसरै री है, फाइल फटाफट ला।'

अेलकार छोरी रै सुसरै री नाव सुण्यौ तो दौड्यौ-दौड्यौ गयौ अर फटाफट फाइल ले आयौ। जणा हुकमौ बोल्यौ, 'इण माथै म्हैं बोलू ज्यू लिख।'

ज्यू हुकमजी बोल्या, त्यू ईज अेलकार लिख दियौ। लिख्या पछै अेलकार बोल्यौ, 'औ काम तो लटकग्यौ है।'

हुकमौ बोल्यौ, 'लटक्या बिना आपारौ काम किया चालसी ?'

अेलकार कैयौ, 'पण आप तो कैवता हा कै औ तो घर री काम है?'

हुकमौ बोल्यौ, 'लिछमी आगै किसौ घर री काम ? औ सगौ छोरी रै ब्याव में म्हासू गिण-गिण'र अणूता रुपिया लिया हा। उण टेम म्हैं उणरै घर री कोनीं हो ? आ भी हियै उतारलै कै अेक घर री काम कर्‌या पछै डफा आपा कित्ता हा ? सगळा रे घर री काम करण ढूकग्या तो पछै कमा लिया।'

हुकमौ बोल्यौ, 'म्हैं मन्त्रीजी नैं भी मूर्खसमझावणी देयदी है, इण ससार में कोई घरबार री नीं है। जे थै लक्ष्मी सू दूर रैया तो पछै आ मत्री री कुरसी घणी आतरी दीखैली। थै भूवाळी खावता ई फिरौला।'

चार बज्या सगोजी आया तो हुकमै बारै आवता ई चाय मगवाई। कुरसी माथै बैठा'र फाइल पढ'र अैडा नाटक कर्‌या कै मत पूछौ। अेलकार नैं झाड लगावण ढूका, 'थनैं म्हैं कैयौ हो नीं कै औ काम म्हारै सगै री है, फेर भी थू अडगा लगा'र लायौ है। मन्त्रीजी कनै ले जावू तो इण काम री फिस निकळ जासी।'

अेलकार बोल्यौ, 'औ अडगौ साचो है। नीं मानौ तो सगोजी नैं पढाय दौ।'

सगोजी बोल्या, 'हू काई पढ्, जणा औ कैवै है तो साची ई होसी।'

हुकमै अेलकार नैं कैयो, 'जा फाइल अठेई पडी रैवण दै।' फाइल पढ'र बोल्यौ, 'बापडो कैवतौ तो साची ई हो।' फाइल आपरी अलमारी में राख'र बोल्यौ, 'चालौ, घरा चाला ! बठै ई बात करस्या।'

रात नैं रोटी जीम-जूठ'र दोनू सगा बाता करण नैं बैठ्या तो हुकमौ बोल्यौ, 'किसोक बगत आयौ है ? हाथ-हाथ नैं खावण ढूकौ है। अेलकार नैं ठा है कै औ काम म्हारै सगै री है पण लेवण री राळ अैडी लागी है कै कोई हुवौ, लिया बिना काम करै ई कोनीं ? फाइल रै रुपिया रा पख लाग्या ई बा उडण ढूकै है।'

सगौजी बोल्या, 'मालका ! औ अडगो तो थै मिटावो नीं तो कात्यौ-पींद्यो कपास हुय जासी।'

हुकमसिंघ बोल्यौ, 'अेलकार नें हजार रुपिया दिया काम हुवण री आस है।'

इतरौ सुणता ई सगोजी फटाफट अटी ढीली करदी। उणा हुकमै नैं हजार रुपिया पकडाय दिया। हुकमौ बोल्यौ, 'थै अेक घंटै पछै दफ्तर पूग जाया अर थारौ कागज लेंता जाया।'

अनजी ठीक अेक घंटै पछै हुकमै कनै जाय ऊभा तो हुकमै वानें उणा रौ कागज झटाक पकडा दियौ। सगौजी बोल्या, 'वाह हुकमजी ! काम करा नाख्यौ। नीं तो म्हैं गाव में मूडो देखावण जोग नीं रैंवतो।'

मत्रीजी रौ बाळगोठियौ भायलौ सावतौ आपरो काम लेय'र गाव सू मत्रीजी रै घरा पूग जावै है। मत्रीजी बोल्या, 'आव सावता ! किया आयौ ?'

वो बोल्यो, 'अेक चिन्हैसीक काम जोग आयो हू। आ अरजी लौ, इणमें सो कीं लिख्योडो है।'

मत्रीजी कागज माथै अेक चिडकली बिठा नाखी अर आपरै निजी सचिव नैं कैयौ, 'औ म्हारौ बाळगोठियौ भायलो है, इणरौ काम करणौ है। सावता ! थू न्हा-धो'र रोटी जीम। म्हैं पाच दिना ताई कनलै गाव में मीटिंग अर मीटिंग पछै बेटी सू मिल'र आवू हू।'

सावतौ पाच दिना पछै पूठौ गाव सू आयो हो के आज म्हारौ काम करा'र ले जासू। सावतो मत्रीजी रै महकमे में मिल्यौ तो मत्रीजी उणरी फाइल मगाई अर पढ'र बोल्या, 'सावता ! थारौ काम तो लटकग्यौ, लै थू ई पढले।'

सावतौ पढ'र बोल्यौ, 'ओ अडगो तो साचौ ई है।' सावतै रा बठे सौ घडा ढुळग्या अर मूडौ पिलावतौ बोल्यौ, 'म्हैं गाव जावू हू, अडगौ ठीक करा'र लावू हू।'

सावतौ पूठो गाव सू कागद लेय'र आयौ तो मत्रीजी बोल्या, 'अबार तो म्हैं दस दिना सारू बारै जावू हू। दस दिना पछै थू पूठौ आय जाइजै।'

सावतौ दस दिना पछै पाछौ गाव सू आय'र मत्रीजी सू मिल्यौ तो मत्रीजी फाइल मगाई अर पढ'र बोल्या, 'भाईडा ! काम तो फेरू लटकग्यौ, अबकाळै दो अडगा लाग्या है। इया नैं ठीक कराया बिना काम हुवै कोनी।'

सावतौ होटल में कमरौ लेय'र उणमें बैठ्यौ-बैठ्यौ विचारण लाग्यौ कै

जद फाइल में पैलो अडगौ लाग्यौ तो हो पछै उण टेम अै दो अडगा लारै कठै रैयग्या हा ? केई ताळ सोचया पछै हियै कागसी फेरी अर मन ई मन बोल्यौ, सावतिया ! डफा, अै अडगा तो जाण-बूझ'र लाग रैया है अर थारौ बाळगोठियौ भायलौ काना में कवा लेवै है। डफा ! अबै कोई दूजी तरकीबा लगा जणा ई काम हुसी। माटी रै माधौ रूपी इण मत्री रै लारै रैसी तो थारौ काम हुयौ ई जाणी।

सावतौ विचारा री इणी घाण-मथाण में बारै आयौ। बारै आवता ई उणनैं उणरौ पुराणौ भायलौ मगजी मिलग्यौ। दोना में रामा-स्यामा होया। इण पछै मगजी पूछ्यौ, 'सावता ! थू अठै काई करै है ?'

सावतौ बोल्यौ, 'अठै म्हारै बाप नैं रोवू हू। मत्री म्हारौ बाळगोठियौ भायलौ म्हारै में अैडी करी है कै म्हैं गाव अर इण सहर विचाळै आज अेक महीनै सू भचबेड्या खावतौ फिरू हू। ना इनै री रैयी अर ना बिनै री।'

मगी बोल्यौ, 'कै देख सावता ! म्हारौ अेक पग अठै तो दूजो गाव में रैवै है। म्हैं इण मत्रिया सू लेय'र चपडास्या तक री रग-रग जाणू हू। थारै भायलै मत्री कनै हुकमसिघ नाव रौ अेलकार है। उणरै सामी थारा मत्री-वत्री कीं नीं है। वठै तो हुकम हुकमै रौ ई चालै है। थू म्हनैं हजार रुपिया दे, फटाक हुकम हुकमै कनै सू लाय'र थनैं देयदू।'

सावतौ बोल्यो, 'भाईडा मगजी, हजार रुपिया तो म्हारै आवण-जावण में ई लागग्या है। पण ले अै हजार रुपिया, काम करायदै तो थारौ राम भलौ करै।'

मगजी बोल्या, 'रुपिया साथै नई अरजी लिख'र दे।'

अबै मगजी नई अरजी अर रुपिया लेय'र हुकमै कनै पूग्या तो हुकमौ बोल्यो, 'काल चार वज्या हुकम ले जाया।'

दूजै दिन सावतो अर मगजी चार वज्या दफ्तर पूग्या तो सामी मत्रीजी मिलग्या अर बोल्या, 'सावता ! थारौ कागद लेजा, म्हैं साइन कर दिया है, थू सगळा अडगा दूर कर दिया है।'

सावतौ नस रौ रळकौ दियौ अर फटाफट हुकमै कनै जाय'र बोल्या, 'हुकमजी हुकम तो थारा ई चालै, नीं तो काम नैं लटक्या ई सरै है।'

जीवण रौ गोरखधंधौ

मरू गाव में मूळजी रौ घर आसै-पासै रा गावा में मानीजतौ घर हो। मूळे रै अेक बेटौ देवौ अर दो बेट्या ही। देवौ जणा अठारे बरसा रौ होयौ तौ अेक दिन मूळजी आपरी जोडायत नैं कैयो, 'देवौ अवै मूछा रै वट देवण ढूकौ है। अवै इण मोट्यार रा हाथ पीळा करया ई सरसी। पण पैला औ दसवीं पास करलै तो गोट गाव रै मोडजी री बेटी झमकू सू इणरौ ब्याव कर देवा। लारलै साल मोडजी मेळै में मिल्या तो ब्याव-अेढै री बात हुई ही। म्हैं वानैं कैयौ हो कै छोरौ दसवीं पास करलै तो ब्याव माड देसू। अवै इणरै दसवीं रै इमतान में दो महीना ई घटै है।'

देवै री मा बोली, 'म्हैं तो आख्या फाड्या उडीकू हू कै कणै देवै रौ ब्याव हुवै अर कणा म्हैं बीनणी रौ मूडौ देखू।'

देवौ डागळै ऊभौ मा-बाप री वाता सुणै है। रात नैं देवौ आपरै कमरै में सोयौ तो झमकू नैं याद करतौ ई सूत्यौ। झाझरकै देवै नैं सुपनौ आयौ। सुपनै में देवै री जान गोट गाव पूगगी ही। झमकू सू ब्याव हुयग्यौ हो। पण ज्यू ई वो झमकू रौ मूडौ देखण सारू घूघटौ उघाडण ढूकौ तो मा हेलौ करयौ, 'देवला ! उठै कोनीं, सूरज मथारै आयौ है। अर देवै रौ सुपनौ चकनाचूर होयग्यौ।

देवौ अवै दसवीं पास करण जोग दिन-रात अेक कर नाखै है क्यूकै बापू कैयौ है छोरौ दसवीं पास कर नाखै तो ब्याव कर देसू। देवला ! जे भोड्या थू फेल होयग्यौ तो पछै झमकू रा सुपना ईज लीजै। इण मुजब देवौ दसवीं पास करण जोग दिन-रात अेक कर नाखै है अर मोदीलौ आखर में किलौ फतै कर ई लियौ। देवौ दसवीं चोखै नम्बरा सू पास करली है। अवै देवौ तापडा मारै है कै मोडजी री बेटी सू कणै ब्याव हुवै अर कणै म्हारी सुपनै री राणी सू मिलाप हुवै।

छेकड देवै री रामसा पीर सुणली। गोट गाव में रामदेवजी रौ मेळौ भरीज्यौ है। आज देवौ सुबै-सुबै ई फूल-फगरियौ बण'र गोट गांव में घर

कूचा-धर मजला करतो पूगग्यौ। अबै झमकू नैं वो किया देखे ? वो इण बाबत सोचै ई हो कै गोट गाव री उणरो भायली मानौ हेलौ पाड्यौ, 'देवा ! मेळो देखण नैं आयौ है काई ?'

देवौ पडूत्तर दियौ, 'हा।' पछै उण मानै सू पूछ्यौ, 'अठै मोडजी रौ घर कठै है ?'

मानौ बोल्यौ, 'वो तो म्हारै घर रै चिपा-चिप है।'

देवौ बोल्यौ, 'उणरी बेटी झमकू कैडीक है ? म्हारौ ब्याव उणरै साथै ई हुवण आळौ है। थू बता बा किसीक है ?'

मानौ बोल्यो, 'भाई देवा ! थू आगोतर में कोई चोखा करया जिकौ झमकू थनैं मिली हे। गाव री सें सू फूटरी-फर्री अर सैणी-समझणी छोरी है।'

देवौ वोल्यौ, 'यार उणसू मिलावण री जुगाड विठा।'

मानौ कैयौ, 'सोचण दे।'

इतरै में मानै देख्यौ कै झमकू मेळै में छमा-छम करती सोळै सिणगार सू सज्योडी आवती दीसी तो मानौ उणनैं हेलौ करयौ, 'झमकू ! ऐ झमकू !! इनै आव।'

झमकू भाजती थकी दोना कनै आय ऊभी हुई। देवौ झमकू नैं देखतौ ई रैयग्यौ। मन ई मन बोल्यौ, 'आ तो म्हारै सुपना री राणी, जैडी सोची वैडी ईज है।'

इतरै में झमकू मानै कानी देख'र बोली, 'माना, म्हनैं हेलौ क्यू करयौ?'

मानौ बोल्यौ, 'औ देवौ म्हारौ भायलो है। थारी जात रौ है। म्हारै साथै पढतौ हो। म्हा दोनू इण साल दसवीं पास करी है।'

झमकू बोली, 'तो म्हैं काई करू, ढोल बजावू काई ?'

मानौ बोल्यौ, 'ढोल भी बाजसी।' इत्ती कैय'र वठै सू भाजग्यौ।

झमकू देवा नैं पूछ्यौ, 'म्हारी जात रा हो ?'

देवौ कैयौ, 'हा।'

झमकू बोली, 'किणरा बेटा हो ?'

देवौ बोल्यौ, 'मूळजी रौ बेटौ हू। भरू गाव में रैवू हू।'

झमकू बोली, 'बापू थारै अर थारै बापूजी री बाता करै है। अठै क्यू ऊभा हो, घरा पधारो। रोटी-पाणी जीमौ। बापू सू बाता-चीता करौ। गाव सू थाक्या-मादा आया हो, कीं सुस्ता लौ।'

देवौ बोल्यौ, 'थू तो इतरी चाकरी करै है पण म्हारै गाव आय'र म्हनैं ओ मौकौ कद देसी ?'

झमकू बोली, 'जद थै बुलासौ !'

देवो बोल्यौ, 'म्हैं तो थनैं रोज सुपना में देखू पण आज म्हारा सुपना ई झूठा नीसरया। थू तो सुपनै आळी झमकू सू घणी फूटरी निकळी। म्हारो बापू थासू ब्याव करण जोग थारै बापू सू बात करली है।'

झमकू मुळकी अर हिरणी ज्यू छलागा मारती घर कानी भाजगी।

देवै अर झमकू रौ ब्याव गाजा-बाजा सू हुय जावै है। अेक साल अेक दिन जैडौ लाग्यौ। अेक साल पछै झमकू पेट सू दीखण लागी अर नवै महीनै मोभ रै बेटै नैं जलम दियौ। घर में सागोपाग हरख मनाईज्यौ। बधाया वाटी, डूमण्या गवाई। जीमण करया।

देवै री नौकरी लालगी अर झमकू रै पाच टाबर होयग्या। देवे रौ घर टाबरा सू भरयौ हो। बेटा-बेट्या रै खावण-पीवण, कपडा-लत्ता, पढाई-लिखाई जोग देवौ कमाई में अैडो लाग्यो ज्यू तेली रौ बळध लागे है।

दफ्तर में हाकम अैडौ आयोडौ हो कै वो ऊपर री कमाई री जुगत में हो अर देवौ साव साचौ मिनख हो। इण जोग देवै नैं दफ्तर में भी घणी अबखाई झेलणी पडती अर जणा घरा जावतो तो टाबर घणा अर आमद कम। इण मुजब देवौ रात नैं दूजी जगा काम पर जावतौ जणा चार पैसा टाबरा रा ब्याव करण जोग धणी-वहू जोडता हा।

बरस पचास ढळ्या अेक दिन देवौ अर झमकू आपस में बाता करण लाग्या। देवौ बोल्यौ, 'झमकू, आपा जीया तो अेक साल ई हा। पछै तो नौकरी अर टाबरा रै गोरखधधै में इतरा बरस लूणा-घाटी में ईज फस्योडा रैया। दोनू छोरा अर दोनू बेट्या रा ब्याव तो कर दिया है अबै इण छोटकी बेटी रौ ब्याव हुय जावै तो नेहचै सू जीवा।'

झमकू बोली, 'आज लालजी रौ कैयोडो तो है कै म्हैं अर म्हारी लुगाई रिस्तै री बात करण सारू आवा हा।'

लालजी रौ हेलौ सुण'र धणी-लुगाई, दोनू भाज्या अर लालजी अर उणरी जोडायत नैं माय बैठा'र सागोपाग खैरवाळी करी। बेटी री बात पक्की होयगी अर अेक महीनै पछै ब्याव हुवणी तै होयग्यौ। ब्याव मायरा सू देवौ अर उणरी लुगाई ससवा होया तो रिटाइर हुवण रौ टेम आयग्यौ। अबै देवौ कागज

पूरा करण रै गोरखधंधै में अळूझग्यौ। रिटायर होयौ तो धणी-बहू विचारै है कै दोनू बेटा रै घर कोनीं, इण मुजब आरै आसरा बणवाय देवा। दोना रा घर बणावणै में दो बरस लागग्या अर देवै रा सगळा रुपिया रिटायरमेंट आळा उणमें खरच होयग्या। लेय-देय'र देवै अर झमकू नैं पेन्सन मिलती ही बा ई रैयी। झमकू जणा लोगा सामै बोलती तो कैवती, 'म्हानैं काई चाइजै है, रोटी तो पैन्सन सू ई खा लेसा, पछै टाबरा खातर क्यू नीं लगावा ?'

देवौ अर झमकू सित्तर ढळग्या तो दोनू बेटा-बहुवा नैं खारा जहर लागण लागग्या। थोडे दिना ताई तो मा-बाप नैं बेटा-बहुवा चाव सू राख्या पण पछै बहुवा उणा नैं मोसा बोल-बोल अर गाळ्या काढ-काढ'र गींजा कर नाख्या। बात-बात माथै टोकणौ, बात-बात माथै झिडकणौ। बेटा मोगा बण्योडा देखै पण अेक आखर भी मूडै सू नीं निकाळै। देवौ बोल्यौ, 'झमकू ! अबै आपारौ अठै बसेपौ कोनी हुवै। इण मुजब आपा दूजी ठौड घर लेय'र रैसा, जणै ई जीवारी है। आपणी पेन्सन तो आवै ई है उण माय सू घर री किरायो देसा अर रोटी खासा।'

झमकू बोली, 'छोरत्या रा मायरा भरणा है, बै किया भरसा ? साथै आपानैं किरायौ ई देवणौ पडसी, दवाया रा रुपिया भी देवणा पडसी। खाली पेट भराई सू पार कोनीं पडै।'

देवौ बोल्यौ, 'थू साच कैवै है पण इणसू भी दोरौ बहुवा री गाळ्या सुणणौ हे। इण मुजब अबै अठै सू टुरत्या ई सार है।'

देवौ बेटा रै घरा सू आतरौ घर किरायै लेय'र रैवण ढूकौ। बेटत्या मा-बाप कनै आय'र घणी ई रोई तो देवौ बोल्यौ, 'रोवौ मत, जठै ताई थारा मा-बाप जीवता है थारा मायरा धूमधाम सू भरसा। म्हैं जाणू हू, थै तीनू गरीब हो। पण सावरौ आपणै साथै है, तो सो कीं ठीक होसी।'

देवौ अर झमकू बैठ्या-बैठ्या बाता करे है। झमकू बोली, 'दो महीना पछै बडोडी बेटी री छोरी रौ ब्याव हुवणौ तै होयग्यौ है। म्हैं थोडा-थोडा रुपिया बचा'र राख्या है कै चीज-वस्तु थोडी-थोडी भेळी करत्या ई सरसी।'

देवौ बोल्यौ, 'काई करा ? इण उमर में कोई उधार देवण आळौ भी नीं मिलै। छोरा मायरौ भरै कोनीं अर न ई बै छोरत्या रै घरै जावै। आपा नैं तो धूड खाय'र मायरौ भरणौ ई पडसी। देवौ बोल्यौ, 'झमकू अेक तो वो वगत हो जद म्हैं थनै ब्याव करनै लायो हो। म्हैं उण टेम इन्द्र भगवान सू भी अपणै आपनैं बत्तौ समझतौ हो। थारौ जिकौ म्हैं रूप देख्यौ तो जाण्यौ इन्द्रलोक सू परी उतर आई ही।'

झमकू बोली, 'थे भी म्हनैं जणा मेळै में मिल्या तो इन्द्र भगवान सू कम नीं लाग्या हा।'

देवौ बोल्यौ, 'पण झमकू ! आपा जीवण रै गोरखधधै री लूणा-घाटी में अैडा फस्या हा कै अबै मरिया ई निकळसा। काई करा, आपानैं मरचा ई नीं सरै अर जीया ई नीं सरै।' कैवता-कैवता देवे री आख्या में आसू उमड आया।

झमकू धीरज बधावती बोली, 'इया डाळा नाख्या किया पार पडसी। भगवान चिडी-कागले नैं भी चुग्गौ देवै है, आपा तो मिनख हा। बो ई देखसी।'

देवौ बोल्यौ, 'वो काई देखसी ? मायरौ सिर माथै आयग्यौ है अर पेसा रै जुगाड री अतौ-पतौ ई नीं है।' देवो माथौ झाल'र बैठग्यौ।

देवै रे माय सू हेलौ होयो, 'थू मोट्यार है। दाठीक रह दाठीक ! किकरकौ नाख्या सरै कोनी। औ जीवण रो गोरखधधो चालतौ आयो है अर चालतौ रैसी। इण जजाळ सू मरचा ई लारौ छूटसी। मिनख रौ काई बूढो हुवै है। बूढौ तो उणरी मन हुवे है। हालात तो जैडा है, वैडा ई रैसी। बदलण आळो थारौ मन है, इण जोग उणनैं बदळ। अबै थू कीं काम करण रौ सोच ! थू देखै कोनी कै पाणी मेलौ क्यू नीं हुवै, क्यूकै वो बैंवतो रेवे है अर 'बहता पानी निर्मला।' पाणी आडी पाळ क्यू नीं ठेरै क्यूकै वो बैंवतो रैवै है। पाणी अेक चिन्हिक छाट, छाट सू झरणौ, झरणै सू नदी, नदी सू महा नदी अर महा नदी सू समदर कींकर बण जावै क्यूकै वो बैहवै है।

देवौ मोदीलौ जीव नैं सैंठौ कर आपरै भायलै रामजी कनै गयौ। रामजी रै पचासू कारखाना चालता हा। दोनू भायला मिल्या तो पछै आगै-पाछै री बाता हुवण ढूकी तो बगत री ठाह ई नीं पड्यौ। दोपारै रै टेम री खाणौ खावण री बगत होयगी तो दोनू भायला साथै ई जीम्या। जीम्या पछै देवौ कीं कैवण जोग सकौ करचौ तो रामजी जाणग्या अर बोल्या, 'थू कीं कैवणौ चावै है पण म्हनैं लागै है कै थू सकौ कर रैयो है ? कीं मोगम खोल !'

जणा देवौ छोरा सू लेय'र छोरचा रै मायरै जोग सगळी बाता बतायदी अर बोल्यौ, 'आयौ तो हू था कनै काम मागण नैं हो पण थारी इतरी अपणायत देख'र कीं कैय नीं सक्यौ।'

रामजी बोल्या, 'डफा ! थू तो म्हारी सगळी अबखाई दूर कर नाखी है। पैलडो मुनीम सुरगा सिधारग्यौ हो जणा म्हैं लारले महीनै दूजौ मुनीम लगायौ हो। उणरी साख तो केई जणा भरी ही पण वो अेक महीनै में ई लाखा री घाटी देय'र

भाजग्यौ। अबै इण अबखाई में हो कै ईमानदार मिनख कठै सू लावू। थारी सातरी साख है अर म्हैं थनैं नेडै सू जाणू हू, काल सू ईज काम समाळलै।'

देवी घरा आय बुढापै में ई झमकू नैं बाथा भरली। पण बुढापै में हाथ-टाग कीरतन करण ढूका, इण मुजब दोनू जमीन माथै आय पड्या। दोना रा हाडका खळकीजग्या। झमकू टसकती उठी अर बोली, 'थारी साठी बुद्धि नाठी है। बुढापै में अैडी काई लाधग्यौ कै म्हारा हाडका तोड नाख्या।'

देवी बोल्यौ, 'रामजी रै अठै मुनीम री नौकरी मिलगी है। अबै देख छोरया रा मायरा कैडा'क भरू। अेक महीने री तनखा दस हजार है।'

झमकू बोली, 'हाड टूटण री धोकौ कोनीं, छोरया तो सुख सू रैसी। वाह रे सावरिया ! थू इण जीवण रै गोरखधधै में अैडा फसाया हे कै निकळणौ चावा तो ई नीं निकळीजै। काई थारी उमर हुई है पण मायरा रै जजाळा में अैडा फस्या हो कै इण गोरखधधै सू निकळणौ दौरौ घणौ है।

आदमी कमावै क्यू, जीवण खातर। आदमी जीवे क्यू, कमावण खातर। इणी गोरखधधै में मिनख आपरो सगळौ जीवण खपा नाखै है।

नीद

पाटण गाव में भोळै री मा, भोळौ अर छोटी बैन रळ-मिल'र रैवै है। लोगा रै खेता में मजूरी कर-कर'र आपरौ पेट पाळे है। भोळौ गवरू धुथकारो नाखण जोग हो। भोळौ जणा मूछा रै बट देवण लाग्यौ तो मावड बोली, 'भोळा! थारा सगळा साथी-सगळ्या रो ब्याव होयग्यौ हे अर थू अजै ताई कवारौ ईज बैठ्यो है। चार-पाच बरस ओरू निकळग्या तो पछै थारो ब्याव हुवणो ई अबखौ हुय जासी। गाव री मजूरी सू तो आपणो पेट ई पळसी। थू सहर जा'र रुपिया कमा'र नीं लासी तो पछै थारो ब्याव मसाणा में ईज हुसी।'

भोळौ बोल्यो, 'ठीक है मा ! म्हैं काले ईज सहर चल्यौ जासू।'

मावड दिन ऊगता ई भोळै नैं खावण-पीवण रो सामान सभळा दियौ। भोळौ काधै लीनी लोटडी, गमछो माथै बाध, हाथा लीनी डागडी, पगा मोजडी पहरने सहर कानी टुरग्यौ। गेले में रागळ्या करतौ गोरवद लुबावै है कै मारग में कोजू काकौ सामी धक्यो। भोळै नैं पूछ्यो, 'आज सुबै-सुबै किने चाल्यौ ?'

भोळौ बोल्यौ, 'दिसावर कमावण जावू हू।'

कोजू बोल्यौ, 'सहर जावै जिको तो चोखौ पण ठगा रै सहर में थू ठगीज ना आई। डफा ! हियै चेतौ राखी, नहीं तो पछै गोपिन्दा खावतौ ई जावैलौ।'

भोळौ धर कूचा-धर मजला करतौ-करतौ सिझ्या पडता-पडता सहर में जा बड्यौ। सहर में ठैरण जोग ठौड खोजता-खोजता आखर में अेक मिदर देख्यौ। भोळौ मिदर रै अेक कूणै माथै बैठ'र सुसतावण लाग्यौ। थोडीक देर पछै रोटी जीम'र सूवण ढुकौ तो बीं देख्यौ कै मिदर आगै लोग भेळा हुवण लागै है। भोळौ बैठौ होय'र देखण लाग्यौ कै अठै काई बात है ? अेक मिनख धोळा-धख गाभा पैरयोडौ पाटै ऊपर आय विराजै है। लोग उणरा प्रवचन सुणण नैं लाग्या तो भोळौ भी मिनखा में रळ'र उणरा प्रवचन सुणण लाग्यौ। जणा महाराज बोलण लाग्या तो भोळै नैं लाग्यौ कै महाराज रै मूडै यू फूल झडै है। भोळौ प्रवचन में अैडौ मगन हुयौ कै बींनैं सुध-बुद्ध ई नीं रैयी। वो विचार्यौ, गाव में अैडा प्रवचन

नीं सुण्या। प्रवचन पूरौ होया भोळै नैं चेतौ होयौ तो लोगा साथै उठ'र महाराज रै पगा लाग्यौ अर प्रसाद लियौ। महाराज भोळै कानी देख'र बोल्या, 'थू भाया, नूवौ मिनख लागै है?'

भोळौ बोल्यौ, 'म्हैं पाटण गाव सू सहर में कमावण सारू आयौ हू।'

महाराज पूछ्यौ, 'थू कठै वासौ लीनौ है ?'

भोळौ हाथ जोड'र बोल्यौ, 'सामलै कूणै में।'

महाराज बोल्या, 'जणा थू भगवान री सरण में ई आयग्यौ है तो अबै थू किणी बात री फिकर मत करा। सगळा री बेली म्हारौ सावरियौ है। सामी बा चौथडी है नीं, बठै बासौ लेयलै।'

भोळौ महाराज रै पगै लाग'र बोल्यौ, 'म्हा पर बडी किरपा करी हो।'

भोळौ आखौ दिन मजूरी करै है। सिझ्या पड्या महाराज रो प्रवचन सुणै है अर रात नैं नींदा फटकारै है। नींद भी अैडी फटकारै है कै आख दिनूगै जावती ई खुलै है। आज भोळै नैं जणा तिस लागी तो पाणी पीवण नैं आधी रात नैं उठ्यौ। पाणी पीवण नैं नळ माथै पूग्यौ तो बो देखे है कै दूसरी मजिल माथै अेक कमरै में चानणौ जगै है अर अेक मिनख-लुगाई इनै सू बीनै घूमता निगै आया। दूजै दिन भोळै नैं भळै तिस लागी तो बो देख्यौ कै बै ई मिनख-लुगाई आधी रात नैं कमरै में चानणौ जगा'र घूम रैया है। औ देख'र बो दिनूगै उठता पाण आस-पडोस्या नैं पूछ्यौ कै सामलै कमरे में कुण रैवै है ? तो लोगा उणनैं बतायौ सेठ-सेठाणी रैवै है।

भोळौ सेठा कनै जाय'र बोल्यौ, 'सेठा थै रात नैं सोवौ ई कोनी काई? म्हैं दो दिन सू आधी रात नैं देखू हू।'

सेठ बोल्या, 'थू कठै रैवै है भाई ?'

भोळौ बोल्यौ, 'वीं सामली चौथडी माथै। गाव सू मजूरी करण जोग सहर आयौ हू।'

सेठ बोल्यौ, 'बैठ ! थू तो म्हारौ पडोसी हुयौ अर अेक पडौसी रौ सायरौ दूजै पडोसी नैं देवणौ ई चाइजै। औ पडौसी रौ धरम है। थनैं म्हैं धधौ करण जोग अेक हजार रुपिया देवू हू। धधै में घाटौ लाग जासी तो म्हारा रुपिया गया अर फायदा हुवै तो थू म्हारा हजार रुपिया पाछा देय दीजै।'

सेठ तिजोरी माय सू हजार रुपिया काढ'र भोळै रै हाथ में पकडाय दिया। भोळौ सेठा रै पगा पड'र बोल्यौ, 'थै तो म्हारै खातर भगवान हो।'

सेठ बोल्यौ, 'अेक सरत म्हारी माननी पडसी।'

भोळौ बोल्यौ, 'थै अेक कहो हो, म्हैं तो आपरी सो सरता मानण नैं त्यार हू। हुकम करौ।'

सेठ बोल्यौ, 'जिकौ धधौ थू करे बीं री अेक हफ्तै ताई ठोक बजार बाजार में परख करी भलौ।'

भोळौ बोल्यौ, 'हफ्तौ भर देखभाळ'र ईज धधौ सरू करसू।'

भोळौ न्हा-धो'र फूल-फगरियौ बण'र होटल में जीमण बैठ्यौ तो आज दुगणी रोट्या जीमी। होटल आळौ बोल्यौ, 'भोळा ! आज थू जीमण भी जम'र जीम्यौ है। थारै मूडे सू अैडो लागे हे के थने कोई बुरयोडौ खजानौ मिलग्यो हे।'

भोळौ बोल्यौ, 'साच कैवे है भाई !' भोळो सेठ दिया जिका रुपिया बीं नैं बताय दिया।

आज भोळौ दौड-दौड'र काम करै तो मालिक उणनैं थुथकारो नाख्यौ। भोळै रा साथी भी भोळे नें काम करता देख'र देखता रहग्या। दोपारै में जणा भोळो जीम-जूठ'र थोडो आडौ होयो तो आख लागगी। भोळो सुपनौ देखण लागै– रुपिया सू धधौ कर मोटौ सेठ बण जासू, फूटरी-फर्री लुगाई लासू। गाव में हवेली बणासू। इतरै में अेक मजूर हेलौ पाड्यौ, 'भोळा ! काम रो टेम होयग्यो है, उठ परौ।' भोळौ उठ'र काम माथे लाग जावे हे।

रात नैं भोळौ सुवण लाग्यौ तो खूजे में रुपिया नैं सभाळे हे अर सू जावे है। ज्यू ई आख लागे कै हबीड उठे कै कोई रुपिया काढ तो नीं लेयग्यो अर भोळै रौ हाथ खूजे माथै आ पडै। भोळौ मन ही मन बोल्यौ, होटल आळै नैं रुपिया री वात वता दी, आ बडी चूक करी है। सूवता-जागता भोळै आखी रात काट नाखी। आज भोळौ काम माथे सूसत निंगै आवै है। पाखती आळौ मजूर पूछ्यौ, 'थारी जी सोरी कोनी काई ?'

भोळौ बोल्यौ, 'नहीं तो।'

मालिक बोल्यौ, 'भोळा ! आज सुस्त किया है ?'

भोळौ बोल्यौ, 'नहीं तो।'

रात पड्या भोळै बाई हालत हुवे है अर आखी रात आख्या में ही कटे है। आज मालिक बोल्यौ, 'भोळा, इया ई काम करसी तो थारी छुट्टी करणी पडसी।'

भोळौ सिझ्या पड्या सेठा रै घरै गयौ अर बोल्यौ, 'सेठा थारा रुपिया

सभाळो। औ रुपिया तो म्हारी दो दिना सू नींद उडा राखी है।'

सेठ बोल्यौ, 'क्यू भोळा ! थू पूछ्यौ हो नीं कै थै सूवौ ई कोनी काई ? थारी तो नींद ओक हजार में ई उडगी। डफा ! अठै तो केई हजार पड्या है। इण जोग नींद किया आवै ?'

भोळौ बोल्यौ, 'सेठा म्हैं महाराज नैं थारै घरा लासू, वै थानैं नींद लेवण री उकती वतासी।'

सेठ बोल्यौ, 'थारौ राम भलौ करै, जे म्हा सुख सू नींद लेली तो समझ म्हैं दोनू धणी-लुगाई सुरग में पूगग्या हा।'

भोळौ महाराज नैं ले'र सेठा रै घरा पूग जावै है। सेठ-सेठाणी महाराज रै सामी वैठ जावै है। महाराज बोल्या, 'सेठा म्हारी वाता नैं ध्यान देय'र सुण्या अर आनैं हियै में उतारया, थानैं सुख सू नींद आवैली। अनिद्रा रोग नाडी मडळ री ओक वडी डरावणौ रोग है। पुराणा में नींद नैं लक्ष्मी, पार्वती अर सरस्वती आद महासक्तिया रै साथै ओक रूप मान्यौ है। नींद सुखी जीवण री गारटी है। ओक बार रोम री वादसाह आपरै उमराव सू मिलण नैं गयौ। उमराव घोडा वेच'र सूत्यौ हो। बादसाह घणा ई हेला पाड्या पण वो नींद सू नीं उठ्यौ। बादसाह पूठौ गयौ परौ। सगळा बोल्या, 'उमराव तो गयौ काम सू। इण उमराव नैं तो अवै ओडी सजा मिलसी कै इणरी कुत्ता ई खीर नीं खावै।'

दूजै दिन उमराव, बादसाह सू मिल्यौ तो वादसाह कैयौ, 'म्हारो सगळौ राज थू साभलै पण म्हनैं थारी नींद देयदे।'

शेक्सपियर हेम्लैट में कैयौ है, 'बस नरक में ही नींद नीं आवै।'

कीं सुस्ता'र महाराज फेरू बोल्या, 'लो सेठा ! म्हारी रुद्राक्ष री माळा थानैं दू हू। जणा भी आपा सुरग में मिलसा उण टेम म्हनैं आ माळा पाछी देय दिया।'

सेठ बोल्यौ, 'औ किया हुवै ? मरयोडौ मिनख साथै कीं नीं ले जाय सकै।'

जणा महाराज बोल्या, 'सेठा ! इतरौ धन भेळौ कर क्यू साप बण'र कुडाळौ मारया बैठ्या हो, इण माया नैं धधै लगावौ जिकै सू गरीबा री पेट पळसी अर धरम पर थै चाल्या तो औ चौगणौ होसी। थै जैन हो नीं ?'

सेठ बोल्या, 'हा'

'जणा भगवान महावीर राज कुमार हा नीं ? धन भेळौ करया ई सुख

मिलती तो थै घर क्यू छोडता ? थै अपरिगृह री बात तो मानौ पण आचरण में नीं लावौ, इणीं जोग थारी नींद उडै है ? जणा रात नैं सुवण रै टैम माचे माथै चित सोय'र आख्या मींचलो अर मन ई मन आ कहौ कै हे ईश्वर ! थारै ई हाथ में जीवाणौ है, थारै ई हाथ में मारणौ है। थू राखसी वो ईज रैसी। सगळै सरीर नैं अैडौ ढीलौ छोडौ कै औ थारौ है ई कोनीं। ध्यान थारी आती-जाती सास पर टिका दो। सास री गिणती करता जावौ, जणा ताई नींद नीं आय जावै। दूजौ काम इया करचा कै थै मन नैं कैवौ कै हू देखू हू, थू जिकी भी सोचै है सोच। मन अेक जग्या थमतौ निगै आसी।

आ नींद जणा ई आसी जणा डर अर लोभ नैं थै छोड छिटकासौ, नीं तो थारी भी दसा बा ईज हुसी जिकी ऊदरै, मिन्नी अर बाज री हुई ही। अेक ऊदरै सामै मेवा राख दिया। ऊदरौ पींजरै में ढक्योडौ हो। दूजे पींजरै में मिन्नी ढकोडी ही उणरे सामै दूध राख दियो हो। तीजै पींजरै में बाज ढकोडौ हो अर उणरे सामै मास रौ टुकडौ राख दियौ हो। पींजरा कनै-कनै हा। इण जोग थै आपस में अेक दूजै नैं देख रैया हा। ऊदरौ, मिन्नी सू डरतौ मेवा नीं खा रैयौ हो अर मिन्नी बाज सू डरती दूध रै मूडौ नीं लगाय रैयी ही अर बाज लोभ रै मारे मास नीं खा रैयौ हो के मिन्नी नैं खावू या ऊदरै नैं। तीनू भूखा बैठ्या है। इण जोग सेठा रुपिया रौ लोभ अर इणरी चोरी रौ डर जणा ई निकळसी जणा थै आनें मानखै रै भले काम जोग लगासौ। थारो धन चोगणौ हुसी अर नींद भी सुख सू लेसौ।

अेक मिनख जवानी में दुनिया री से सू आछी चीजा लेवण जोग अेक विगत बणाई जिकै में सरीर निरोग, सुयश, धन-माया अर बळ नैं राख्या। वीं नैं अै नीं मिल्या तो अेक सैणै-समझणै डोकरै नैं बीं जाय'र आ विगत बताई तो वो डोकरौ हसियौ।

वो बोल्यौ, 'काई, इणमें कोई कमी रैयगी काई ?'

डोकरौ बोल्यो, 'हा' पछै डोकरै उण विगत रै ऊपर ई ऊपर लिख्यो– मन री शाति।

सेठा ! मन में नेहचौ नीं राखसौ तो पछै नींदा ली ई है ?'

टैम-टैम री बाता

जूनै वगत में घर रा मा-बाप, दादौ-दादी, काकौ-काकी सगळा रळ-मिल'र रैंवता हा। जणा टाबर रात नैं दादै-दादी अर नानै-नानी कनै सू कहाणी घणै चाव सू सुणता हा। दादौ-दादी या नानौ-नानी भी इतरै ई चाव सू कहाणी मठार-मठार कैंवता हा। कहाणी भर सियाळै इतरी मीठी लागती ही कै टाबर नींद रा मीठा गुटका लेंवता-लेंवता सूय जावता हा अर इण पछै दादौ-दादी या नानौ-नानी जिकौ भी कहाणी सुणावतौ हो, वो भी अैडी लाखीणी नींद लेंवतौ हो कै भाग फाटता-फाटता उणरी आख खुलती।

रतनौ रात नैं आख्या फाड्या उडीकै हो। वठीनै रतनै रौ दादौ भी रात पडण री बाट जोवै हो। आज दादै रा दोइता-दोइती भी आयोडा है। टाबरा रै कहाणी जीव री जडी है। बिना कहाणी सुण्या बिना बानैं नींद सोरी नीं आवै है अर इया ई बिना कहाणी सुणाया डोकरा री आफरौ ई नीं झडै है। डोकरा नैं इण उमर में ना खावण-पीवण अर ना पैरण-ओढण री दरकार पडै है। बै तो आ चावै है कै बारी कोई बाता सुणै, जणै ताई बारै पेट री बाता कोई नीं सुणलै, बठै ताई बारै जीव नैं जक नीं पडै। जे डोकरा री कोई बात नीं सुणै तो बै माय रा माय भुसळीजण लागै है। इण ढाळै ई पैला टाबर अर डोकरा घरा में सुख सू रैंवता हा।

टैम-टैम री बाता है। जणा टाबर बूढा-बडेरा सू कहाणिया सुणता-सुणता मोट्यार होय जावै है तो पछै आपरी अकल अर बूकीया रै ताण कहाणी बणावण लागै है। जणा बूढा हुय जावै तो या कहाणी टाबरा नैं सुणावण लागै है।

रतनौ आपरी पढाई पूरी कर'र पुलिस में थाणेदार लाग जावै है। रतनै रौ काम अबै चोरा अर डाकुवा सू रोजीना पडै है। रतनै नैं गाव रौ अेक पक्को सेसू आय'र कैयौ कै खडगसिघ डाकू आथूण कानी भाखरा में लुक्योडो बैठ्यौ है। उणरै साथै च्यार डाकू और है।

रतनौ आपरै सिपाइया नैं लेय'र आथूणै कानलै भाखर में जाय बड्यौ। आपस में डाकू अर रतनै विचाळै तडातड गोळ्या चालण ढूकी। चार सिपाई अस्पताळ पूगण जोग होयग्या। मौकौ देख'र खडगसिंघ भाज छूट्यौ। औ देख'र रतनौ भी खडगसिंघ रै लारै हो लियौ। लुका-छिपी होता-होता छेकड रतनौ अेकलौ ई खडगसिंघ नैं पकड'र राज सामै ला ऊभायौ। रतनसिंघ नैं राज इनाम दियौ अर ऊंचै ओहदै माथै बिठायौ।

आज रतनै नैं रिटायर हुया दस बरस होयग्या है। रतनौ डोकरौ बण्योडौ दिनूगै सूं सिंझ्या ताई अठीनै सूं वठीनै अर वठीनै सूं अठीनै घूमतौ-घूमतौ चकरीवव बण्यौ रैवै है पण किणी नैं भी आपरै काम सूं फुरसत कोनीं। इण जोग रतनै री वाता अबै कुण सुणै ? सगळा बोल बोल'र आपरी भडास निकाळै है। टाबर आपस में लड-भिड'र अर मोट्यार अर लुगाया आपस में बोल-बतळावण, हाकम अेलकारा नैं कह-सुण'र, अेलकार चपडास्या नैं कह'र अर चपडासी आपरी लुगाया नैं डाट-डपट'र भडास निकाळ ले है। पण डोकरौ इण उमर में ना बेटा पर अर ना ई डोकरी पर भडास निकाळण जोग रैवै है। इण मुजब बीं री आफरौ तो रात नैं टाबरा नैं कहाणी कैवण सूं ई झडै है।

मिनख रै मूळ में ठुकराई री भावना रचोडी-पचोडी है। इण मुजब वो हुकम चलावण जोग ठौडा जोवै है। इण काम नैं टाबर जिकौ पूरौ करै है, बीजौ दूसरौ कोई नीं कर सकै है। टाबर जणा डोकरा री बोली-बोली बाता सुणै तो पछै डोकरा री बाछा खिल जावै है। ओरंगजेब आपरै बापूजी नैं कैद कर्‌या पछै साहजहा नैं पूछ्यौ कै थारी काई इछा है जिकी म्हैं पूरी करूं ? साहजहा कैयौ, 'म्हैं टाबरा नैं पढासूं। इण मुजब टाबर भेज दै।' वो बोल्यौ, 'अजै ताई हुकम चलावण री आदत गई कोनी है।'

रतनौ रात नैं आख्या फाड्या उडीकै है। टेम-टेम री बात है। जणा रतनौ टाबर हो तो कहाणी सुणण नै आख्या फाड्या उडीकतौ हो। अबै कहाणी सुणावण जोग आख्या फाड्या उडीकै है। आ दिना में रतनै रा दोइता-दोइती भी आयोडा है। इण मुजब रतनै रा पोता-पोत्या अर दोइता-दोइत्या री जमघट लाग्योडौ है। सियाळै री रात पडता ई टाबर रतनै रै कमरै में आ धमकै है। टाबर सगळा रळ'र बोल्या कै म्हानैं कहाणी सुणावौ तो रतनौ बोल्यौ अजा म्हैं डाकू खडगसिंघ री कहाणी सुणावूं हूं। अबै मोदीली खडगसिंघ अर रतनै में जिकी

लपा-झपी हुई ही, उण वाता नैं मठार-मठार'र पुरसण लाग्यौ तो अेक टाबर बोल्यौ, 'जणा थारै सामी डाकू आयौ तो थै डरया कोनीं ?'

रतनौ बोल्यौ, 'डाकू तो म्हासू डरता हा। म्हैं खडगसिंघ नैं अैडी पटकी दी कै बींनैं छठी री दूध याद आयग्यौ हो।'

रतनै री जोडायत बोली, 'टेम-टेम री वाता है। अवै तो थासू उठ'र पाणी री लोटौ ई को भरीजे नीं। उण टेम आभै रा तारा ई तोड लावता हा।'

टाबर बोल्या, 'अबै डाकू क्यू नीं पकडीजे है ?'

रतनौ बोल्यौ, 'टेम-टेम री वाता है। पैला डाकू थोडा हा अर म्हा जिसा लोग घणा हा। अवै डाकू घणा है अर म्हा जिसा लोग थोडा है।'

आज सहर में उछव छायोडो है क्यूकै आज इण सहर री टाबर सै सू मोटौ हाकम बण'र आयो है। जिका उणरै नेडा-तेडा भी कीं सबध नीं राखता हा पण हाकम बणता ई वै कैवण ढूका कै म्हैं थारै काकै री बेटौ भाई हू। कोई कैवतौ कै म्हैं थारै मामे री बेटौ भाई हू। इण मुजब हर कोई हाकमा सू अपणै आपनैं आपौ-आप जोडलै है। हाकमा रै घरा सभाळ ले जाता कैवै है कै म्हैं थारै फलाणै मिनख रै काकौ लागू हू। इण जोग थे म्हारै घर रा हुया। हाकमा कनै अेक चतर मिनख करणौ रैंवतौ हो। वो ईज हाकमा रा सगळा काम-काज करण री कूची ही। इण जोग जणा वो लोगा नैं मिलतौ तो लोग उणनैं रामा-स्यामा जोरा सू करता हा तो वो कैवतौ, 'म्हैं कह देसू।' थोडाक आगै ओरू दुरया कोई रामा-स्यामा करतौ तो करणौ फेरू बोलतौ, 'कह देसू।'

आ 'कह देसू' सहर में अैडी चाली कै जिका भी रामा-स्यामा करै तो दूजौ फटाक कैवै, 'कह देसू।' आ कह देसू री वात जणा हाकम कनै पूगी तो हाकम उण डोढ हुसियार मिनख करणै नें पूछ्यौ, 'औ कह देसू री काई बबाळ है ? थनैं देख-देख'र सगळा कैवण ढूका है कै कह देसू। वता, आ कह देसू काई बलाय है ?'

वो बोल्यौ, 'हाकमा ! म्हैं तो कैवण आळा अर सुणण आळा, दोना रौ गुलाम हू। जिका केवै उणरी बात जिकै नैं कैवायौ है उणनैं कह दू हू।'

हाकम बोल्या, 'भोडचा ! थू इया-किया बगचूचौ हुयोडौ अैंगी-वैंगी वाता करै है ? अरे थनैं लोग रामा-स्यामा करै है अर थू कैवै कै हू कह देसू।'

अवै करणौ बोल्यौ, 'हाकमा ! थै कही जणा मोगम खोलणी ई पडसी।' जीव काठौ कर'र बोल्यौ, 'अै जितरा भी रामा-स्यामा करै है नीं, म्हनैं नीं करै

है। औ म्हारी कुरसी नैं रामा-स्यामा करै है। इण जोग म्हैं वानैं कहू कै म्हैं कह देसू अर कुरसी नैं आय उणरी अमानत उणनैं सूप दू हू। हाकमा, टेम-टेम री वाता है। जणा आ कुरसी म्हारै कनै नीं ही तो म्हनैं कोई रामा-स्यामा नीं करता हा। ज्यू ई म्हैं इण कुरसी माथै आय बैठ्यो तो लोग लटूरिया करता ठौड-ठौड माथै रामा-स्यामा करै है। अवै थै ई बतावौ कै औ रामा-स्यामा किणनैं करै है?'

हाकम बोल्यौ, 'थू बात तो पतै री कीनी है पण आ बता कै आ कुरसी भलौ करण जोग है कै बुरौ करण जोग है ?'

वो बोल्यौ, 'सावरौ मिनख जमारौ चोखा काम करण जोग दियौ है पण मिनख नैं औ भी हक दियौ है कै वो बुरौ काम भी कर सकै है। जणा मिनख बुरौ या भलौ काम जणा ई करसी जणा वीं कनै हथियार होसी अर औ हथियार थानैं-म्हानैं कुरसी री दियौ है। इण मुजब टेम रैंवता इण हथियार सू जितरौ भलौ कर सका हा तो आपा जीया जलम पासा। औ भलो-बुरै रौ माप-तोल हियै ताकडी तोल्या ई ठा लागै है। माय सू हेलौ हुवै है कै औ भलौ काम है अर औ बुरौ काम है। टेम माथै जिकौ हेलौ सुणले, वो तो तिर जावै है अर जिकौ लूणा-घाटी में तेली आळौ बळध बण'र भूवाळी खावतौ फिरै तो वो फिरतौ ई जावै है।

हाकम-चाकर रिटायर हुय'र घरा बैठ जावै है। दोनू दिनूगै-दिनूगै घूमण निकळ्या तो आपस में मिल-बैठ्या अर आगै लारै री बाता करण ढूका। चाकर बोल्यौ, 'देखौ हाकमा ! लोग आजकाल कैडाक मूडा मोड'र बुवा जावै है। रामा है ना स्यामा है।'

हाकम बोल्यौ, 'साच कैयौ है भाई, टेम-टेम री बाता है।'

करणौ बोल्यौ, 'आपा इण कुरसी सू चिप'र नीं बैठ्या तो अबै आपा नैं की नेहचौ है। जिका इण कुरसी रै चिप'र बैठ जावै है अर पछै टेम फुरया बीं सू दूर हुवै तो वानैं अैडा धवळका उठै है कै ना पूछ। पछै वारो खाणौ-पीणौ, उठणौ-बैठणौ, सूवणौ-जागणौ, सो कीं हराम हुय जावै है। थू-म्हैं तो फेरू भी ठीक हा। पण अै राजनेता जिका पाच साल पछै सडका माथै आ ढूकै, वारै कीं बाकी नीं रैवै है। पाच साल जणा वै मन्त्री री कुरसी माथै बिराजै तो पछै कार सू हेठै पग ई नीं धरै है। रात-दिन माल-मलीदा खावता-खावता पळगोट ज्यू अैडा पसरै है कै मत पूछौ। फूला सू हळका हुयोडा लोगा में घूमता फिरै है। जणा पाच बरसा पछै कुरसी खुस जावै तो पछै आरै अैडा धवळका उठै है कै काळजौ बळण ढूकै।

अे अैडा हुय जावै है कै जीव-मरण रै विचाळै लटकता रैवै है। आनैं बा पाछी कुरसी मिलै जणा ई आरै थावस आवै है। आरौ धरम-करम कुरसी ई है। कुरसी लेवण जोग अै नीं करणै आळौ काम भी करता नीं सकै है।

म्हारी भायलौ भैरजी परसू मिलग्यौ हो। वो पाच बरस पैला मत्री हो। आज सडका माथै खल्ला घसीटतौ फिरै है। म्हैं भैरजी नैं पूछ्यौ, 'काई हाल-चाल है ?'

वै बोल्या, 'मत पूछ भाई हाल-चाल, दोनू ई थू थारी आख्या सू देखै है। जणा म्हैं मत्री हो तो अै लोग जिका म्हनैं ठौड-ठौड माथै आख्या दिखावै है म्हारै लारै कुत्ता ज्यू पूछ हिलावता फिरता हा। पण टेम-टेम री बात है।'

म्हैं कैयौ, 'भैरजी ! जणा थै मत्री हा तो थारी आख खुली ही ? म्हैं था कनै म्हारौ चिन्होक काम लेय'र आयौ तो था कैडोक टक्कै-सो पडत्तर देय'र म्हनैं व्हीर कर्‌यौ हो। उण रात म्हनैं नींद नीं आई ही। म्हारी तो बा अेक रात आख्या में कटी ही पण था भल माणसा री केई राता दोरी कटाई है। अबै बोलो रात कैडीक कटै है ?'

भैरजी बोल्या, 'साच कैवै है भाई ! दिन तो लोगा सू बोल-बतळावण में कट जावै है पण रात दोरी ई कटै है।'

करणौ बोल्यौ, 'सुणो ! अेक दूहौ सुणावू हू'—

हियै उतारौ भैरजी, टेम-टेम री बात ।
जे टेम नैं भूलग्यौ, तो दोरी कटसी रात ।।

टेम-टेम री बात है। इण जोग भैरजी लारली बाता भूलौ। टेम किणनैं ई कोनी छोडै है। थे तो चितारी में ई काई हो ? अर्जुन जैडौ जोद्धौ भी बगत आगै अैडौ पागळौ हुवै कै मत पूछौ। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन नैं कैयौ, 'गोपिया नैं घरा छोड आव।'

अबै अर्जुन गोपिया रै साथै जा रैयो है। रोही में डाकू अैडा आ पड्या कै अेकी-अेक गोपी नैं उठाय लेयग्या। अर्जुन आ ईज सोचतो रैयग्यौ कै पैला किणनैं मारू, किणनें छोडू ? देख्यो टेम रौ कमाल ! तुलसीदासजी कैयौ है—

तुलसी नर का क्या बडा, समय बडी बलवान ।
काबा लूटी गोपिका, वै ई अर्जुन, वै ई बाण ।।

दु·खडै मॆ दु खडो

फागी गाव दूजै गावा बीचाळै सातरी हो। गाव रा लोग सैणा-समझणा अर आगूच री सोचण आळा हा। इण जोग बारी पूग राज ताई ही। परलै साल गाव में पोसाळ री थरपना कराली ही तो इण साल अस्पताळ खुलवाई अर डाक्टर री माग राखी। राज रो मत्री बोल्यौ, 'डाक्टर री ठौड थोडै टेम सारू थारै गाव रै अस्पताळ में चतर कम्पाउडर लगा देवा, वो थारै कीं अबखाई नीं आवण देवै।'

गाव आळा राजी होयग्या तो राज राजूसिंघ नाम रै मिनख नैं अस्पताळ में लगाय दियौ। राजूसिंघ जूनौ कम्पाउडर हो। इण जोग वो डाक्टरा नैं ई लारै छोडतौ। इण मुजब राजूसिंघ रौ नाव आसै-पासै रा गावा में आपरी ओळखाण राखतौ हो। जणा गाव आळा डाक्टर री माग राखता तो राज रा हाकम कैवता राजूसिंघ डाक्टर रा भोळा भांगै है। इण मुजब थानैं म्हैं अेक नर्स, जणा मौकौ लाग्यौ तो दे देस्या।

फागी गाव रै पाखती में पाटण गाव में लाधुजी री धापती गुवाडी ही। लाधुजी रा बडेरा राजघराणै में ऊचै ओहदै माथै चाकर हा। इण मुजब वा कनै मोकळी खेती-बाडी जोग जमीन ही। लाधुजी रै तीन छोरया अर तीन छोरा हा। मोभ री बडी ई बडी बेटी झमकू ही। झमकू रौ ब्याव बालपणै में ई कर दियौ हो। झमकू हाडळ-गुडळ अर फूटरी-फर्री छोरी ही। घर में खावण-पीवण नैं मोकळौ हो। इण मुजब चढती जवानी में झमकू हिरणी ज्यू छलागा मारती फिरती ही। अेक दिन भाजता-कूदता आपरै काकै सू खेता में खोटौ काम होयग्यौ।

जणा झमकू रै मुकलावै री बाता चालण लागी तो झमकू री मावड लाधुजी नैं कैयौ, 'सुणौ हो !'

लाधुजी बोल्या, 'काई कैवै है ?'

लाधुजी री जोडायत बोली, 'झमकूडी रौ पग भारी है, चार महीना चढग्या है।'

लाधुजी इतरौ सुण्यौ तो उणारै माथै पर जाणै आभौ आय पड्यौ। बानैं

चक्कर आयग्यौ। बै माथौ झाल'र जमीं माथै बैठग्या अर थोडी दे'र सुसता'र बोल्या, 'औ खोटौ काम कुण कर्यौ ? म्हैं उणनैं जीवतौ नीं छोडू।'

लाधुजी रै नाक सू काळै नाग जोधावर री फुफकारा माथै फुफकारा निकळण लागी। जोडायत बोली, 'अबै नेहचौ राख्या ई पार पडसी, नीं तो घर री पत जासी जिकी तो जासी, छोरी रौ जीवणौ अबखौ होय जासी, औ खोटौ काम थारी भाई ई कर्यौ है।'

लाधुजी इतरौ सुण्यौ तो दाता सू घट्टी पीसण ढूका तो पीसता ई गया। जोडायत बोली, 'म्हारै भाई चोरियै नें बुलावू, बो हुसियार है। बो पाखती गाव फागै रै अस्पताळ में ले जाय'र टावर नखा आसी जणा ई जिया जलम पासा नीं तो अबै ना मर्‌या में रैया अर ना जीवता में रैया।'

लाधुजी बोल्या, 'इसी भाई अर छोरी मर जावता तो आछौ हो। म्हारै गतागम में नीं आवै है, जिया थू ठीक समझै बिया ई कर। रुपिया चाइजै जितरा लेलै।

दूजे दिन सवारै-सवारै चोरू नैं बुलावण जोग लाधुजी री बहवड मिनख भेज दियौ। दिन ढळता-ढळता चोरू बैन रे घरा पूगग्यौ। रात नैं बैन-भाई ऊची-नीची बाता विचार सुबे-सुबै झमकूडी अर बीं री मामौ चोरू फागै गाव कानी टुरग्या। सिझया पड्या फागै गाव में बडग्या। अस्पताळ रै लागता ई कम्पाउडर राजूसिघ री क्वाटर हो। चोरूजी जाय राजूसिघ सू रामा-स्यामा कर्‌या। रामा-स्यामा पछै राजूसिघ पूछ्यौ, 'बोलौ काई बीमारी है ?'

चोरू बोल्यो, 'बीमारी लाठी है डाक्टर सा'ब ! म्हनैं माय आवण रौ तो कैवौ।'

राजूसिघ बोल्यौ, 'कुणसे गाव सू आया हो, काई नाव है ?'

'मोडे गाव सू आयौ हू, सीतू म्हारौ नाव है ?'

राजूसिघ बोल्यौ, 'माय पधार जावौ।'

चोरू आपरौ पैलडौ चमत्कार दिखा'र गाव-नाव बदळ नाख्या हा। राजूसिघ बोल्यौ, 'अबै बोलौ, काई काम है ?'

चोरू बोल्यौ, 'डाक्टर सा'ब ! थै म्हारी पत राखसौ तो म्हैं जीवूला, नीं तो म्हनैं कूवौ-खाड करणी पडसी ?'

राजूसिघ बोल्यौ, 'साची-साची मोगम खोलौ, इया लूणाघाटी रा चक्कर ना कढावौ।'

चोरू बोल्यौ, 'बा बारै बैठी है, जकी म्हारी छोरी है। इणरौ पग ऊक-चूक पडग्यौ है। अबै इणरौ पग भारी है। थै कीं किरपा करौ तो म्हा दोना री जान बचै।'

वो बोल्यौ, 'औ तो हत्या करण री काम है, हू औ पाप म्हारै माथै नीं लेवू।'

चोरू राजूसिघ रै सामी हजार रुपिया नाख'र लीलड्या गावण लाग्यौ। थै अबार तो अेक पाप सू बचण आळी बात करौ हो बाबलिया, पण जणा म्हे दोनू कूवौ-खाड करसा तो थानैं दोलडौ पाप नीं लागसी ?'

राजूसिघ कणई रुपिया कानी तो कणैई चोरू कानी देखतौ विचारा में डूबग्यौ। जणा लोभ आपरा टागडा पसारण लाग्यौ। चोरू घणौई चतर हो। बो उडती चिडी रा पखडा काटण आळौ मिनख हो। चोरू फटाक अेक हजार रुपिया ओरू राजूसिघ सामी नाख्या। राजूसिघ री आत्मा हेलौ कर्‍यौ कै औ भूडौ काम है। थू इण पाप रै कूवे में क्यू कूदै है ? तो राजूसिघ रो मन बुद्धि रौ सायरौ लेय'र बोल्यौ कै राजिया ! थू औ काम नीं करसी तो दूजो कर नाखसी। काम किणरा ई रुक्या है काई ? जीव री हत्या तो होवणी ई है। राजूसिघ जीव दाठीक कर'र बोल्यौ, 'छोरी नैं माय बुलायलै। औ काम आज अेक रात में हुय जासी। दिनूगै दोनू बुवा जाया।' राजूसिघ दो हजार रुपिया आपरै खूजे में घाल्या अर आपरै काम में लागग्यौ।

सुबै-सुबै राजूसिघ नेहचै सू दोना नैं ब्हीर कर'र चाय पीवण बैठ्यौ तो फेरू माय सू हेलौ होयौ के राजिया ! थू ओ खोटो काम कर्‍यौ है। राजू रौ दिनडौ इणी ऊचै-नीचै विचारा में बीत्यौ के ओ काम चोखौ कर्‍यौ कै भूडो? आखर मन बुद्धि री जीत हुवै अर राजू मन ई मन बडबडावै कै इण जमानै मुजब आछौ ई है।

राजूसिघ रै अस्पताळ में आज सरला नाम री नर्स बाई आया हे। सरला रै आगै लारै कोई नीं है। सरला आया पछै औ टाबर नखावण रौ काम बा सभाळलै है। जणा पैलडी बार सरला टाबर नखायौ हो तो उणरै माय सू हेलौ होयौ कै ओ खोटो काम है, पण फेरू जणा मन बुद्धि रळ'र कैयो कै थू बगनी होयगी है काई ? थारै इण ससार में कुण है ? थारौ बाप है तो औ पइसो अर थारी मा है तो औ पइसौ, थारौ बेटौ है तो औ पईसो। जे थू रुपिया रै ठोकर मारी तो बुढापै में भचबेड्या खावती फिरेली। सरला मन बुद्धि रै चक्करा में अैडी चढी कै चक्करी-बब होयगी।

सरला टाबर नखावण रै काम में चिन्होक ई सकौ नीं करती। इण मुजब उण कनै घणौई रुपियौ भेळौ होयग्यौ। राज कनै सरला री सिकायत पूगी तो वा रुपिया रै ताण सगळी जाचा नै ठडै बस्तै में बद करायदी।

आज सरला कनै दुर्गी नाव री छोरी नैं उणरौ बाप टाबर नखावण लायौ हो। दुर्गी सरला नैं कैयौ, 'नर्स बाई ! म्हारौ बाप माडाणी म्हारै सोहनै सू चिडण लाग्यौ है, म्हैं अेक दूजे नैं घणौई चावा हा। म्हैं आज भी उणरी हू अर आगोतर में भी उणरी ही रहसू। इण मुजब म्हा दोना रै प्यार री निसाणी नैं थै ना मिटावौ।'

पण सरला रै मूडै लोही लाग्योडौ हो। दुर्गी लीलड्या गावती रैयी अर सरला हया-दया बायरी आपरौ काम करती रैयी। दुर्गी अस्पताळ सू गई तो कूकती-कूकती सरला नैं दुरासीसा अर गाळ्या काढती ई गई।

राजूसिघ अर सरला दोनू रिटायर होयग्या अर आप आपरै घरा बुवा गया। दोनू अेक ई सहर में रैवै है। कणैई-कणैई दोनू मिल जावै है तो दु ख-सुख री बाता करण ढूकै है। राजूसिघ री छोटी बेटी सासरै में बळ'र मरगी। राजूसिघ माथै गाज पड्ग्यौ क्यूकै राजू रौ इणी बेटी सू घणौ लगाव हो। राजू री रोवता-रोवता आख्या सूजगी ही। जिका भी राजूसिघ कनै बैठण नैं आवै है वै राजू रै काळजे में ओरू तीर मार जावै है। जिको भी आवै बो आ ई कैवै कै बेटी काई ही, हीरौ ही। फूटरी-फर्री अर सगळा सू मिलनसार ही। जदकै साच तो आ है कै वै राजू री बेटी नैं देखी ई कोनीं ही। सासरै आळा रौ सत्यानास जावै जको बा फूल जैडी छोरी नैं बाळ नाखी। राजूसिघ अै बाता सुण-सुण'र रोवतौ-रोवतौ दिनडौ कोटै है। इण दिन नैं कटण जोग तो घरआळा राजूसिघ रौ साथ देवै है।

रात नैं जणा राजूसिघ सूवण नैं ढूकै तो नींद आख्या में बावडै ई कोनीं। इण मुजब अबै राजियौ अेकलौ ई रैय जावै। राजियौ सूतौ-सूतौ विचारण ढूको कै भगवान म्हनैं अैडौ दु खडौ क्यू दियौ तो वो आपौ-आप बोल्यौ, 'आ म्हारी छोरी इण मुजब मरी कै म्हैं झमकूडी अर रमकूडी रा टाबर नखाया हा। इनै तो बेटी रौ दु खडौ लारौ छोडै ई कोनीं अर जणा अेकलौ हुवै तो दूजी छोरया रा टाबर नखावण रौ दु खडौ खावै है। इणी दोनू दु खा में राजियौ झूलतौ हौ। इणी दिना में राजियै री जोडायत भी सुरग सिधार जावै है। बूढापै रौ सायरौ ई जणा गयौ तो राजियै रै हाडो-हाड बैठगी कै म्हैं दो टाबर नाख्या हा अर इण जोग म्हारी छोरी अर जोडायत म्हासू बिछ्डी है। हे भगवान ! म्हैं रुपिया रै चक्करा में आय'र अै खोटा काम क्यू करिया ? राजियौ दो दुखा सू भचवेड्या खावतौ-

खावतौ आखर मर पूरौ हुयौ।

राजियै रै मरया पछै सरला इतरी डरगी ही कै उणरी आख्या री नींद उडगी ही। सरला जणा राजियै सू आखर टेम में मिली तो वो घडी-घडी आ ई बात कही ही कै म्हैं वै दो टावर नखाया हा उणरी भगवान म्हनैं सजा देवै है। सरला विचारण ढूकी कै वीं तो दो ई टावर नखाया हा, म्हैं जिका नखाया उणरी तो गिणती ई कोनीं।

थोडैक दिना पछै सरला नैं बुढापै री रोग लागग्यौ। बुढापौ वो रोग है जिणरौ कोई इलाज कोनीं। कीं तो सगळौ सरीर जूनौ होय'र ढैवण लागै है जिकै में उणरौ माथौ भी साथै है। जणा चिन्होक रोग सरला नैं होवतौ तो बा औ सोचण-विचारण लागती कै औ रोग म्हनैं जणा ई लाग्यौ है कै म्हैं टावरा नैं नखा-नखा'र पाप करया है। अबै सावरौ बदळौ लेवै है। डाक्टरा नैं देखा-देखा धापी पण उणरौ रोग नीं मिटै। इया करता-करता सरला नैं कैंसर हुय जावै है। रात नैं घडी दो घडी आख लागै तो उणनैं सुपना आवै कै उणरै माचै माथै टावर ई टावर भेळा होय'र चढ जावै है अर उणरी छाती माथै बैठ'र घाटी दबावण लागै तो सरला हडबडा'र उठ-बैठै है। सरला अबै रात नैं अेकली बड-बडावै है। थू क्यू इण रुपिया जोग इतरा खोटा करिया ? औ रुपियौ अबै अठै ई रैय जासी। थारै साथै तो जासी कोनीं। अबै टावरा री हत्या ई थारै साथै जावसी। सरला आखी रात आख्या में काढै है। दिन ऊगता-ऊगता कीं आख लागै तो दूध आळौ आय हेलौ देवै तो सरला उठती मन ई मन बोली, 'नसडी टूट्या ! थनै अवार ई टेम लाध्यौ है, थोडी-सो ई जक नीं खावण देवै।'

दूध आळौ सरला कानी देख'र बोल्यौ, 'बाईसा ! रात नैं सूत्या कोनी काई ? थारी आख्या सूज्योडी दीसै है। जी सोरौ कोनी काई ?'

सरला बोली, 'भाया ! औ जी तो अबै मरया ई सोरौ होसी।'

सरला चाय बणा'र माचै माथै बैठ'र पीवै अर पाछी आडी हुय जावै। पुराणी बाता फेरू याद आवण लागी तो सरला बडबडाई, जुलमण पुराणी बाता म्हारी लारौ ई कोनीं छोडै काई ? जणा माय सू हेलौ होयौ कै सरला ! थनैं इण दोनू दु खा में झूलणी ई पडसी। रोग थारै सरीर नैं खावै है अर खोटा करोडा थारै मन नैं खावै है। सरीर रौ दु खडौ तो फेरू भी भुलाया भुलीजै है पण मन रौ दु खडौ तो मरया ई लारौ नीं छोडै है। इण जोग सरला थोडै दिना ताई ही जीवी अर पछै सावरियै रै घरा आपरै खोटा-खरा रौ हिसाब देवण पूगगी ही।

डूबी माथै तीन बास

लाखै गाव में इण बरस चौमासै में भरपूर बिरखा हुई। गाव रा सगळा ताल-तळाया तिरिया-भिरिया भरग्या हा। गाव रा टाबर झूलण जोग गाव रै बारै अेक छोटी नाडी में पूगग्या। भोळौ दूजै छोरा रै सायनौ हो पण वो सगळा सू डींगौ हो। इण मुजब नाडी में पाणी भोळै री ठोडी ताई पूगण जितरौ ई ऊडौ नीं हो। इण खातर भोळौ नाडी में चारूमेरा चक्कर काढ आवतौ हो। भोळौ नाडी रै बीचौंबीच पूग्यौ तो बठै अेक खाडौ हो जिकै में पग जावता ई पाणी भोळै री लीलाड रै ऊपर ताई आयग्यौ हो। भोळै रौ पग उण खाडै में फसग्यौ। भोळौ पग काढण सारू घणाई कळाप करया पण वीं री टागडी नीं निकळी। आखर भोळौ मर पूरौ हुयौ। दूजा छोरा देख्यौ कै भोळै री भोडकी ई दीखै है वो बारै आवै ई कोनीं तो वै भोळै नैं हेलौ देय देय'र धाप्या पण भोळौ टस सू मस ई नीं हुयौ। गाव रा छोरा गाव में जाय'र कैयौ कै भोळौ नाडी माय सू बारै ई कोनीं आवै, उणरी भोडकी ई दीखै है। गाव रा लोग भाज'र नाडी माथै पूग्या अर भोळै नैं बारै काढ्यौ तो देख्यौ कै उणरा पाख-पखेरू उडग्या हा।

चेनी बोल्यौ, 'आ किया हुई ? भोळौ पाणी में पूरौ तो डूब्यौ ई कोनीं। पाणी तो भोळै रै लीलाड ताई ही पूग्यौ हो फेरू भी औ मरग्यौ ?'

चादजी बोल्या, 'भाईडा ! जणा नाक ऊपरिया पाणी बहवण लाग जावै तो मिनख नैं मरया ई सरै है। पाणी नाक ऊपर दो आगळ हुवै कै चार आगळ हुवे चावै तीन बास हुवै, कीं फरक नीं पडै है। इण जोग कैयौ गयौ है कै डूबी माथै तीन बास है।

रात नैं धोरै माथै चेनौ, चादौ, सावतौ बैठ्या-बैठ्या आगै-पाछै री बाता करण ढूका तो चेनौ बोल्यौ, 'था सुणी कै नीं, आज काई होयौ ?'

चादौ बोल्यौ, 'काई ?'

'आज करणै री बेटी मा-बाप नैं कूट नाख्या है।'

सावतौ बोल्यौ, 'आ तो अेक दिन हुवणी ई ही। जणा करणै री बेटी दारू

पीवण लाग्यौ तो अेक दिन म्हैं उणनैं कैयौ हो, करणा डफा ! थारी लाडेसर दारू रा घूट लेवण ढूकी है अर रुळियार छोरा साथै रळग्यौ है, टेम रैवता थका थू की जतन कर लेसी तो कर लेसी नी तो पछै गोपिन्दा खावतौ ई जासी। थू म्हारी बात सुणीक नीं ?'

करणौ बोल्यौ, 'मोट्यार ! अेक-दो घूट पी लियौ तो काई हुयौ ? सगळा ई इण उमर में अैडा काम करै है।'

म्हैं बोल्यौ, 'थारा बाप-दादा भी इण उमर में अै काम करता हा काई अर बता थू इण उमर में हो जणा दारू पीयौ हो काई? म्हैं थारै बापूजी नैं जाणतौ हो। जे थू अैडा फैल करतौ तो वै थारी हिरडा काढ नाखता। म्हारी बात रौ जणा पडूत्तर नीं मिल्यौ तो खेत कानी खिसक लियौ।'

चादौ बोल्यौ, 'हुई जिकी तो हुई, पण करणौ आपारौ भायलौ है। इण मुजब इण अबखाई आळै टेम में आपानैं उणनैं थावस दीया ई सरसी।' तीनू भायला करणै रै घर कानी टुरग्या।

करणै कनै पूग'र बोल्या, 'म्हैं आ काई सुणा हा ?'

करणौ बोल्यौ, 'थै साच ई सुणी है। करणौ थोडी सास लेय'र बोल्यौ, 'पैला तो छोरौ घूट-दो घूट दारू पीय'र आवतौ हो तो म्हैं देखी-अणदेखी करतौ रैयौ पण अबै दारू में धुत होय'र आवै अर मारूडा गावै है।'

चेनौ बोल्यौ, 'पीयै जिकौ तो पीयै है वो मारपीट क्यू करै है ?'

सावतौ बोल्यौ, 'भाई दारू पीया पछै मिनख राजा बण जावै है अर हुकम चलावण ढूकै है, राजाजी ज्यू कैवै विया ई करणौ पडै है। जे कोई उणरौ हुकम नीं मान्यौ अर उणनैं समझावण रा जतन करण लागै है तो पछै देखौ जुलमीडै रा जुलम कै वो मा-बाप नैं ई भूल बैठै है।'

करणौ बोल्यौ, 'साच कैयौ भाई, म्हामें अर म्हारी लुगाई में भी आ ईज हुई। जणा पाणी माथै ऊपरिया बहवण ढूकौ तो म्हैं अर म्हारी लुगाई उणनैं समझावण लाग्या तो राजाजी रै कठै खटाव हो अर म्हानैं दोना नैं बीं कूट नाख्या। अबै म्हैं ना जीवता में हा, ना मरत्या में हा। अेक ई छोरौ है, इनै पडा तो खाड अर बिनै पडा तो कूवौ है।'

सावतौ बोल्यौ, 'थनैं म्हैं पैला ई कैयौ हो नीं, पण उण टेम थू सुणी कोनी।'

करणौ बोल्यौ, 'नीं सुणी जणा ई तो अबै म्हारै बाप नैं रोवू हू।'

चेनी बोल्यौ, 'अै खोटा काम थोडै-अेक सू सरू हुवै है। अै भूडी लता सरू में पागळी दीसै है अर टसक टसक'र चालती निगै आवै, पछै अेडै पगा सू भाजै है कै इणनैं कोई नीं पकड सकै है। आ लता में पड्यै मिनख नैं औ भान ई नीं हुवै है कै कुणसो काम म्हैं करू हू वो चोखौ है अर कुणसौ काम करू हू जिकौ भूडो है। बीं नैं तो दारू पीवणौ है तो पीवणौ है, सुलफौ पीवणौ है तो पीवणौ है। भाग पीवणी है तो पीवणी है, सिगरेट-बीडी पीवणी है तो पीवणी है। जरदौ खावणौ है तो खावणौ ई है। मिनख इण लता रै चक्करा में अैडो चढै है कै भोम अर आभै विचाळै झूलतौ निगै आवै है। लत अैडी निसरणी है जिण माथै चढ्या पछै मिनख चढतौ ई जावै है। वो पूठो उतरणौ भूल जावै है। साच कैयी है—

ज्यारा पड्या सभाव, जासी जीव सू ।

नीम न मीठौ होय, सींचौ घीव सू ।।

टाबर जणा कुचमादी करण ढूकै तो टेम रैवता टाबर नैं रस्तै माथै ले आवा तो ई आछौ है। जे टाबर हाथ सू निकळग्यौ तो पछै वो आतककारी बण'र अैडा रूप देखावै कै मत पूछीना। अमेरिका री ऊची-ऊची टावरा नैं मिनटा में मटियामेट करण आळा अैडा ई मिनख हा, जिका खुद तो मरया जिका मरया पण दूजा नैं भी मार नाख्या हा। सगळी ससार अैडी बाता देख'र हिलग्यौ हो। बालपणै में टाबरा नैं जिकै रस्तै नाखा हा तो पछै टाबर अैडी लत में फस्योडौ आखर में मर पूरा दैं है। अैडा बिगडैल मिनख पैला खुद नैं बिगाडै अर पछै कुटुम्ब कबीलै नैं बिगाडे, इण पछै देस नैं बिगाड नाखै है।

चिणगारी चिन्हिक हुवै है पण जणा वा वास्ती में बदळ जावै तो पछै उणरी रूप देखण जोग ई हुवै है। वास्ती में बळण ढूक्या पछै सो कीं बळ'र राख हुय जावै है। इणी मुजब खोटी लता में मिनख अैडी बळै है कै वो आपरौ औ जलम अर आगोतर, दोना नैं बाळ'र राख कर नाखै है। इण ससार में घणकरा खोटै कामा में डिगू-पिवू दारू आ रळै है। दारू पीया पछै वो मिनख लटा-पट करतौ-करतौ गोपिन्दा खावतौ ई जावै।

अेक आदमी रोही में गेलै किनारै झूपडी माड'र बैठग्यौ अर आवतै-जावतै नैं पाणी पावण ढूकौ। जद-कदे कोई अेकलौ मिनख हुवतौ तो बींनैं मार नाखतौ अर घरआळा सगळा रळ'र उणनैं बूर नाखता अर उणरा रुपिया-टक्का ले लेंवता। इया करता-करता वो सौ नेडा मिनखा नैं मार नाख्या हा। राजा नैं जणा ठा लाग्यौ तो उणनैं पकड'र जेळ में घाल दियौ। राजा अर मत्री बैठ'र विचार्यौ

कै इणनैं कैडी सजा देवा ? कोई बोल्यौ इणनैं आधी कर दौ। कोई बोल्यौ इणनैं फासी देयदौ। मत्री कैयौ, 'तो भी अेक मिनख नें मरता जितरौ दु खडौ हुयौ हो उत्तरौ ई इणनैं हुसी। इण मुजब इणनैं अैडी सजा दौ कै इणरै मायलै जीव मैं घाव हुवै जिकौ इणनैं ना मरण देवै अर ना जीवण देवै।'

राजा बोल्यौ, 'बात तो ठीक है पण मायलौ घाव कीकर देवा ?'

मत्री बोल्यौ, 'आ म्हारै पर छोडौ।'

दूजै दिन मत्री जेळखानै में उण मिनख कनै गयौ अर बोल्यौ, 'देख ! थू काम तो घणौ ई कोजौ कर्‌यौ है पण म्हैं थनैं फासी री सजा नीं हुवण दू। पण इण जोग अेक म्हारौ काम करणौ पडसी ? वो ससवो हुय'र बोल्यो, 'बोलौ ! काई काम है ?'

मत्री उणरी कोठडी मैं गाय रै मास री थाळ मगवायी। दारू री बोतला धराई। उण मिनख री बेटी नैं बुलाई जिकै री गोद में अेक साल रौ टाबर हो। मत्री बोल्यौ, 'म्हैं सगळा जावा हा। थू या तो मास खाय लीजै या थारी बेटी रै टाबर नैं इण चाकू सू मार दीजै या बेटी सागै खोटौ काम कर लीजै या दारू पी लीजै।'

मत्री अर चाकर बुवा गया तो वो सोचण लाग्यौ इण सगळा में दारू पीवणौ ई चोखौ है। अबै डाकीडौ बोतल पर बोतल गटकावण लाग्यौ तो गटकातौ ई गयौ। अबै भूख लागी तो मास खायग्यो। मास खाया मद झरण लाग्यौ तो बेटी सू खोटौ काम कर लियौ। टाबर रोवण दूकौ तो उणनैं ई चाकू सू मार नाख्यौ। औ जुलमी दारू सो कीं कराय नाख्यौ। दारू नैं टेम रैंवता मिनख नीं छोडै तो बीं नैं मर्‌या ई सरै है।

सावती बोल्यौ, 'साच कैयौ है भाई ! बुराई री जड चिन्हिक सू सरू हुवै पछै वा अैडा डाळा पसारै है कै चारूमेरा रात-दिन पसरती ई जावै है। पुराणै टेम में बादसाह नोसेरवा आपरै हाकम-चाकर साथै रोही में सिकार करण जोग गयौ। रोही में रोटी जीमण जोग रसोई लेयग्यौ हो। अेक दिन रसोइयौ सिपाई नैं बुला'र कैयौ कै थोडौ-सो लूण घटग्यौ है इण मुजब गाव में जाय'र लेय आव। आ बात नोसेरवा सुणली। बादसाह आपरै तबू माय सू बारै आयौ अर बोल्यौ, 'लूण जम्बर ले आई पण उणरा रुपिया-टक्का जरूर दै आई। बिना कीमत दिया बिना लूण ना लाई।'

रसोइयौ बोल्यौ, 'हुजूर ! चिन्हैक लूण रा काई रुपिया देवणा है।'

नोसेरवा बोल्यौ, 'इण ससार में जुलम री नींव चिन्हैक खोटै काम सू ई पडै हे, पछै जिकौ भी आवै उणनैं बधातो जावै हे। बधतौ-बधतो वो रूख इतरौ पसरै है कै सगळा नैं आपरै नीचै ला बैठावे है। बादसाह किणी सेव रै बाग सू अेक सेव मुफत ले लेवै तो उणरा सिपाई उण बाग रै सगळै रूखा नैं बाढ'र सगळै बाग री विणास कर नाखसी। अगर बादसाह किणी सू पाच अडा मुफत ले लेवै तो उणरा सिपाई उण गरीब री सगळी मुर्गिया री कबाब बणा नाखसी। औ अखाणौ सुण्यौ है नीं के जैडौ राजा, वैडी प्रजा।

अेक बार नेहरूजी नैं लोगा कैयौ फलाणौ-फलाणौ हाकम-चाकर घूस रा रुपिया खा-खा'र घर भर रैया है। देस नूवो-नूवौ आजाद हुयौ हो। इण मुजब अबे इण देस रो धन इग्लैंड नीं जा रैयो हो। इण कारण नेहरूजी कैय दियौ कै देस री धन देस में ई रैवै, कोई बात कोनीं। बस आधै नैं काई चाइजै, दो आख्या? प्रधानमत्री घूस खावण री छूट देय नाखी है नै पकडली। खोटी बात अैडी फैलै है कै मत पूछोना। खोटे काम रै पख लाग्योडा हुवै है, वो फटाक उड'र दूजी ठौड पूग जावै है अर खरौ काम बिना परा रै लटकतो लटकती टुरै है। जणा आपा कैवा हा औ मिनख चोर है तो दूजौ फटाक मान'र आगै बधा देवै है अर जणा आपा आ कैवा कै औ मिनख ईमानदार है तो फटाक पूछा कै बता किया है ? खरै खातर सबूत मागा हा अर खोटै खातर सबूत नीं माग'र फटाक आगै टुरती करा हा। नेहरूजी री इतरौ केवणौ हो कै लोग इण बात नैं ले उड्या कै घर रौ धन घर में ईज है। इण मुजब घूस खावणौ म्हारै बाप-दादा री बापोती है।

देस में लेण-देण रौ धधौ इतरौ फळ-फूल्यौ है कै अबै कोई बिना लिया-दिया काम करै ई कोनीं। देस में अैडी डफली बाजी है कै मानखौ भ्रष्टाचार री लूणाघाटी में अैडौ फस्यौ है कै उणरै बारै निकळणौ अवै बख में नीं रैयौ है। इण जोग अबै डूबी माथै तीन बास है।

मोह

हुकमजी सेठा रै टणकी हवेली झुम्पोडी है। सहर में हुकमजी सै सू सिरै सेठ वाजै। वेटा-पोता सू घर भर्यौ है। सावरियै री किरपा उणा माथै दिन-रात वरसै है। इण मुजब धन-दौलत में सैंठा है। पण हुकमजी री मन रुपिया सू नीं भरै है। औ रात-दिन कमावता ओक सू दो अर दो सू चार करता रैवै है। इण कमाई रै चक्करा में घडीक भी ससवी साव नीं लेवै अर रुपिया रै लारै भाजता फिरै है।

इण कमाई रै चक्करा में सेठ जाणै है के कीं-न-कीं खोटौ भी हुवै है। इण मुजब धरम-करम में लाग्या रैवै है क्यूकै वै जाणै है ज्यू पत्थर हजम चूरण खाया पेट में सो कीं हजम हुय जावै है विया ई धरम-करम कर्या सगळा पाप धुप जावै है। हुकमजी मुनिश्री रा प्रवचन सुणण नैं जावै है। ओक दिन मुनिश्री बोल्या, 'हुकमजी ! कमावण री मोह छोडौ कोनी ? इतरै रुपिया री काई करसौ ? कीं हियै कागसी फेरौ। औ धन अठैई रैय जासी, थारै साथै जासी थारी आत्मा, इण जोग इण आत्मा रो हेलौ सुणौ जिकै सू थारौ आगौ-पाछौ सुधर जासी।'

हुकमजी बोल्या, 'जीवतै जीव नैं सो कीं करणौ पडै है। अजे ताईं पोतै-पोती रा ब्याव करणा है।'

मुनिश्री बोल्या, 'सेठा, थारौ ठेकौ थारै वेटा-वेट्या रौ ब्याव करण रो हो। अवै थारै पोता-पोत्या री ब्याव करण री ठेकौ बा रै मा-बाप रो है। थे औ अणुतौ भार ऊचाया क्यू फिरौ हो ? था थारै वेटा नैं भणाया, कमावण जोग वणाया अर उणा रा ब्याव कर दिया। जकौ थारौ फरज हो वो पूरौ हुयौ। थे थारै मोह नैं क्यू वधावौ हो ? रोटी बिना मिनख जीवै कोनी, पण वो अणुती खावण ढूकै है तो वीं नैं मरणा ई सरै है। आज तो थै पोता-पोत्या री बात करी हो पछै पोता रै वेटा-वेट्या रै ब्याव री वाता सोचण लागसौ। सेठा ! रबड नैं इतरौ मत खींचौ कै वो छेकड टूट ई जावै।'

मुनिश्री फेरू बोल्या, 'सेठा ! साची-साची बतावौ, पोतै-पोती रै ब्याव जोग था कनै रुपिया है कै नीं ?'

हुकमजी बोल्या, 'बै तो है पण उण माय सू छेडणौ नीं चावू हू! बै म्हारी जीव-जडी है।'

मुनिश्री बोल्या, 'थानैं रुपिया सू घणौ मोह थारै सरीर सू है, क्यू नीं हुवै? पैली सुख निरोगी काया है जणा आ काया निरोग हुवै जणा ई दूजा काम सूझण लागै है। जणा सेठा थारौ तो खोळियौ ई थारौ कोनी, इनै भी थानैं अेक दिन छोडणौ पडसी तो रुपिया-टक्का किण चितारी में है ? जिकौ मोह थै रुपिया-टक्का में लगावौ हो बो ई मोह सावरियै में लगाया थारौ आगे-पाछै रौ सगळौ जीवण सुधर जासी।'

हुकमजी बोल्या, 'सावरै में भी लगावा हा पण मुनिश्री साच तो औ है कै रुपिया-टक्का रौ मोह ज्यू नसेडिया नैं आपरै नसै सू मोह हो जावै है, बै चावै तो भी नीं छूटै है इया ई म्हारी हालत है। पैला म्हारौ मोह लुगाई में घणौई हो पण ज्यू ई टाबर होया तो लुगाई रौ मोह कमती हुय'र टाबरा में जा बडै है। ज्यू ई टाबरा रै टाबर होया तो मोह पोता-पोत्या में जा वड्यौ पण म्हैं आ देखू हू कै औ रुपिया-टक्का रौ मोह कमती हुवै ई कोनी। इनै दूजी ठौड जावण जोग फुरसत ई कोनी। ओ आपरी जागा पर जडाजत जम्योडो है। इणनैं जणा हिलावू तो औ टस सू मस भी नीं हुवै है।'

हुकमजी रै पोतै रौ ब्याव धूमधाम सू हुवै। हुकमजी घणाई राजी हुवै है क्यूकै ब्याव भी होयग्यौ अर हुकमजी रा माय पड्या रुपिया भी छेडीज्या कोनी। हुकमजी रै बेटै-पोतै रौ आजकाल धधौ मोळौ चालण लाग्यौ तो बाप-बेटै विचार्‍यौ कै दूजौ धधौ दिसावर में करा। पण नूवै-नूवै धधै में रुपिया री दरकार पडै है। इण मुजब बारौ बेटौ माणक बोल्यौ, 'बापूजी था कनै रुपिया माय पड्या है वै देयदौ तो म्हे लोग दिसावर में धधौ खोलला।'

हुकमजी बोल्या, 'म्हारा रुपिया क्यू देवू ?'

बेटौ बोल्यौ, 'थानैं इण रुपिया रौ काई करणौ है। थानैं घर में माचै बैठ्या रोट्या मिलै है। हुकमजी बोल्या, 'देख्यौ अै माणकै री मा ! थारौ औ लाडेसर काई कैवै है ?'

माणकै री मा बैठी-बैठी सुणै अर कीं नीं बोलै है।

माणकौ अर माणकै रौ बेटौ देख्यौ कै बापूजी रुपिया नीं देवै है तो अवै

बै दोनू मा रा पग चांपे है तो मा री बेटै-पोते जोग मोह जागै है अर हुकमजी सू अबै लडाई माड दी तो हुकमजी लट-पटीजण लाग्या। इनै लुगाई री मोह अर बठीनै रुपिया री मोह। आखर लुगाई साथै ई रैवणी है इण जोग बीचलौ रास्तौ अंगेज्यौ। हुकमजी बोल्या, 'जणा इया री धधौ चाल खडौ हुवै तो अै म्हनैं म्हारा रुपिया पाछा देदै।'

जोडायत बोली, 'इण जोग म्हैं साख भरू कै धधौ चाल्या पछै सै सू पैला थारा रुपिया दिरासू। थै साच कहौ हो, बुढापै में रुपिया री ई सायरौ हुवै है।'

हुकमजी रुपिया आपरी लुगाई नैं देवै है अर हुकमजी री लुगाई आपरै बेटै-पोतै नें रुपिया सूपती कैवै है, थारै बापूजी रा रुपिया बेगा पाछा दिया भलौ!'

हुकमजी रुपिया सू खाली होया पछै उदास रैवण लागग्या। अेक दिन हुकमजी री जोडायत बोली, 'रुपिया रै मोह में इया काई डाळा नाख दिया हो। रुपिया काई दिया है, जाणै थै तो थारौ काळजौ ई काढ'र देय दियौ है। माणकै नैं आवण दो, थारा रुपिया पाछा दिरा देसू। म्हैं आज ई पन्नजी सू मिल'र आई हू। बै कैवता हा कै माणकै री काम घणौई सातरौ चालै है।'

हुकमजी कीं ससवा होया तो पूछ्यौ, 'पन्नजी दिसावर सू कणै आया ?'

जोडायत बोली, 'परसू आया है। माणकौ आपनैं पगा लागणा कैवाया है।'

अबै हुकमजी माणकै नैं आख्या फाड्या उडीकण ढूका तो अेक दिन समाचार मिल्या कै माणकौ काल आय ढूकसी। हुकमजी नैं रात नें सूत्या-सूत्या नैं सुपना में रुपिया ई रुपिया दीसै है।

आज माणकौ घरा पूग्यौ तो हुकमजी री बाछा खिलगी। जोडायत नैं कैयौ कै माणकै सू रुपिया दिरा तो जोडायत बोली, 'थै क्यू फिकर करौ हो, म्हैं बिचाळै हू नीं। काल माणकै नैं कैय'र थारा रुपिया दिरा देसू। दिनूगे-दिनूगे जणा चाय पीवण नैं बैठ्या तो माणकै री मा बोली, 'बेटा ! थारै बापू रा रुपिया देयदै, बै रुपिया रै मोह में आधा हुयोडा आधा होयग्या है। थारौ धधौ किया चालै है ?'

माणकौ बोल्यौ, 'मा धधौ तो सागोपाग चालै है थारौ पोतौ घणौई चतर है, अबै धधै नैं ओरू आगै बधासी।' माणकौ चुप होय'र बैठग्यौ।

मा फेरू कैयौ, 'बेटा ! थारै बापू रा रुपिया देयदै।'

माणकौ बोल्यौ, 'मा ! बापू मरण नैं चाल्या है पण रुपिया री मोह नीं छूट्यौ है तो पछै म्हैं भी इणी बाप री बेटौ हू। म्हारौ मोह रुपिया में कींकर नीं

हुसी ? बापूजी नैं कैयदे कै इण उमर में भजन-वाणी में जी लगावौ, थानैं रोटी-पाणी री कीं कमी नीं है। थारौ पोतौ इणी सहर में आय धधौ करसी। वो थारौ पूरौ ध्यान राखसी।'

मा रौ मूडौ उतर'र हाथ में आयग्यौ अर बा हुकमजी कनै आय'र माणकै री सगळी वाता बताय नाखी अर कूकण ढूकी तो हुकमजी बोल्या, 'रोव थारै-म्हारै बाप नैं। जणा किन्नौ हाथा माय सू खुसग्यौ तो अबै बैठी-बैठी लटाई समेट। रुपिया आगै नीं बेटी है, नीं पोती है। रुपिया हाथ में आया सगळा गुरुबायरा हुय जावै है। थू अबै कितरी ई कूक, आपा टाबरा रै मोह में आधा होय'र हाडीअर्था होयग्या हा। अबै जैडी थू, बैडी म्हैं। ना जीवता में हा, ना मरचा में हा।' कीं सुसता'र हुकमजी बडबडावण ढूका, "आ रे म्हारा सप्पम पाट, म्हैं थनैं चाटू, थू म्हनैं चाट।"

हुकमजी री पोतौ दिसावर सू आय'र इणी सहर में काम धधौ सरू करदे है। अेक दिन सुबै-सुबै हुकमजी रौ पोतौ आय'र कैयो, 'दादोसा ! म्हारै टाबरा जोग म्हारौ कमरौ छोटौ पडै है अर थारी पडपोती नैं न्यारौ कमरौ चाइजै है। इण मुजब थै गैरेज कनलै कमरै में रैयलौ अर म्हनैं थारलौ कमरौ देयदौ।'

हुकमजी बोल्या, 'म्हैं इण कमरै में बालपणै सू रैवू हू। इण मुजब म्हनैं म्हारै कमरै बिना नींद नीं आवै।'

अबै दादै-पोतै में बहस छिडगी तो पोतै री मा रौ मोह जाग्यौ अर बा आपरै बेटै रौ पख लेवण ढूकी। इण घमासाण नैं देख'र हुकमजी री जोडायत मन ई मन बोली, हाडीअर्था हुयोडा अबै जीवणौ तो आ में ई पडसी।

हुकमजी री जोडायत बीनणी नैं कैयौ, 'बऊ थोडौ थावस राख, म्हे कमरौ खाली कर देसा।'

सगळा गया पछै हुकमजी जोडायत नैं पूछ्यौ, 'भागवान ! थू औ काई करचौ ?'

बा बोली, 'आपा सू तौ जिनावर ई चोखा जिका टाबरा री मोह बारै बडा हुवण ताई राखै है, पण आपा इतरा गेला हा कै टाबरा रै पछै बारै टाबरा रै मोह में फसता जावा हा। अबै तो आपणै साथै बा हुई है कै जिकै गाव में रहणौ, बठै हाजी-हाजी कहणौ।'

हुकमजी बोल्या, 'जुलमी मोह रै चक्करा में फस्या पछै मिनख गोपिन्दा खावतौ ई जावै है।'

हुकमजी नें आज महीनो होयग्यो है नींद लिया नैं। रात नैं कमरे री मोह चैन नीं लेवण देवै तो दिन में रुपिया रो मोह। इणीज भवरजाळ में हुकमजी अैडा फस्या कै सूख'र काटी होयग्या। बारी बहवड भी हुकमजी रै साथै-साथै डोलर हींडो होयगी ही। दोनू विचार्यौ कै अबै मुनिश्री रै चरणा में चाल्या ई मारग दिखसी। आज सुवै-सुबै हुकमजी अर उणरी बहवड दोनू मुनिश्री रै चरणा में वदना करी अर बैठग्या।

मुनिश्री हुकमजी अर उणरी जोडायत री आ हालत देखी तो बोल्या, 'औ काई हाल बणा राख्यो है, इतरा निबळा कींकर होयग्या हो ? कीं तो मोगम खोलौ ।'

हुकमजी धारौधार रोवण ढूका। रोया कीं जीव हळको होयो तो बोल्या, 'मुनिश्री म्हारौ दो ई जिन्सा सू घणौ मोह हो अर बे दोनू ई म्हासू कोसा आतरै है। अेक रुपियौ अर दूजौ म्हारौ कमरौ।' हुकमजी मुनिश्री नैं आपरी सगळा गाथा सुणा नाखी।

मुनिश्री बोल्या, 'हुकमजी ! औ घरआळा रो मोह मिनख नें अैडो आथो करै है कै वो घरआळा नैं ई सो कीं समझ बैठे है अर आपरे सावरियै नैं भुला बैठे है। मिनख तो मिनख, जिनावर भी मोह रे कुडके में अैडा फसे है कै बानैं मरती टेम ताई पकड्या रैवै है। कबूतर नैं थै कठैई छोडदौ, सात समदर पार सू उडतौ-उडतौ पाछो आपरै ठायै माथै आय ढूकै है। कुत्ता आपरी ठौड रा जागीरदार हुवै है जणा दूजौ ओपरो कुत्तौ आ जावै तो अैडा गुर्रावै है कै मत पूछौ। जे आवण आळो निबळौ कुत्तौ हुवै तो बींनैं फफेड-फफेड'र बीं री रिरडा काढ नाखै है। जे बा सू लूठौ कुत्तौ हुवै तो वो सामी गुर्रातो-गुर्रातो आपरी जागीर में पूठौ बुवौ जावै है। अेक जणै रै गळी रै आखर में आमनै-सामनै दो घर हा। दोनू घरा सू आगै रो मारग खतम हो। इण दो घरा रै आगै री जागीर अेक काळै कुत्तै री ही। उण मिनख रै दो लुगाया ही। दोनू आमी-सामी आळै घरा में रैवती ही। दोनू लुगाया में रोज धमासाण मचती हो जणा वो मिनख घर सू सुवै-सुवै निकळ जावतौ। दोनू लुगाया महाभारत छेड देती तो बो काळियो कुत्तो पूछ हिलातौ-हिलातौ बारी लडाई सुणतो रैवतो। जणा अेक बोलती, 'राड ! थू इण काळियै कुत्तै री बऊ है।' ओ सुण'र काळियो कुत्तो साटाक पूछ रा चार पलटा दे मारतो अर घणोई राजी हुवतो।

उण मिनख रै वोपार में घाटो लागग्यो तो अबै रोटी रा लाला पडण

ढूका। काळियै कुत्तै नैं भी खावण नैं चिन्होक ई मिलती हो। काळियै री भायलौ अेक भूरियौ कुत्तौ हो। जणा काळियै कुत्तै नैं भूखा मरतौ देख्यौ तो वो बोल्यौ, 'म्हारै साथै चाल, म्हारै अठै घणौई खावण नैं मिलै है।'

काळियौ कुत्तौ साव नटग्यौ तो भूरियै कुत्तै पूछ्यौ, 'क्यू नीं चालै, अठै थनैं काई साव आवै है ?'

वो बोल्यौ, 'अठै म्हैं दो-दो लुगाया री खसम हू। इण मुजब औ मोह म्हासू नीं छूटै है। मोह रै चक्करा में अबै मरणौ थारी गळी में अर जीणौ थारी गळी में।'

मुनिश्री बोल्या, 'भूखा मरणौ मजूर है पण मोह नीं छोडणौ। सेठा मोह माया रै चक्करा सू निकळौ।'

अेक गुरु रा मोकळा चेला हा पण अेक चेलौ घणौ भक्ति-भाव में लाग्योडौ हो। पण बींनैं आपरै घरआळा सू भी घणौ मोह हो। इण मोह में आपरी भक्ति भी छोड देंवतौ हो। अेक दिन गुरु पूछ्यौ, 'अैडौ घरआळा में थारै काई नादीदौ है जिकौ थू उणा रै कारण भगवान री भक्ति ई छोडदै है ?'

वो बोल्यौ, 'महाराज, म्हारा घरआळा म्हारै बिना अेक घडी ई नीं रैय सकै। म्हैं घरा जावू जणा ई अन्न-पाणी लेवै है। वै म्हा पर आपरी जान छिडकै है तो म्हैं उणा री ध्यान राखू तो काई किरियावर करू हू ?'

गुरुजी बोल्या, 'बिना उपाय बिना थू अबै नीं मानै है। इण जोग थनैं सास चढाणी आवै है नीं ?'

चेलौ बोल्यौ, 'हा आवै है।'

'तो थू काल सुबै-सुबै छह बज्या सासा चढा'र नौ बज्या पाछा उतार लीजै। म्हैं नौ बज्या थारै घरआळा सू थारै बारै में बाता करूला पण थू नव बज्या सासा उतार'र भी सूत्यौ रैयी अर बाता सुणी।

दूजै दिन चेलौ छह बज्या सासा चढाली। बहू आपरै धणी खातर चाय लेय'र सात बज्या आई तो वो बोलै ई कोनीं। जणै बा हाकौ कर्‌यौ। सगळा घरआळा भेळा होयग्या अर डाक्टर नैं बुलायौ तो डाक्टर कैय दियौ कै औ तो सुरग सिधारग्यौ है। अबै घर में रोवा-कूकौ माचग्यौ। गुरुजी उणरै घरा साढी आठ बज्या पूगग्या। गुरुजी मत्रा रा जाप करण रा कूडा नाटक राचिया अर नव बजता ई बोल्या कै घर रा सगळा लोग अठै आय ढूकौ। जका घर रा नीं है वै बारै बुवा जावौ। इणनैं म्हैं जीवतौ कर देसू।

आ बात सुणता ई सगळा रा मूडा चमकण लाग्या। जणा गुरुजी बोल्या, 'औ तो जीवतौ हुय जासी पण इणरी ठौड दूजै नैं मरणौ पडसी।'

इतरौ सुणता ई सगळा माथै जाणै आभौ आय पड्यौ। अेक-दूजै नैं देख'र आख्या हेटी करली तो गुरुजी बोल्या, 'थै कोई भी मरण जोग राजी कोनी तो म्हैं म्हारी सगळी पूजी गमा'र इणनैं जीवावू हू।'

सगळा गुरुजी रै पगा पडग्या अर बोल्या, 'आप चाइजै जितरा रुपिया लेलौ पण औ काम कर'र म्हा पर किरपा करौ।'

गुरुजी मंत्रोच्चारण कर'र चेलै माथै पाणी री छाटी दियौ अर बोल्या, 'भगवान रौ नाव लेवतौ, उठ बैठ !'

वो फटाक सू उठ बैठौ हुयौ अर उणरी आख्या खुलगी कै उणरी भगवान रै सिवाय कोई नीं है।

औ दृष्टात देय'र मुनिश्री बोल्या, 'सेठा थै पोता ताई रै मोह में अेळाई आधा होया। हुकमजी जणा थै कमरौ छोड्या थारा अै हाल होयग्या है तो पछै थारी आत्मा ८५ साल सू जिकै कमरै में रैवै है बींनैं छोड्या उणरौ काई हाल हुसी ? थारी आत्मा थारै हेला पाडै है। कैवै है मोह घालणौ ई है तो सावरियै में घाल, जणा ई थारी नाव किनारै लागसी।

ईसकौ

ईसकै री मतलब दूजे री बधती नीं देखणी। दूसरै री बरीबरी करणौ, ईर्ष्या करणी, दूजे रो चोखौ देख'र बळ'र राख हुय जावणी। ईसकौ अैडौ रोग है कै औ जिकै रै लाग जावै है तो पछै उणसू मरया ई लारौ छूटै। इण रोग में मिनख हर बगत बळतौ रैवे है। रात नैं जणा आख लागै तो ईसकौ उणरौ लारौ सुपना में भी नीं छोडै है। किणरौ लेणौ-किणरो देणौ पण ईसकै में डूब्यौ मिनख भचबेड्या खावतौ ई रैवै है। ईसकै री धरम-करम कीं नीं है, बस ईसकेखोरौ मिनख अेक ई धरम-करम निभावै है कै दूजे नैं हेटौ कींकर दिखावू। मिनख रै भोडकै माथै ईसकै रौ भूत अैडौ चढ बैठे है कै उणनें औ लखावै ई कोनीं कै उणरौ कितरौ नुकसाण हुवै है। वो तो दूजै नैं हेटौ देखावण में आपरौ सो कीं बासती में बाळ नाखै है।

फनजी री घर चोरजी रै घर सू सट्योडी है। दोनू घरा री भींता आपस में रळ्योडी है। फनजी अर चोरजी भाई-बधा में है। दोनू धणी-लुगाई चोरजी अर उणरी लुगाई सू घणीई ईसकौ राखता हा। हर वगत आ ईज सोचता रैवता कै चोरजी अर उणरी लुगाई नैं हेटौ किया देखावा ? बठीनै चोरजी अर उणरी जोडायत भी आई देखता कै फनजी अर उणरी बहवड नैं हेटौ किया देखावा। चारा में होडा-होड मचोडी ही। ब्याव-अैढै में, गाभा-लत्ता में, लेण-देण में, ब्याव-टागलै, मरणै-तरणै में कोई भी काम हुवौ, चारू अेक-दूजे सू बत्तौ करणै री जुगत बैठाता हा। वै घर फूक'र तमासौ देख रैया हा। चोरजी कनै कीं रुपिया बावडग्या हा अर कीं ब्याजुणा लेय'र फनजी रै घर सू आपरौ घर ऊचौ ले नाख्यौ। अबै गळी-मोहल्लै में चोरजी अर उणरी जोडायत कैवता फिरै कै म्हारौ घर फनजी रै घर सू ऊचौ है।

फनजी अर उणरी बहवड आ बात सुणी तो वारै लाय-पलीता लागग्या। पण इतरा रुपिया नीं हुवण सू अबै वारै बटत-खटत नीं रैयी। दोनू रात-दिन, खाता-पीता, उठता-बैठता, दुरता-फिरता अेक ई बात सोचै है कै चोरजी नैं हेटा

किया दिखावा ? फनजी आपरै भायलै किसनै चलवै नैं लायौ अर पूछ्यौ, 'इण मकान सू ऊचौ मकान लेवा तो कितरा रुपिया लागसी ?'

किसनौ कैयौ, 'फनजी, थै घर में धणी-लुगाई दो जणा ही हो, पछे मकान इतरौ ऊचौ लेवण रौ काई तुक है ?'

फनजी बोल्या, 'वगत बदळग्यौ है। मकान तो म्हानैं ऊचौ लेवणौ ई है।'

किसनो बोल्यो, 'थारो ओ चोरजी रै घर रै सारे वडो कमरौ तोड्या चोरजी रौ बण्योडौ घर हेटै आय पडसी। जे वो पडग्यौ तो थारै कनै थारी रसोई अर चिन्होक-सो ओरी ई रैवैला। इण मुजब थै ओ कमरौ तोडावण री सोचौ ई मत।'

इतरौ सुणता ई फनजी अर उणरी जोडायत रौ मूडौ धोळौ पडग्यौ। किसनौ तो बुवौ गयौ पण फनजी अर उणरी बहू रौ खाणौ-पीणो हराम हुयग्यौ। कमरै ऊपर कमरौ बणै कोनीं अर कमरौ तोडा'र उणरै ऊपर माळियौ बणाया ई चोरजी रे घर सू ऊचो घर दीससी। फनजी हिसाब लगायौ हो कै कमरौ तोड'र उण माथै माळियो खडो करावण जोग रुपिया रौ जुगाड भी नीं हुवण जोग है पछे सगळौ घर पड जासी तो बींनैं कींकर बणासा। इण जोग जोडायत नैं कैयो, 'भागवान ! ओ चोरियौ आपानैं जहर रा घूट पावतौ ई रैसी।'

फनजी अर उणरी जोडायत नैं रोटी-पाणी खारा जहर लागै है। इया करता-करता दोनू सूख'र काटा जैडा होयग्या तो अेक दिन फनजी रौ भाणेज दिल्ली सू आय ढूकौ। फनजी बोल्या, 'रामा ! म्हारी वैन किया है ?'

रामू बोल्यो, 'सगळा घर में राता-माता है पण थै अर मामीजी मिगसा किया पडग्या, काई हुयग्यौ जको दिन-दिन ढोळै पडता जावो हो ?'

फनजी माय रा माय धमीडा खावता बोल्या, 'इया ई आजकाल जी सोरौ कोनी रैवै है।'

रामू बोल्यौ, 'किणी डाक्टर नैं दिखायौ कै नीं ?'

अवै फनजी किया बतावै कै ईसकै रौ रोग है जिणरौ इलाज इण जुलमी चोरियै री हवेली नैं नीचै लाया ई हुवै है। रामू बोल्यौ, 'चालौ, अठै म्हारौ भायलौ जेठू डाक्टर है, बानैं देखा'र लावू।'

फनजी घणाई ओळावा लेवै पण रामू अेक नीं सुणै अर डाक्टर नैं जाय देखावै। डाक्टर बोल्यौ, 'सगळी जाचा करली है, परख्या ठा लाग्यौ कै आनैं दोना नैं कोई रोग कोनीं।'

रामूडौ बोल्यौ, 'मामोसा अर मामीसा ! थानैं कीं रोग कोनी है, अबै खावण-पीवण री ध्यान राखसौ तो ठीक होय जासी।'

रामूडै रै गया पछै फनजी आपरी जोडायत सू बोल्या, 'इण छोरा अर डाक्टर नैं काई ठा है कै सरीका सू हेटौ रैया वो मिनख न मरया में रैवै, नीं जीवता में रैवै।'

इणी विचाळै चोरजी री छोरौ चोरी करली जणा पुलिस आय'र उणनैं पकड'र लेयगी तो फनजी अर उणरी जोडायत आज धाप'र रोटी खाय'र बैठ्या। पछै फनजी बोल्या, 'पुलिस आळा साळै भोळियै नैं चोरियै रै सामी ई कूटता-कूटता लेयग्या हा।'

दो-चार दिन फनजी अर उणरी बहू सुख सू काट्या पण इण विचाळै फनजी री जोडायत री भाणजी मिलण आई तो घर में बडता ई बोली, 'म्हैं तो भुवाळी ई खायगी कै आ इतरी बडी हवेली किणरी है, अबै ठा लाग्यौ कै चोरजी बणाई है।' इतरौ सुणता ई फनजी अर उणा री जोडायत रै लाय-पलीता लागग्या। जोडायत बोली, 'हवेली रौ काई देखै है, पाच-छह दिना पैला पुलिस आळा चोरजी रै छोरै नैं चोरी करण रै जुलम में पकड'र लेयगी ही। बाप रै सामी ई पुलिस आळा छोरै नैं कूटता-कूटता लेयग्या। सगळै मोहल्लै आळा देखता हा। चोरियै री इज्जत दो-दो टक्का में बिकी ही।

रात नैं फनजी आपरी बहवड सू बोल्या, 'इया तो जीवीजै कोनी। आपा कनै इतरा रुपिया इण जलम में तो आवै कोनी जिकै सू इण डाकी चोरियै सू ऊची हवेली बणाला। चोरियै रौ छोरौ पकडीजोडौ है, इयै भी आपानैं हेटा दिखावण जोग रुपिया ब्याजुणा लिया है। अबै इयै सू चूकता नीं हुवै है। पण आपारै छाती माथै तो आ हवेली ऊभी है जिकौ आवै बो ई इण हवेली री बडाई कर'र आपानैं माय री माय मोसौ देय'र ई जावै है। जे टेम रैंवता इण रोग रौ इलाज नीं करयौ तो आपा री बेडी गरक होया ई सरसी। इण मुजब भागवान इण चोरियै री हवेली नैं ठिकाणै लगाया ई सरसी। इण जोग अबै कोई तरकीब सोचौ।'

फनजी री लुगाई बोली, 'थारी भायलौ कैयग्यौ है कै जे थारौ औ कमरौ ढहग्यौ तो चोरियै री हवेली नीचै आय पडसी अर बा पडता ई आपारौ दूजोडौ कमरौ ई धूड भेळौ होय जासी।'

फनजी बोल्या, 'जणा आपा कनै दो कमरा है बै ई नीं रैया तो पछै रैसा किया ?'

जोडायत बोली, 'जणा आ हवेली आपारी छाती माथै ऊभी है तो पछै आपा जीवा हा काई ? इया तिल-तिल करता मरा हा तो पछै अेकर में ही मरणौ चोखौ है।'

फनजी बोल्या, 'थू साच कैवै है- घर तो घोस्या रा भी बळसी पण ऊदरा किसा सुख सू रैसी।'

फनजी अेक मजदूर नैं रात नैं कमरै री नींव खोदण नैं लगावै अर धणी-बहू उणरै साथै लाग जावै। दस दिना पछे कमरौ ढहण जोग होयग्यौ तो मजदूर नैं बुलावणो बद कर दियौ अर अेक दिन आधी रात नैं फनजी आपरो कमरो धोड दियौ अर धणी-बहू घर सू बारै भाजग्या। फनजी रौ कमरौ ढहता ई चोरजी री हवेली ई नीचै आवती दीसी। चोरजी अर उणरी जोडायत हवेली रै नीचै ही दब'र मरग्या। फनजी अर उणरी जोडायत आपरी ठौड माथै झूपडी बणा'र रैवण लाग्या। चौमासै में मलेरिया रोग फैल्यौ तो सै सू पैला माछरा फनजी अर उणरी जोडायत नैं आपरौ सिकार करियौ क्यूकै बै झूपडी में रैवता हा। कनै ई पाणी सू भर्‌योडा खाडा हा। फनजी अर उणरी जोडायत सुरगा पूगता निगै आया। वाह रे ईसका ! थू चारू मिनखा नैं आखर मौत दिखाय ई नाखी। पाडोसी भाई जैडो हुवै है पण ईसको कैडोक भाईचारै में जहर घोळ नाखै हे।

चम्पै रै दो बेटा अर अेक बेटी है। बडै बेटै री नाव आसू अर छोटै री नाव धूडौ। बेटी रौ नाव राधा है। चम्पौ सगळा रा ब्याव कर दिया है। टाबर विणज-वेपार में लाग्योडा है। पण बेटी विधवा हुई तो चम्पै नैं अैडौ सदमौ लाग्यौ कै वो थोडै दिना पछै सुरग सिधारग्यौ। विधवा बेटी मा रै घरा ई रैवै है। भरियै तरियै घर में खावण-पीवण री कीं कमी नीं है पण चारू लुगाया विचाळै खट-पट चालती रैवती। अेक दूजै रे ईसकै में बळ'र भूगडी हुय जावती ही। आ लुगाया में सिरै आसू री बहू ही। बीं नैं ईसकै रौ रोग अैडौ लाग्योडौ हो कै बा आपरै मा-बाप रौ भी ईसकौ कर लेती ही। पछै सासू, नणद अर देराणी नैं काई छोडती। इण मुजब सासू, नणद अर देराणी अेके पासे अर आसू री बहू अेकै पासै। अवै घर में बात-बात पर गोधम हुवतौ दीसे है। जणा रोजीनै घमासाण हुवण लाग्यो तो आसू री मा बोली, 'रोजीनै री कळै आछी कोनी। इण मुजब अवै अैडौ लागै है कै थानैं भाई-भाई नैं न्यारा हुया ई सरसी। आसू आपरी बीनणी रै पूरौ बख में आयोडौ हो। बीं आपरी लुगाई कानी देख्यौ तो बा बोली, 'सासूजी ! थे म्हारै ताण ई माल-मलींदा उडावौ हो, न्यारा हुया ठा लाग जासी।'

आसू री मा इतरी सुण्यौ कै उणरै लाय-पलीता लागग्या अर बोली, 'आसिया ! थारी नाचण घोडी नैं अबार री अबार लेयजा अर न्यारौ होयजा। म्हैं अबै थारैं अेक घडी भी म्हारै घर में नीं रैवण दू।'

आसू आपरी बहू अर टाबरा नैं लेय'र रात नैं ई घर सू निकळग्यौ अर आपरै सासरै में वासौ लियौ। दूजे दिन मकान किरायै लेय'र रैवण ढूकौ। आसू रौ धधौ चोखौ चालण ढूकौ। अबै आसू भी आपरी बहू साथै रळग्यौ अर छोटै भाई अर बैन री ईसकौ करण ढूकौ। मा नैं जणा जावतौ तो औई तानौ मार आवतौ कै थू तो सगळौ धन धूडे-राधा नैं ईज देसी। म्हैं तो थारौ दूजी मा रौ बेटौ हू।'

मा कैवती, 'जा रै जोरू रा गुलाम ! थू थारौ काळौ मूडौ कर अठै सू।'

आसू रै धधौ चोखौ चाल पड्यौ। अबै आसू री बीनणी नूवा-नूवा गाभा लावै अर पह'र सासू, नणद अर देराणी नैं देखा-देखा'र बानैं बाळ-बाळ'र भूगडी वणा नाखै है। इया ई नूवा-नूवा गैंणा बणा-बणा'र सासू, नणद अर देराणी नैं हेटी देखावण रौ काम करै है। अठीनै सासू, नणद, देराणी ईसकै सू बळै है, बठीनै आसू री बहू इण फिकर में तळीजै है कै म्हारै घरआळा नैं हेटी कींकर दिखावू। बीं नैं धूडौ, धूडै री बहू, मा अर बैन रात नैं मिल बैठै तो भी आ ई बात हुवै है कै इण आसियै आळी नाचण नैं कींकर हेटी देखावा ?

आज धूडै रै बेटै रौ जलमदिन है। धूडै री बीनणी बोली, 'सासूजी ! आज आप कैवौ तो आसियै आळी नैं गैंणा-गाभा में हेटी कर नाखू।'

सासू पूछ्यौ, 'किया ?'

धूडै री बहू बोली, 'म्हारा मामौ-मामी दिसावर सू आयोडा है। बै करोडपति है। इण जोग बारा गैंणा-गाभा अेकर माग लावू। बा तो आई समझसी कै घरआळा कराया है। फेरू थे जणा कनै ऊभी हुवौ तो कह दिया कै धूडै बणाया है।'

सासू बोली, 'आ तो सागीडी तरकीब लाई है। उण नाचण नैं नाच नचाया ई सरसी।'

धूडै रै छोरे रै जलमदिन में घर-बार रा सगळा लोग भेळा होया हा। आसू अर आसू रौ सगळौ कुटुम्ब भी आयोडौ हो। धूडै री बहू आज अैडी सजी-धजी है कै उणरै आगै परिया भी पाणी भरै है। अैडौ रूप अर गैंणा-गाभा देख'र आसू री बहू बळ'र भूगडी होयगी। इतरै में सासू कनै आय'र कैयौ, 'धूडौ बहू खातर गैंणा-गाभा सातरा बणाया है।'

इतरी सुणता ई आसू री बहू रै काळजै में लाय-पलीता लागग्या अर वा बिना खाया-पीया ई घरा आयगी अर रात भर ईसकै में बळती-बळती विचारती रैयी कै कुणसी काम करू जिणसू बानैं हेटा दिखा सकू। दिन ऊगता-ऊगता बात पकड में आयगी कै कार लेय'र बानैं हेटी दिखा सका हा। सुबै बा आपरै धणी नैं कैयौ, 'देखौ आपानैं कार लेवणी है।'

आसू बोल्यौ, 'भागवान, कार जितरा रुपिया आपा कनैं कोनी।'

बा बोली, 'कीं थै करौ, कीं हू करू पण कार तो काल ईज लेवणी है।'

आसू रै घरा कार आयगी है। धूडै री मा, लुगाई अर बैन नैं जद इण बात री ठाह लागी तो बै ईसकै में बळ'र राख होयगी। सासू, नणद अर देराणी री नींद उडगी। अेक सूवै तो दूजी जागै। दूजी सूवै तो पैली जागै। वाह रे ईसका! थू जिकै नैं मारै है तो पछै फफेड-फफेड'र मारै है। थारी मा थनैं ई जायी है।

आसू री बहू सैं सू पैला कार दिखावण नैं सासू, नणद अर देराणी कनै गई अर बानैं जिका मौ'सा देय देय'र आई ही मत पूछोना। अै सगळा काम करया पछै आसू री बहू सुख सू नींद लेवै है। पण बठीनै तीनू लुगाया री नींद उडगी है। रात नैं बैठ'र विचारै है कै इण आसियै आळी नैं कींकर ई मजौ चखावा जणा जींया जलम पावा। चारू जणा गोळ्या गूथता-गूथता आखर में औ तय कर्यौ कै आसियै रै गोदाम में लाय लगा नाखा जिकै सू आसियै रौ सो कीं बळ जासी, पछै देखा आ नाचण कींकर नाचसी ?

सोमवार री रात नैं धूडौ आपरै भायला नैं लेय'र आधी रात नैं आसियै रै गोदाम में लाय लगाय नाखी। दिनूगै ताई सो कीं बळ'र राख होयग्यो। दिनूगै आसियै नैं ठाह लाग्यौ तो वो चेतौ भूलग्यौ। पाणी छिडक'र उणनैं चेतौ करायौ तो दिल रौ दोरौ पड्यौ अर आसू सुरगा पूगग्यौ। लोग घरा बैठण नैं आया तो धूडौ धणौई रोयौ पण मन ई मन बोल्यौ, 'भाई मरण री धोखौ कोनीं, भाभी रौ नखरौ भागग्यौ।'

वाह रे ईसका ! थनैं हू लुळ-लुळ सलाम करू। भाई-बैन रौ खून बदळ दियौ, मा आपरै खून नैं ई भूलगी। ईसकै सामी कोई नीं टिकै है।

उतर गीगला म्हारी बारी

गळी रा टाबर रात नैं रमता-रमता बोलै है— उतर गीगला म्हारी बारी। जणा औ हाको सुण्यौ तो पनजी अर मनजी छोरा नैं देखण लागा। भींत रै सहारै चार टाबर हाथ लगा'र घोडी मड जावै है अर दूजा टाबर घोडी माथै चढ बैठै है। घोडी मड्योडा टाबर बोलै है— उतर गीगला म्हारी बारी, तो जिका घोडी चढ्योडा हा वै उतर जावै है अर भींत पर हाथ लगा'र घोडी मड जावै है। जिका पैला घोडी मड्योडा हा वै घोडी चढ जावै है। इण मुजब आ रम्मत चालती रैवै।

पनजी बोल्या, 'देख्यौ मनजी ! आज रा जवान-बूढा सगळा बालपणै री रम्मत नैं ई रमता निगै आवै है। काई वैपार में, काई नौकरी में, काई धरमगुरुवा में, साहित्यकारा में, वैज्ञानिका में, कलाकारा में, राजनेता अर जनता में आई रम्मत निजर आवै है। अेक-दूजै नैं पटकी देंवता-देंवता आई बोलै है— उतर गीगला म्हारी बारी।

मनजी बोल्या, 'साच कैयी है भाई ! पैला मिनख अेक ठौड बैठ'र कीं तपती हो जणाई वो आपरो अठै री अर आगोतर री जीवण सुधार लेवतौ हो। अबै तो मिनख चारूमेरा भाजतौ फिरै है, उणनैं अेक घडी बैठण री टेम नीं है। रात-दिन भाजतौ मिनख चकरीबव होयग्यौ है। मिनख रौ माथौ अैडी भुवाळी खायी है कै वो नीं तो चेतै में है अर नीं ई नींद में है। वो अधरबव लटक्योडौ है। मिनख अेक ठौड पैला कई ताळ ताई बैठै, जणा वो आत्मा री हेलौ सुणै। भाजता-नासता नैं कीं नीं सुणीजै है।

मनजी बोल्या, 'साच है भाई ! अेक ठोड जम'र बैठ्या ई भगवान री भक्ति हुय सकै है। पण मिनख 'उतर गीगला म्हारी बारी' रै चक्करा में पड्यौ, बैठणौ ई भूलग्यौ है। अबै लाख जतन कर्‌या भी आज रौ मिनख अेक ठौड नीं बैठ सकै है। अेक बार कबीरदास री कुटिया कनै गाव सू आयोडौ मजूर रैवतौ हो। अेक दिन कबीरदासजी उणनैं कैयौ, 'अरे भाई ! सुबै-सुबै थोडौ भगवान रौ भजन कर लिया करा।'

वो बोल्यौ, 'मोडा ! थनैं बाता आवै है, बैठौ-बैठौ माळा फेरै है अर

माल-मलीदा उडावै है। म्हारै साथै मजूरी लागती तो ठा लागती कै मजूरी कितरी दौरी है ?'

कबीरदासजी बोल्या, 'साच कैवै है भाई ! बैठ'र माळा फेरणौ सौरौ अर मजूरी करणौ दौरो है। क्यू आई बात है नीं ?'

वो बोल्यौ, 'हा आ ईज बात है।'

कबीरदासजी बोल्या, 'जणै लै आ माळा लै अर थारी मजूरी री टैम हुवै जणै इणनैं लेय'र म्हारै सामी बैठ जाइजै अर जणा थारी मजूरी माथै सू छुट्टी हुवै उण बगत उठ'र थारै घरा बुवौ जाई। थारी रोज री पूरी मजूरी म्हैं देसू।'

वो बोल्यौ, 'महाराज ! थारो राम भलौ करै।'

अबै वो मजूर दिन भर माळा फेरतौ रैयौ। सिझ्या पडता उठ्यौ तो उणरै जीव में जी आयौ, जाणै अठारै बरसा री उमरकैद री सजा काट'र आयौ है। दूजै दिन बींद पगलिया करतौ-करतो आपरी ठौड माथै जा बिराज्यौ। आधी दिन तो डील नैं तोडतौ-मोडतौ किया ई काढ्यौ, पण अबै जीव आकळ-बाकळ करण ढूकौ। मोदीलौ दात भींच'र आधोक घटो और काढ्यौ। आखर में डाळा नाख्या ई सरया अर उठ'र भाजण लाग्यौ तो कबीरदासजी उणरौ बाहुडौ झाल'र बोल्या, 'थू तो कैवतौ हो कै औ घणोई सौरौ काम है। अबै भाजै क्यू है ?'

वो कबीरदासजी रै पगा पडग्यौ जणा बै कैयौ, 'आ भोम आपरै ऊपर उणनैं ई बैठण देवै है जिकौ साचौ हुवै, बाक्या नैं पछै आ चक्करीबव करत्योडी राखै है।'

गाव में सरपच मुजब चुणाव अेक महीनै रै माय-माय हुवणौ है, इण जोग सगळी पार्टिया रा लोग मिल-बैठ'र आ थापना करै है कै कुण सरपच रौ चुणाव लडसी, जिका आज ताई लडता आया है। अेक चुणाव अेक सरपच जीतै तो दूजै चुणाव में दूजौ सरपच जीतै। आ बरसा सू चालती आई है। अबार मोहनौ सरपच है अर हारयोडौ सोहनौ है। इण चुणाव में दोनू फेरू आमी-सामी खड्या है।

मोहनै रौ भतीजौ फूलौ नूवौ-नूवौ वकालत पास कर'र सहर सू गाव आयौ है। फूलौ आपरै काकै री जीत जोग मोदीलो रात-दिन अेक कर नाख्यौ। पण मोहनौ इण चुणाव में मोळौ चालै है अर सोहनौ दडाछट भाजै है। फूलै नैं औ अटपटौ लाग रैयौ हो कै काकौ इण चुणाव में मोळौ किया चालै है ? रात नै जणा घरा में बैठ्या तो फूलै आपरै काकै नैं पूछ्यौ, 'काकोसा, चुणाव में मोळा क्यू चालौ हो ? सोहनौ तो रात-दिन अेक कर राख्या है। अैडी लागै है कै थै हार नैं मान बैठ्या हो।'

मोहनौ बोल्यौ, 'थू सही समझ्यौ है। इण चुणाव में आपणी हार तय है। म्हैं लोगा नै कैवू कै थै म्हनैं काम करण री अेक मौकौ तो दो, म्हैं थारा सगळा काम कर नाखसू, पण जणा म्हैं चुणीज जावा तो लोगा रा काम घणा हुवै है उणम

अैडा काम भी है जिका अणुता है, साथै म्हैं पाणी ज्यू रुपिया बहावा हा, वै भी पाछा कवर करणा हुवै है अर आगै रै चुणाव में भी खरच करणौ पडै है। इण मुजब लोगा रा काम जीत्या पछै लुक बैठै है। वै जोया ई नीं मिलै है। भूल्यो-चूक्यौ लोगा री कोई काम हुवै भी है तो भी चिन्होक हुवै है। इण मुजब म्हनैं ठाह है लोग वोट नीं देवैला तो फेर घर सू क्यू खळेट होवू ?'

फूली बोल्यौ, 'तो लोग सोहन नैं वोट कींकर देसी ? वो भी तो सरपच रैयोडी है।'

मोहनी बोल्यौ, 'आ बात नीं पूछतो तो ही ठीक हो क्यूकै इणमें लोगा री हेटी हुवै है जिणमें थू भी सामिल है। लोग अैडा गूगा है कै वै पाच साला में लारली बाता भूल जावै है अर सामी दीखै उणनैं ई साच मानै है। जिकौ आज ऊरै है उणरै लारै पड जावै है। अै लोग जिणरै लारै पड जावै है उणनैं तो पाणी पाय'र ई छोडै है। फेरू इतरा डफोळ है कै दारू-मारू में बिक'र आपरा पग बाढ लेवै है। इण मुजब हारचोडी सरपच इण भोळै-ढाळै मिनखा नैं उणारी भावना री फायदो लेंवती पाणी ज्यू रुपिया बहा'र बानैं पाणी रै बा'ळै बहा ले जावै है। म्हे दोनू जणा हा कै इण बार थारी बारी है, जणा म्हे आमी-सामी हुवा तो आख्या ई आख्या में कैवा-सुणा हा कै— उतर गीगला म्हारी बारी। थू देखै है नीं, जिका आमी-सामी चुणाव लडै है बै कदेई हाथा-पाई नीं करै, उणरै साथै आळा आपरा भोडका फोडावै है। म्हे म्हारै मुद्दे सावधान हा। ना लडा-भिडा हा अर ना ई घर सू अणुता खळेट हुवा हा। घणकरा रुपिया दूजा ई लगावै है।'

फूली, काके री बाता सुण'र बगचूची होयग्यी। वो जणा गाव रै सैणा-समझणा सू बाता ई बाता में ठाह करची तो ठाह लाग्यौ कै काकौ सोळै आना खरी बात कही है। फूलो सहर में आय आपरै गुरु नैं पूछ्यो, 'गुरुजी ! म्हैं गाव में अैडी बात देख'र आयौ हू के सरपच रै चुणाव में 'उतर गीगला म्हारी बारी' वाळी बात है।'

गुरुजी बोल्या, 'थू तो खाली थारै गाव में देख'र आयौ है पण आ तो इण देस में चारूमेरा चाल रैयी है। थू तो अेक गाव रै सरपच रे चुणाव में देख्यौ है, पण विधानसभा, लोकसभा, प्रधानमत्री पद, राष्ट्रपति पद अर मत्रिया रा पदा माथे आई चाल रैयी ह— उतर गीगला म्हारी बारी। आ बीमारी राजनेता ताई ही नीं रैयी है आ तो अबै राज रा अैलकारा अर चाकरा में, विणज-वैपार में अर धरमगुरुवा में भी फैलगी है। फूला ! थू गाव में सरपच री बात करै है नीं? गाव में पच परमेसर कहीजता हा। पच भगवान जैडा होंवता हा। क्यू अबै थनैं गाव रा पच परमेसर लागै है काई ?'

फूली बोल्यौ, 'वै तो म्हनैं अवै राखस लागै है।'

गुरुजी बोल्या, 'सगळी जाग्या आ डफली बोलगी है। इण मुजब गाव करै, सो गैली। थू आ पचडा में नीं पडे तो ई ठीक है। जे पडग्यौ तो पछे भूवाळी खावतौ ई फिरैलो। न घर रो रैवैलो अर ना घाट रौ। इण मुजब जित्ती थासू भलौ काम हुवै है उतरो करतौ जा। इण लूणा-घाटी में फसग्यौ नीं तो पछै चिन्होक भलौ काम करण जोग भी नीं रैवैलो। फूला ! साच केवण में लोग इतरा डरै है कै मत पूछ थू। आज थू कठीने ई निजर पसारलै, लोग माखी गटकता ई निगे आसी। जगा-जगा लोग किरकौ नाख'र चिन्हैक फायदे जोग लटूरिया करण ढूकै तो समझलै कै अवै अठे नीं तो धरम है अर नीं करम है। आज री क्यू बात करै। महाभारत में लालच अर डर सू बडा-बडा जोद्धा भीष्म पितामह अर द्रोणाचार्य, धरमगुरु किरपाचार्य भी भरी सभा में घर री बहू द्रोपदी नै नागी हुवण री बात मानली ही। इया ई सगळा आपरे ई कुटुम्ब रै चमकतै तारे अभिमन्यु नैं रळ'र मार नाख्यौ। वा चिन्होक भी नीं सोचियौ कै बानें लोग काई कैसी ? आ लोगा री लोभ में डूब्योडी बुद्धि न्याय-अन्याय, पाप-पुण्य, करम-अकरम री जाणकारी खोस लेवै है। अन्याय नैं ई करम अर अन्याय नैं ई करण आळौ धरम मानलै है।

आज पोसाळा में लाग्योडा मास्टर, दफ्तरा में लाग्योडा अेलकार-हाकम, विणज-वैपार अर कम्पनी कारोबार में लाग्योडा मिनख भी इणी जुगाड में लाग्योडा रैवै है कै मौकौ मिलता ई दूजे नैं धक्कौ देय'र उणरी ठौड माथै बैठता कैवै है— उतर गीगला म्हारी बारी। आ रम्मत जठै ताई वै रिटायर नीं हुवै वठै ताई चालती ई रैवै है अर घणकरो टेम लोगा रौ इण काम में ई लाग जावै है, पछै देस रौ काम आपरी ठौड रोवतौ रैवै। पण बूढापै में अै मिनख भी रोवै है कै म्हैं उमर भर इण गोरखधधे में ई म्हारो जीवण काट्यौ है— उतर गीगला म्हारी बारी।

इणी मुजब कलाकार, साहित्यकार अर वैज्ञानिका में भी आ ईज रम्मत हुवण ढूकी है। अेक कलाकार जणा नूवौ-नूवौ आवै तो उणरौ पैली काम दूजै कलाकार नैं खो देवण रौ हुवै है। जणा खो मिले तो पैली आळो कलाकार भाजतौ निंगै आवै है। इणी मुजब साहित्यकार, वैज्ञानिका में भी आ रम्मत धडल्लै सू चालै है। नूवा साहित्यकार-वैज्ञानिक आवै तो आवता ई बोल— उतर गीगला म्हारी बारी।

आ भोम रिसी-मुनिया री है। इण जोग आ भोम आपरे ऊपर उण मिनख नैं ईज निरायत सू बैठण देवै है जिको साचो अर खरो हुवै है। खोटै मिनखा नैं आ भोम फटाक दूजी ठौड अर दूजी सू तीजी ठौड फैंकती रैवै है। ओ ईज कारण है कै भारत भोम पर खरा मिनख सुख सू आपरी ठौड बैठ्या रैवै अर खोटा लोग इण रम्मत में लाग्या रैवै— उतर गीगला म्हारी बारी।

राम कहाणी

कानासर गाव में बजरगी लाल नाव री टाबर पढ'र पाखती रा सहर में बाबू बण जावै है। बजरगी आपरै टाबरा नैं गाव सू बुला'र आपरै साथै राखै है। बजरगी साव भोळौ-ढाळौ मिनख है। वो आपरा अफसरा सू लेय'र बाबुवा ताई रा काम भी हसतौ-हसतौ कर नाखतौ हो, इण जोग लोग कैवता कै बजरगियौ तो बजरग बळी है। इण मुजब सगळा अफसरा रौ चहेतौ बजरगी हो। इणी गोरखधधे में बजरगी रिटायर होयग्यौ। रिटायरमेंट माथै दफ्तर रा केई अेक मुठिया-सींगा मिनख, आस-पडोसी अर सगा-सबधिया बजरगियै नैं अैडी सीळी चढायी कै वो ज्यू सगळा कैयौ त्यू ई बढिया जीमण बणवायौ अर बैन-बेट्या रै सागीडा गाभा-लत्ता कराया। इण जोग बजरगियै कनै जिका रुपिया हा वै धणकरा लागग्या हा। बजरगियै नैं सगळा चावता हा, इण मुजब उणरै पैन्सन रा कागद त्यार कर'र फटाक पैन्सन ऑफिस भेज दिया हा।

बजरगियौ रिटायर होया पछै जीमण-जूठण, गाभा-लत्ता अर आवण-जावण आळा सू बाताचीता में अैडौ मगन हुयौ कै बींनैं आपरी पैन्सन कानी देखण री फुरसत ई नीं मिली। साल भर पछै अेक दिन जोडायत बोली, 'कनला सगळा रुपिया तो लागग्या है अबै आपानैं पैन्सन रौ ईज सहारौ है। बीं कानी कीं ध्यान देवौ। अबै बजरगियै री आख खुली तो रोज पैन्सन आळै दफ्तर रा चक्कर काढण लाग्यौ।

बजरगियौ पैन्सन आळै दफ्तर में आपरा कागद देख्या तो ठाह लाग्यौ कै बीं रा कागद अठीनै सू बठीनै टिल्ला खावता फिर रैया है। अेक टेबल सू दूजी टेबल माथै विराजै तो पूठा उणी टेबल माथै आय विराजै। वा कागदा री टेबल सू इतरौ मोह है कै बींनैं छोड्या ई नीं छूटै। इण मुजब कागद सागी ठौड माथै पूगणी धणी अबखौ होयग्यौ। वो दफ्तर रै बाबुवा सू आपरी पैन्सन रा कागद पूछै तो वै सुसियै री तीन टाग ई बतावै। चौथी रौ अतौ-पतौ ई नीं देवै। ईल्लम-टिल्लम करता बाबू अैडा जवाब देंवता कै मत पूछौ।

तीन बरसा ताई बजरगियौ पैन्सन रै दफ्तर री फेरया देंवतौ-देंवतौ गुडाळियौ चालण ढूकौ। घर में खावण-पीवण रौ सामान अबै बाजार सू आवणौ

अबखौ होयग्यौ। जोडायत बोली, 'पैन्सन बिना खावणौ-पीवणौ ई अबखो होयग्यो है, साथै बेटी रौ ब्याव माथै आय ढूक्यौ हे। थै इया हाथ पर हाथ धर्‌या बैठ्या रैसौ तो किया पार पडसी ?'

बजरगियौ आपरे टेम रौ गाव में नामी पहलवान हो। गबरू रै जिकौ भी बख में आय जावतौ हो तो पछै वो धूड चाटतौ ई दीखतो। पण दफ्तर रै काम में बजरगियो साव डफोळ हो। बजरगियौ अेकलो बैठ्यो-बैठ्यो विचारे हे कै काई करू अर काई नीं ? इणी विचाळै उणरौ जूनौ भायलौ चदणौ आय ढूकौ। उणनैं देख'र बजरगियौ बोल्यौ, 'भाई चदणा ! म्हामें तो पैन्सन रै दफ्तर आळा अैडी करी है के म्हैं घर रौ रेयौ, नीं घाट रो। अबे म्हैं काई करू ?'

चदणौ डोढ हुंसियार मिनख हो। वो बोल्यौ, 'देख भाई बजरग ! बिना रोया तो मा भी टाबर नैं बोबौ नी देवै है। इण मुजब थनैं ऊचै हाकमा कने जाय'र थारी राम कहाणी सुणाणी ईज पडसी, जद ई थारी नाव किनारे पूगती निजर आसी।'

बजरगियौ बोल्यौ, 'बा किया ?'

चदणौ बोल्यौ, 'देख सें सू बडौ दफ्तर जयपुर में सचिवालय है, वठै जाय'र थू थारी राम कहाणी सुणा, जणै ईज थारौ काम पार पडसी।'

बजरगियौ धरा आय'र जोडायत नें कैयौ, 'अबे पैन्सन रो काम जयपुर जाया ई पार पडसी। इण जोग थू लूणै काकै री बहू कनैं सू कीं रुपिया उधार लै आव, कीं आपा कनै है। अबे वाहर चढ्या ई फतै हुवैली, नीं तो पछै गोपिन्दा खावता ई जावाला।'

जोडायत रुपिया रौ जुगाड बैठायौ तो बजरगियौ मोदीलौ जयपुर कानी टुरग्यौ। जयपुर री टेसण उतर'र सचिवालय रो अतौ-पतौ पूछ्यौ अर लाबी-लाबी डगा भरतौ पाळौ ई दफ्तर रै फाटक आगै जा ऊभौ। दस बज्या चपडासी कैयौ, 'सामी आळै कमरै सू पास वण्या सू माय बड सकोला, किण ठौड सू आया हो?'

बजरगियौ बोल्यौ, 'कानासर सू आयौ हू।'

चपडासी बोल्यौ, 'लावौ, बीडी पावौ।'

बजरगियै उणनैं बीडी पीवण जोग बीड्या रौ बडळ उण कानी कर्‌यौ तो बीं अेक बीडी खुद ली अर दूजी बजरगियै नैं दी। चपडासी आपरी माचिस सू बीडी सिळगाई अर वडळ आपरै खूजे में घाल लियौ।

बजरगियौ देखतौ ई रैयग्यौ। मन ई मन बोल्यौ, 'इत्ती-सी जाणकारी दी है कै सामलै कमरै में पास बणै है अर बीड्या री पूरी बडळ हजम करग्यौ। आगै काई हुसी, राम ई जाणै।'

सामली कमरो खुल्यौ तो बजरंगी खाथा-खाथा पग उठावतौ बाबूजी
बाबूजी कैयौ, 'हाकमा सू मिलण री टैम दो बज्या री है। इण जोग दो बज
बाबू री जवाब सुण'र बजरंगियै रो मूडौ उतरग्यो अर ओ
बैठ'र दो बजण री उडीक करण लाग्यो। बाटा जोवतो-जोवतौ जणा
मन ई मन बोल्यौ हे दो बजण आळी टैम, थू इत्ती मोडी तो कदेई करै
आज म्हनैं चिडावण जोग थू मटका करै है पण करलै आखर तो थनैं
पडसी। ज्यू ई दो बज्या कै बजरंगी कनलै बाबू आगै जा धमक्यौ। पा
खाथी-खाथी पैन्सन आळै कमरै आगै जा ऊभौ पण वठै ना तो चपडा
अर ना हाकम दीख्यौ। दोनू ठौडा माथे कागला उडै हा।

छेकड तीन बज्या चपडासी आयो तो लारै री लारै हाकम
बजरंगी चपडासी नैं कैयौ के हाकमा सू मिलणौ है। चपडासी कैयो
मिललौ।'

बजरंगी हाकमा कनै जाय'र रामा-स्यामा करया अर बोल्यौ,
तीन साल होयग्या है अजे ताई पैन्सन नीं हुई है। इण जोग पैन्सन चालू
री किरपा करौ।' हाकम बोल्यौ, 'क्यू नीं हुई है ?'

बजरंगी बोल्यौ, 'मालका ! ओ म्हनैं ठाह हुवती तो म्हैं आप
आवतो। अबै इण बात री तो थै ई ठा लगावौ कै पैन्सन लारलै तीन
क्यू नीं हुई ?'

हाकम बोल्यौ, 'पैन्सन आळै दफ्तर सू थानैं कीं तो कैयौ हुसी
बजरंगी बोल्यौ, 'कैयौ कै थू हडमानजी रौ पुजारी है नीं, इण
हडमानजी भी प्रसाद चढाया राजी हुवै। डफा ! म्हारै खातर प्रसाद नीं
जणै म्हैं बोल्यौ कै म्हासू भूल होयगी। थानैं तो प्रसाद दिया ई सरसी, म्है
आवू हू। इण पछै म्हैं अेक महीनै ताई उणा नैं हडमानजी रौ प्रसाद
पण म्हारी पैन्सन री कागद टस सू मस नीं होयौ।'

हाकम मुळक्या अर मन ई मन बोल्या, डफोळ कठैई री, प्रस
मतलब ई नीं जाण्यौ ? हाकम घंटी बजाई अर चपडासी रै आवता ई बो
'आनैं फूलै सू मिलायदे अर आ अरजी साथै लेयजा।'

बजरंगी फूलजी री मेज सामी जाय ढूकी पण फूलजी री कुरसी
ही। चपडासी बोल्यौ, 'बाबूजी चाय पीवण नैं गया है, वै आसी जणै मिल लै
बजरंगी पाच बज्या ताई बाबूजी नैं उडीकतो रैयौ पण बाबूजी आ
गया। पाच बज्या पछै दफ्तर बंद हुवण ढूकौ तो बजरंगी बींद पग
करतौ-करतौ बारै निकळ्यौ।

काले बजरगी फेरू दो बज्या दफ्तर पूगौ तो ठाह लाग्यौ कै बाबूजी आधी छुट्टी लेय'र बुवा गया। इण मुजब अवै काल आया ई काम पार लागसी। इतरौ सुणता ई बजरगी रै हेटै री जमीन खिसकगी अर मन ई मन बोल्यौ कै आ पैन्सन काई हुई है जीव रौ जजाळ होयग्यौ है। पण अवै करै तो काई करै?

आज फूलजी जणा बैठ्या मिल्या तो बजरगी री बाछा खिलगी। फूलजी रै नेडौ भिड'र बोल्यौ, 'मालका ! पैन्सन रौ हुकम दिरावौ जिकै सू म्हनैं ससवी सास आवै। फूलजी बोल्या, 'थारै सहर रै दफ्तर में काई हुयौ जिकौ थू अठै आयौ है ?'

बजरगी बोल्यौ, 'मालका ! बा लोगा नैं प्रसाद कम दियौ हो पण आ थारली ठौड मोटी है। इण मुजब प्रसाद ई मोटौ लायौ हू। थानैं बाबूजी चार लाडू देसू, बानैं ओक-ओक दियौ हो।'

फूलजी रा कान खडा होया अर बोल्या, 'आवौ चालौ चाय पीवा।' चाय पींवती टेम बाबूजी बोल्या, 'लावौ अठे कोई कोनी, प्रसाद देयदो।'

बजरगी सटाक गाठडी खोली अर सूक्योडा चार लाडू फूलजी कानी बधा दिया। फूलजी माथौ कूट लियौ अर बोल्यौ, 'ओ थारै कने राख, म्हारा चाय रा पईसा ई ओळा गया।' मन ई मन बोल्या— किण पागल सू पानौ पड्यौ है। चार सौ रुपिया री ठौड औ चार लाडू पकडावै है। कैडोक डफोळ पानै पड्यौ है।

फूलजी बजरगी री अरजी नैं उलटी-सीधी चारूमेरा देख'र बोल्या, 'पैली थारै सहर रै दफ्तर रै हाकम सू म्हैं पूछसा के इणरी पैन्सन अजै ताई क्यू नीं बणी है। थारै बठै सू जवाब आया पछै सोचसा कै अवै काई करणो है।'

बजरगी बोल्यौ, 'अरे बठै तो पैला सू ई डफली बाज्योडी है। जणा ई तो म्हैं इत्ता रुपिया लगा'र अठै आयौ हू। फेरू कागद बठैई भेजिया बेडौ गरक हुवणौ ई है। वाह रे राज रा हाकमा अर ओलकारा ! थारौ राम कठै गयौ जकौ इया इल्लम-दिल्लम करता मिनखा नैं मारौ हो।'

इतरौ सुणता ई फूलजी गाभा बारै आयग्या अर रोळौ सुण'र हाकम बारै आया तो बजरगी अर फूलजी नैं उळझता देख'र बोल्या, 'अरे सुणैक नीं थू, थारौ काम थारै सहर रै दफ्तर रा बाबू ई करसी। म्हैं बानैं लिखा हा कै इणरो काम बेगौ करो।

बजरगी बोल्यौ, 'ओडा ई बै करण आळा है अर ओडा ई थै लिखण आळा हो।' इतरौ कैय'र बजरगी सचिवालय रै बारै आय खड्यौ हुयौ अर विचारण लाग्यौ कै अवै काई करणौ चाइजै ?

बजरगी नैं चदणै री बात याद आई कै थू राम कहाणी सुणा। जणा थू घोरै माथै कैवतो तो आखो गाव सुणण जोग आवतौ हो। इण मुजब अठै भी थनै टणकेल सू टणकेल मिनख पाच बज्या इण फाटक रै बारै आवसी। थू डफा 'राम

कहाणी' कह जिकौ थारी पैन्सन वणै। बजरगी कहाणी सरू करी—

ताकड धिंग भाई ताकड धिंग, ऊपर खीचडी नीचै घीव
बात कहवता बार लागै, हुकारै बात मीठी लागै
फौजा में नगारी बाज्यौ, ताकड धिंग भाई ताकड धिंग
सुणतौ जा भाई सुणतौ जा, राम कहाणी सुणतौ जा।
बजरगी है नाम हमारा, धोरा धरती गाव हमारा
सै सू आछौ धाम हमारा, सतरगी है गीत हमारा
आजाद भारत देस हमारा, सबकी सेवा काम हमारा
पैन्सन लेना हक हमारा, सुणतौ जा भाई सुणतौ जा।

अेक जणौ बजरगी कनै आयौ अर पूछ्यौ, 'थू औ काई करै है ?'

बजरगी बोल्यौ, 'म्हारी राम कहाणी सुणावू हू।' वो हस्यौ अर बुवौ गयौ। बजरगी मन ई मन विचार्‌यौ कै लोग उणरी बात सुणै जरूर है। अवै डाकीडी जोर-जोर सू कहाणी सुणावण ढूकौ।

दूजौ मिनख कनै आय'र कैयौ, 'थू अठै रामायण पढै है कै महाभारत?'

बजरगी बोल्यौ, 'म्हैं तो म्हारी राम कहाणी सुणावू हू।' वो बोल्यौ, 'म्हैं भी आनैं म्हारी राम कहाणी घणी ई सुणाई, थू भी सुणावतौ जा।

तीजौ मिनख आय'र पूछ्यौ, 'थू काई करै है ?' बजरगी बोल्यौ, 'म्हारी राम कहाणी सुणावू हू।' वो बोल्यौ, 'किणनैं सुणावै है ?' बजरगी बोल्यौ, 'आ आदम्या नैं, और किणनैं।' वो बोल्यौ, 'अै आदमी है ई कोनी।' बजरगी बोल्यौ, 'आ काई बात करौ हो ?'

वो बोल्यौ, 'थनैं म्हारै पर भरोसौ नीं हुवै तो आरै हाथ लगा'र देखले।'

बजरगी जद वारै हाथ लगाय'र देख्या-परख्या तो ठाह लाग्यौ कै अै साचाणी ई आदमी है ही कोनीं। वो मिनख बोल्यौ, 'भाई अै तो रमतिया है। आ सू काम कराणौ है या कीं सुणाणौ है तो आ रै चाबी लगा, अै भाजण लागसी। विना चाबी अै मिट्टी रा माधौ है।' बजरगी पूछ्यौ, 'कैडी चाबी ?'

वो बोल्यौ, 'पढ्यौ-लिख्यौ हुय'र भी थू समझै कोनीं, तो सुण १ रुपिया री चाबी, २ सुपारस री चाबी अर ३ जी हजूरी री चाबी। अै चाब्या नीं है तो पछै आ सू काम कराया ई जाणी। बजरगी बोल्यौ, 'समझग्यौ।'

अर बजरगी आपरै सहर आय'र आपरै हाकम नैं कैयौ, 'म्हारी पैन्सन जोग थारै बरोबर रै हाकम नैं कहौ अर बाबू नैं सौ रुपिया रौ नोट देवतौ बोल्यौ, 'ऊपर सू सुपारस करा दी है।' पछै बजरगी हाकम बाबू साम्ही हाथ जोड'र जी हजूरी करी तौ फट्दाक पैन्सन होयगी।